सत्यमेव जयते

दिल्ली बैंक नराकास की छमाही पत्रिका

बैंक भारती

अंक 31, जनवरी–जून, 2024

दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

: संयोजक :

पंजाब नैशनल बैंक
...भरोसे का प्रतीक!

punjab national bank
...the name you can BANK upon!

दिल्ली बैंक नराकास की 59वीं छमाही समीक्षा बैठक में मंचासीन मुख्य अतिथि श्री राजेश श्रीवास्तव, उप निदेशक (नीति), श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन), गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, अध्यक्ष, दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, श्री समीर बाजपेयी, मुख्य महाप्रबंधक (दिल्ली–एन. सी. आर), तथा सदस्य सचिव, श्रीमती मनीषा शर्मा, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)।

दिल्ली बैंक नराकास द्वारा सदस्य कार्यालयों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों के लिए आयोजित हिंदी संगोष्ठी 'नवीनतम ई–टूल्स एवं आधुनिक व्याकरण' के अवसर पर मंचासीन अध्यक्ष दिल्ली बैंक नराकास, श्री समीर बाजपेयी, मुख्य महाप्रबंधक (दिल्ली–एन. सी. आर), मुख्य अतिथि श्री विक्रम सिंह, अवर सचिव, सचिवालय माननीय संसदीय राजभाषा समिति, श्री देवार्चन साहू, महाप्रबंधक (राजभाषा) पी.एन.बी. तथा सदस्य सचिव, श्रीमती मनीषा शर्मा, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)।

दिल्ली बैंक नराकास

बैंक भारती

छमाही पत्रिका

वर्ष : 27 | अंक : 31 | जनवरी–जून, 2024

संरक्षक

समीर बाजपेयी
अध्यक्ष, दिल्ली बैंक नराकास
एवं मुख्य महाप्रबंधक, दिल्ली अंचल, पंजाब नैशनल बैंक

सम्पादक

मनीषा शर्मा
सदस्य सचिव, दिल्ली बैंक नराकास
एवं सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा), पंजाब नैशनल बैंक

सम्पादकीय समिति

बलदेव कुमार मल्होत्रा
मुख्य प्रबंधक, पंजाब नैशनल बैंक

राजीव शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक, पंजाब नैशनल बैंक

परामर्शदात्री समिति

पंकज कुमार वर्मा	मुख्य प्रबंधक	बैंक ऑफ बड़ौदा
निखिल शर्मा	मुख्य प्रबंधक	पंजाब एंड सिंध बैंक, प्रधान कार्यालय
सीमा कुमारी दुबे	प्रबंधक	केनरा बैंक
रूखसार आलम	प्रशासनिक अधिकारी राजभाषा	भारतीय निर्यात–आयात बैंक
शैलेन्द्र कौशिक	राजभाषा अधिकारी	भारतीय जीवन बिमा निगम

आवरण पृष्ठ के बारे में...

कर्तव्य पथ से राष्ट्रपति भवन एवं नॉर्थ–साउथ ब्लॉक का विहंगम दृश्य।

अनुक्रमणिका

अध्यक्ष की कलम से ...	2
सम्पादकीय ...	3
एक भारतीय आत्मा – पंडित माखनलाल चतुर्वेदी	4
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय दिल्ली	6
देवनागरी लिपि : मानकीकरण एवं चुनौतियाँ	7
मैं ढूँढ रहा था आशा को ...	10
प्रतियोगिता/बैंक ऑफ महाराष्ट्र	11
इण्डियन ओवरसीज़ बैंक/जीवन जीने की प्रेरणा	12
सीनियर सिटीजन सेविंग स्कीम	13
जीवन उद्देश्य...	14
बैंकर/मानसून	15
राजभाषा अधिकारियों के लिए हिंदी संगोष्ठी तथा प्रतियोगिता	16
हिंदी सेमिनार	17
भारतीय संगीत परंपरा	18
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया	20
विज़न इंडिया 2047	21
यूनाइटेड इंडिया इंश्यूरेन्स कंपनी लिमिटेड	23
दिल्ली बैंक नराकास की 59वीं छमाही बैठक	24
भारतीय रिज़र्व बैंक	26
सोने के लिए अलार्म	27
पहचानो मैं हिंदी हूँ	28
गांव चले ...	29
कलम/जीवन पुकारता है	30
रिश्ते और पौधे एक समान...	31
जमाने के साथ बदलते रिश्ते/कला दीर्घा	32
'धरती आबा' : बिरसा मुंडा	33
मध्य अमेरिकी देशों में घुंघरुओं की गूंज......	35
भारतीय रिज़र्व बैंक	37
गलतियों से सीखकर ही मिलता है सफलता का रास्ता	38
मंत्री की सीख	41
अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का आयोजन	42
दिलकश चाय	43
प्राचीन भारत की ज्ञान विरासत	44
बेटी	46

–: सम्पर्क सूत्र :–

बैंक भारती, दिल्ली बैंक नराकास सचिवालय, पंजाब नैशनल बैंक, प्रधान कार्यालय,
राजभाषा विभाग प्लॉट नं–4, प्रथम तल, द्वारका सेक्टर–10, नई दिल्ली–110075
ई–मेल : delhibanknarakas@pnb.co.in ♦ **दूरभाष** : 28044450, 28044491

पत्रिका को डाउनलोड करने के लिए कृपया आवरण पृष्ठ पर दिए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

पत्रिका में व्यक्त विचारों से 'समिति' का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

मुद्रक :– डॉल्फिन प्रिंटो–ग्राफिक्स
1ई/18, चौथी मंजिल, झंडेवालान, दिल्ली–110055, **ई–मेल:** dolphinprinto2011@gmail.com

अध्यक्ष की कलम से ...

प्रिय साथियो,

दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छमाही पत्रिका "बैंक भारती" के नवीनतम अंक को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझ अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। नराकास के इस मंच के माध्यम से हमारा सदैव यह प्रयास रहा है कि हम राजभाषा कार्यान्वयन को निरंतर बढ़ाते रहें तथा अपने सदस्य कार्यालयों को विभिन्न माध्यमों से हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए अपनी राजभाषा हिन्दी को देश के साथ–साथ विश्व में भी अग्रणी रखने के लिए प्रतिबद्ध रहें।

जैसा कि हम सब को विदित है कि हमारा देश विश्व गुरु बनने की ओर तेजी से अग्रसर है। हम सभी चाहते हैं कि विश्व गुरु बनने के साथ हमारी राजभाषा हिन्दी भी विश्व भाषा बने। हिन्दी को विश्व भाषा बनाने के लिए हम सभी को एकजुट होकर एक साथ प्रयास करना होगा। राजभाषा हिन्दी में विश्व भाषा बनने के सभी गुण मौजूद हैं। आज हिन्दी का विस्तार विश्व के लगभग 130 से भी अधिक देशों में हो चुका है। हिन्दी भारत की राजभाषा होने के साथ–साथ अन्य देशों में भी पर्याप्त संख्या में लोगों द्वारा बोली, लिखी व समझी जाती है। हिन्दी का शिक्षण व प्रशिक्षण विश्व के लगभग 180 विश्वविद्यालयों व शैक्षणिक संस्थाओं में चल रहा है। हिन्दी का वर्चस्व दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। हिन्दी भारत की राजभाषा होने के साथ–साथ फिजी की भी राजभाषा है तथा मॉरीशस, त्रिनिदाद, गुयाना और सूरीनाम में क्षेत्रीय भाषा के रूप में इसे मान्यता प्राप्त है।

विश्व पटल पर भारत के बढ़ते आर्थिक, सामरिक, राजनैतिक प्रभाव को देखते हुए राजभाषा हिन्दी को सीखने की ललक विदेशों में बढ़ती जा रही है। आज बाजार में उपलब्ध विभिन्न ई–टूल्स के माध्यम से किसी भी भाषा में लिखना व उसको समझना बहुत ही सरल व सहज हो गया है, इसके लिए किसी भी प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं पड़ती। यूनेस्को की सात भाषाओं में हिन्दी को भी मान्यता प्राप्त है। अब हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने के लिए ठोस प्रयास किए जा रहे हैं। राजभाषा हिन्दी को विश्व भाषा बनाने के लिए आवश्यकता है उसके प्रति प्रतिबद्ध होने की। यदि हम सभी एकजुट हो कर प्रयास करेंगे तो वह दिन दूर नहीं जब हमारी राजभाषा विश्व भाषा के रूप में बन कर उभरेगी तथा देश को नई ऊंचाइयों तक लेकर जाएगी।

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा को मजबूत बनाने के लिए पहली आवश्यकता है कि अपने देश में इसका प्रचुर प्रयोग व सर्वमान्यता हो। हमें अपनी मानसिकता बदलनी होगी तथा हिन्दी में गर्व के साथ स्वयं भी कार्य करना होगा व अन्य साथियों को भी इसके लिए प्रेरित करना होगा। अब समय आ गया है कि अनुवाद की बैसाखियां हटा कर हिन्दी में मौलिक रूप से कार्य किया जाए। हमारी नराकास हिन्दी में मौलिक सोच एवं कार्य को बढ़ावा देने के लिए कई नवोन्मेष कार्य कर रही है।

दिल्ली बैंक नराकास गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के कुशल मार्गदर्शन में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन को बढ़ाने में हमेशा अग्रणी रही है और मुझे आशा है कि आगे भी हम इस कार्य को और बेहतरीन तरीके से करते रहेंगे। वर्ष 2022 में गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की ओर से हमें प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ था। मुझे आशा है कि हम इस वर्ष भी राजभाषा के क्षेत्र में अग्रणी रहेंगे। मेरा आप सभी सदस्य कार्यालयों से अनुरोध है कि गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार अपने कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन के कार्य में वास्तविक वृद्धि करें। साथ ही राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा–निर्देशों का शत प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित करें ताकि इस मंच को बनाने का उद्देश्य प्राप्त किया जा सके।

मुझे पूर्ण विश्वास है आप सभी गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग व दिल्ली बैंक नराकास द्वारा जारी निर्देशों का गंभीरता से पालन करेंगे तथा राजभाषा कार्यान्वयन के कार्य को पहले से और बेहतर करेंगे। दिल्ली बैंक नराकास की गृह पत्रिका "बैंक भारती" के नवीनतम अंक के प्रकाशन के लिए आप सभी को हार्दिक बधाई व शुभकामनायें।

आपका

(समीर बाजपेयी)
अध्यक्ष, दिल्ली बैंक नराकास एवं
मुख्य महाप्रबंधक, पंजाब नैशनल बैंक, दिल्ली अंचल

सम्पादकीय ...

प्रिय साथियो,

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दिल्ली (बैंक) की छमाही पत्रिका "बैंक भारती" के इस 31वें अंक को आप सभी को सौंपते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। मुझे आशा है यह अंक आप सभी के लिए रोचक व ज्ञानवर्धक होगा।

सर्वविदित है कि हमारा देश बहुभाषी है और हिन्दी न केवल बहुल भाग में बोली–समझी जाने वाली भाषा के रूप में मान्य है अपितु संवैधानिक तौर पर भी राजभाषा के रूप में स्थापित है। किसी भी देश की राजभाषा केवल संचार का माध्यम ही नहीं होती बल्कि वह देश की राष्ट्रीय एकता और अखंडता का प्रतीक भी होती है। हमारे देश की राजभाषा हिन्दी देश के अधिकांश लोगों के विचारों को व्यक्त करने का माध्यम तो है ही साथ ही हमारे देश को एक सूत्र में पिरोते हुए अन्य भाषाभाषियों के मध्य सेतु का कार्य भी करती है।

वर्तमान में राजभाषा हिन्दी पूरे भारतवर्ष में तो प्रयोग की ही जा रही इसके साथ ही विश्व पटल पर भी अपनी पहचान बना रही है। आज हिन्दी भाषा न केवल भारत में बल्कि विश्व के अनेक देशों में बोली और समझी जाती है। राजभाषा हिन्दी विश्व पटल पर भी अग्रणी रहे इसी क्रम में प्रत्येक वर्ष 10 जनवरी को विश्व हिन्दी दिवस का भी आयोजन किया जाता है। वर्ष 2024 में विश्व हिन्दी दिवस की थीम थी "**हिन्दी पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम बुद्धिमत्ता तक**"।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता भाषा के क्षेत्र में सृजनकर्ता के रूप में एक नया आयाम स्थापित करने की ओर अग्रसर है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का क्षेत्र इतना विशाल है जिससे भाषा की दुनिया पूरी तरह से बदलने वाली है। इस तकनीक के माध्यम से भविष्य में किसी भी भाषा को पढ़ने और समझने के लिए उसे सीखने की बाध्यता लगभग समाप्त हो जाएगी। हम दुनिया की किसी भी भाषा के साहित्य को पढ़ सकेंगे। भाषा की दूरियाँ सिमट जाएंगी। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से साहित्य के क्षेत्र के साथ–साथ शिक्षा, स्वास्थ्य व कृषि जैसे क्षेत्रों में शीघ्र ही क्रांतिकारी बदलाव देखने को मिलेंगे।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमारी भाषा को समझने में भी सक्षम है और उसमें संवाद भी किया जा सकता है। यह संवाद लिखकर, बोलकर, हस्तलिपि से, फोटो से तथा अन्य दूसरे तरीकों से भी संभव है। जिस अविश्वसनीय अंदाज में कृत्रिम बुद्धिमत्ता चीजों को बदल रही है उसे देखते हुए अगले दो दशको में हम भाषा–निरपेक्ष विश्व की ओर बढ़ सकते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से अन्य प्रमुख भाषाओं के साथ हिन्दी का संबंध और अधिक प्रगाढ़ होगा। यह तकनीक हमारी साहित्यिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक व शैक्षणिक संपदा को वैश्विक पहचान दिलाने में सहायक होगी।

नराकास का यह मंच राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन को बढ़ाने के लिए किए जा रहे प्रयास को सभी के साथ साझा करने का अवसर प्रदान करता है। राजभाषा कार्यान्वयन को साझा करने के इस प्रयास में नराकास की पत्रिका महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। दिल्ली बैंक नराकास की पत्रिका "**बैंक भारती**" भी इसी उद्देश्य को आगे बढ़ा रही है। इस अंक में सदस्य कार्यालयों के हमारे साथियों की रचनाएँ मोती के रूप में पिरोई गई हैं।

"बैंक भारती" के इस नवीनतम अंक को रोचक और ज्ञानवर्धक बनाने के लिए बैंकिंग व साहित्य से संबंधित विभिन्न विषयों के लेखों को शामिल किया गया है। आप सभी पाठकों को यह अंक पसंद आयेगा, इसी आशा के साथ इस अंक को आपको सौंपती हूँ। आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

(मनीषा शर्मा)
सदस्य सचिव, दिल्ली बैंक नराकास एवं
सहायक महाप्रबंधक, राजभाषा

एक भारतीय आत्मा – पंडित माखनलाल चतुर्वेदी

देवेन्द्र कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
पंजाब एण्ड सिंध बैंक, प्रधान कार्यालय

अंग्रेजी सत्ता को सीधे चुनौती देने तथा परतंत्र भारत के युवाओं में राष्ट्रवाद का बीज बोने वाले कवियों में निःसंदेह पंडित माखनलाल चतुर्वेदी जी का नाम अग्रणी है। बीसवीं सदी के पूर्वाद्ध में अनेक महापुरुषों ने भारतीय राष्ट्रीय परिदृश्य में अपने बहुआयामी और कालजयी कृतित्व की छाप छोड़ी है, उनमें माखनलाल चतुर्वेदी का नाम उल्लेखनीय है। एक भारतीय आत्मा के नाम से सुप्रसिद्ध पंडित माखनलाल चतुर्वेदी हिंदी साहित्य जगत के सशक्त लेखक और पत्रकार होने के साथ–साथ भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की प्रखर अभिव्यक्ति थे। राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख कवियों बालकृष्ण शर्मा नवीन, रामधारी सिंह दिनकर, सियारामशरण गुप्त, सुभद्राकुमारी चौहान और रामनरेश त्रिपाठी इत्यादि के साथ पंडित माखनलाल चतुर्वेदी जी ने भारतीय मानस में राष्ट्रीय स्वतंत्रता की भावना प्रज्ज्वलित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपने जन्मप्रदेश के अनुरूप उनमें विविधिता कूट–कूट कर भरी हुई थी। काव्य लेखन के साथ–साथ उन्होंने कर्मवीर, प्रभा और प्रताप मासिक पत्रिकाओं का भी बड़ी कुशलता के साथ संपादन किया। डॉ. नगेन्द्र द्वारा संपादित 'हिंदी साहित्य का इतिहास' नामक ग्रंथ में डॉ. गोपाल राय जी ने श्री माखनलाल चतुर्वेदी जी के विषय में लिखा है ''चतुर्वेदी जी की रचनाओं में देश के प्रति गंभीर प्रेम और देश कल्याण के लिए आत्मोसर्ग की उत्कृष्ट भावना दिखाई देती है। इस मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति को तभी सफलता मिल सकती है जब वह जीवन के सुख और वैभव को ठुकरा कर संघर्ष और साधना का मार्ग अपनाए। इन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा देशवासियों को इसी संघर्ष और साधना के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।''

पंडित माखनलाल चतुर्वेदी जी का जन्म 04 अप्रैल, 1883 को बावई, जिला होशंगाबाद (मध्यप्रदेश) में हुआ। चतुर्वेदी जी बचपन में अक्सर बीमार रहा करते थे। इनके पिताजी स्थानीय गाँव के एक हाईस्कूल में अध्यापक थे इसलिए इनकी आरंभिक शिक्षा वहीं हुई। प्राथमिक शिक्षा की समाप्ति के पश्चात घर पर ही इन्होंने संस्कृत का अध्ययन किया। सैयद अमीर अली पीर, स्वामी रामतीर्थ और माधवराव सप्रे का इनके व्यक्तिव पर गहरा प्रभाव पड़ा। इनका परिवार राधावल्लभ संप्रदाय का अनुयायी था। अतः वैष्णव संस्कार इन्हें अपने परिवार से ही मिले थे। इनका विवाह पंद्रह वर्ष की अवस्था में हुआ, उसके एक वर्ष बाद आठ रुपये मासिक वेतन पर इन्होंने खंडवा में अध्यापक की नौकरी कर ली। वर्तमान छत्तीसगढ़ और तत्कालीन मध्यप्रदेश के लेखक माधवराव सप्रे, वर्ष 1907 से मासिक पत्रिका 'हिंद केसरी' का संपादन किया करते थे जिसमें उन्होंने सन 1908 में 'राष्ट्रीय आंदोलन और बहिष्कार' विषय पर प्रतियोगिता का आयोजन किया। इस प्रतियोगिता में खंडवा के युवा अध्यापक माखनलाल चतुर्वेदी का निबंध प्रथम चुना गया। सप्रे जी को माखनलाल चतुर्वेदी जी की लेखनी में अपार संभावनाओं से युक्त साहित्यकार के दर्शन हुए और उन्होंने चतुर्वेदी जी को इस ओर प्रवृत्त होने के लिए प्रेरित किया।

अप्रैल, 1913 में खंडवा के हिंदी सेवी कालूराम गंगराड़े ने मासिक पत्रिका 'प्रभा' का प्रकाशन किया जिसके संपादकत्व की जिम्मेदारी माखनलाल चतुर्वेदी जी को सौंपी गई। सितंबर, 1913 में इन्होंने अध्यापक की नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और पूरी तरह से पत्रकारिता, साहित्य–सेवा और राष्ट्रीय आंदोलन के लिए समर्पित हो गए। इसी बीच सन 1914 में इनकी पत्नी की असामयिक मृत्य हो गई। जिस समय राष्ट्रीय परिदृश्य में माखनलाल चतुर्वेदी जी का आगमन हुआ उस समय स्वतंत्रता आंदोलन भारतीय जनमानस में जोर पकड़ रहा था। अंग्रेजी सत्ता को जड़ से उखाड़ फेंकने की लालसा प्रत्येक भारतीय में गहराई से अपनी पैठ बनाए हुए थी। इस आलोक में पंडित माखनलाल चतुर्वेदी की कविताएं राष्ट्रीय–चेतना की संवाहक ही नहीं अपितु पोषक और प्रतीक भी थी। चतुर्वेदी जी ने भारतीय जनमानस में क्रांति की भावना का गंभीरता से अवलोकन तथा आत्मचिंतन किया। उन्होंने देखा कि राष्ट्रीय समस्या के समाधान के लिए त्याग–समर्पण की आहुति दी जा रही है इसलिए पंडित माखनलाल चतुर्वेदी जी ने राष्ट्रीय–भावनाओं से ओत–प्रोत

कविताओं के माध्यम से अतीत का गुणगान किया तथा जनमानस में राष्ट्रीय–हित, उत्थान, चेतना, आत्मगौरव, स्वाभिमान, बलिदान की भावनाओं का संचार किया।

सन 1913 में कानपुर से गणेश शंकर विद्यार्थी ने साप्ताहिक हिंदी पत्रिका 'प्रताप' का संपादन व प्रकाशन आरंभ किया। पत्रकारिता से जुड़े होने के कारण माखनलाल चतुर्वेदी जी का परिचय गणेश शंकर विद्यार्थी से हुआ। पंडित माखनलाल चतुर्वेदी जी ने विद्यार्थी जी के साथ सन 1916 के लखनऊ अधिवेशन के दौरान राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त तथा राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के साथ मुलाकात की। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने यहीं अपने काव्यादर्श 'एक भारतीय आत्मा' को पहचाना। महात्मा गाँधी द्वारा अंग्रेजी शासन के विरुद्ध सन 1920 में चलाए गए असहयोग आंदोलन में महाकौशल अंचल अर्थात वर्तमान छत्तीसगढ़ अंचल से प्रथम गिरफ्तारी देने वाले आंदोलनकारी माखनलाल चतुर्वेदी जी ही थे। माखनलाल चतुर्वेदी जी के अध्यापक की नौकरी से त्याग–पत्र देने का एक कारण यह भी था कि वे प्रत्यक्ष रूप से भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अपना योगदान देना चाहते थे। अपनी राजनीतिक अस्थिरता के कारण इन्हें अनेक बार बंदी बनाया गया। प्रभा और कर्मवीर जैसी पत्रिकाओं के माध्यम से ब्रिटिश शासन के खिलाफ जोरदार प्रचार किया। इन्होंने 1921–22 के असहयोग आंदोलन में सक्रिय सहभागिता की। प्रांतीय राजनैतिक सम्मेलन के दौरान वर्तमान छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर जिले के शनिचरी पड़ाव में 12 मार्च, 1921 को पंडित माखनलाल चतुर्वेदी जी ने ओजस्वी भाषण दिया, जिसे अंग्रेजी हुकूमत ने राजद्रोह करार देते हुए उन्हें गिरफ्तार कर लिया। दो माह के मुकदमें के पश्चात उन पर राजद्रोह का आरोप लगाकर आठ माह का अतिरिक्त कठोर कारावास का प्रावधान किया गया। बिलासपुर जेल में कारावास के दौरान उन्होंने 'पूरी नहीं सुनोगे तान', 'पुष्प की अभिलाषा' तथा 'पर्वत की अभिलाषा' आदि राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत कविताओं का सृजन किया। इनमें से कविता 'पुष्प की अभिलाषा' से शायद ही कोई देश–प्रेमी अथवा साहित्य प्रेमी परिचित न हो तथापि इसकी पंक्तियाँ यहाँ प्रस्तुत किए बिना यह लेख शायद अधूरा रह जाए। इस कविता की पंक्तियाँ स्वतंत्रता के लिए बलिपंथियों का स्पष्ट रूप से आह्वान करती है:

''चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूथा जाऊँ,
चाह नहीं प्रेमी–माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ,

चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि–डाला जाऊँ,
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ,

मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ पर तुम देना फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक।''

01 मार्च, 1922 को उन्हें बिलासपुर से सेंट्रल जेल जबलपुर स्थानांतरित किया गया जहाँ से उन्हें 04 मार्च, 1922 को रिहा कर दिया गया। इसके बाद सन 1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलन में भी उन्हें गिरफ्तारी देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। माखनलाल चतुर्वेदी जी की काव्य–रचना का संसार बृहत है लेकिन कहीं भी इनकी कविता लोक–धरातल से परे अथवा कल्पनाशील प्रतीत नहीं होती है।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की पृष्ठभूमि हिंदू–मुस्लिम एकता के बिना असंभव थी। ब्रिटिश सरकार यह जानती थी यदि हम हिंदुस्तान की जनता को धर्म विशेषकर हिंदू–मुस्लिम के आधार पर विभाजित कर दें तो हिंदुस्तान पर सहजता से शासन करना कोई बड़ी बात नहीं होगी। चतुर्वेदी जी समाज की इस गंभीर तथा विकट समस्या के प्रति सजग थे तथा उन्होंने एकता के परस्पर अभाव को देखते हुए एकता के भावों को प्रदर्शित करने वाली काव्य रचनाएं भी की। चतुर्वेदी जी ने काव्य के क्षेत्र में असाधारण प्रसिद्धि अर्जित की है। इनकी काव्य रचनाओं में हिम–किरीटिनी (1941), साहित्य–देवता (1942), हिम–तरंगिणी (1949), युग–चरण, समर्पण, मरण ज्वार, माता (1952), बीजुरी काजल आँज रही, वेणु लो गूंजे धरा (1960) इत्यादि प्रमुख हैं। इनकी कविताओं का संग्रह 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से संग्रहित है। इसके अतिरिक्त गद्यात्मक रचनाओं में कहानी संग्रह 'वनवासी' तथा नाटक 'श्री कृष्णार्जुन युद्ध' (1918) उल्लेखनीय हैं। 'हिम–किरीटीनी' के लिए इन्हें वर्ष 1943 में उस समय हिंदी साहित्य का सबसे बड़ा पुरस्कार देव पुरस्कार दिया गया तथा सन 1954 में हिम–तरंगिणी के लिए इनको साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजा गया।

पत्रकारिता के क्षेत्र में भी पंडित माखनलाल चतुर्वेदी का स्थान अविस्मरणीय है। मासिक पत्रिका प्रभा तथा कर्मवीर के संपादन के अतिरिक्त 1924 में गणेश शंकर विद्यार्थी जी की गिरफ्तारी के समय ''प्रताप'' का संपादकीय कार्य

भी संभाला। माखनलाल चतुर्वेदी जी सन 1943 में हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष चुने गए। माखनलाल चतुर्वेदी जी ने ही मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन में यह प्रस्ताव पारित कराया कि ''साहित्यकार स्वराज प्राप्ति के ध्येय से लिखें।'' स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भी इन्होंने राष्ट्रहित व सामाजिक–उत्थान में अपना दृष्टिकोण यथावत जारी रखा तथा आजाद भारत में उत्पन्न हुई स्वार्थपरता पर तीखा व्यंग–प्रहार करना अपना काव्य–धर्म समझा।

''दस वर्षों से शिशु शासन पर हम बूढ़े चढ़ बैठे ऐसे,
मीठी कुरसी, मीठे रुपये, मीठे सपने कैसे–कैसे?''

स्वतंत्रता–भाव को अपनी लेखनी से पोषित करने वाले इस कवि को मध्यप्रदेश के सागर विश्वविद्यालय ने सन 1959 में डी. लिट. की मानद उपाधि से सम्मानित किया। इसके पश्चात सन 1963 में भारत सरकार ने राष्ट्रीय सांस्कृतिक व साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में इनके योगदान के लिए चतुर्वेदी जी को ''पद्मभूषण'' से अलंकृत किया लेकिन 10 सितंबर, 1967 को राजभाषा संविधान संशोधन विधेयक के विरोध में माखनलाल चतुर्वेदी जी ने यह अलंकरण लौटा दिया। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में पंडित माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय उन्हीं के नाम पर स्थापित किया गया है। डॉ. प्रभाकर माचवे जी ने टिप्पणी की थी कि ''दादा का युग, वह युग था जब लोग प्रांत, भाषा और जाति भेद को भूलाकर बलि–पंथी होकर आते थे। गाँधी जी तब कहा करते थे कि बातचीत तो हम लोग करते हैं भाषण माखनलाल जी देते हैं।'' डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन जी के शब्दों में ''उनकी कविता प्रयत्न–साध्य कभी नहीं रही। उनके स्वरों में कविधर्म और जीवन–धर्म का समाहार हो रहा था। वेणु के गुंजन और शंख के उद्घोष की यह बानगी स्वयं में भी अनन्य थी।''

चतुर्वेदी जी की कविता युवकों को शौर्य, त्याग व आत्म–बलिदान की प्रेरणा देती है। सच्चे अर्थों में पंडित माखनलाल चतुर्वेदी जी राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के कवि थे। भारत माँ का यह वीर सपूत 30 जनवरी, 1968 में हिंदी साहित्य जगत व भारतीय आवाम से रुखसत हो गया। लेकिन तत्कालीन परिदृश्य के साथ–साथ आज भी इनकी कविताएं हमारे अंतर्मन में कर्तव्यपरायणता का बोध जगाती है। देशवासियों को संघर्ष और कर्तव्यपरायणता का पाठ पढ़ाने वाले चतुर्वेदी जी युगप्रवर्तक के रूप में सदैव स्मरणीय रहेंगे। डॉ. विद्यानिवास मिश्र जी ने एक स्थान पर लिखा है ''ध्यान से देखें तो समझ में आता है कि माखनलाल ने भारत को ही एक कविता की शक्ल में रचने की सफल कोशिश की है। उनकी वाणी में भारत की आत्मा बोलती थी।''

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय दिल्ली

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया द्वारा महिला दिवस के अवसर पर आयोजित संगोष्ठी में मंचासीन श्री जे एस साहनी, अंचल प्रमुख, श्री पी के सामंतराय, उप अंचल प्रमुख, श्री अनिल अग्निहोत्री, क्षेत्रीय प्रमुख दिल्ली दक्षिण, श्री पी एल गंगवानी, उप क्षेत्रीय प्रमुख, मुख्य अतिथि, डॉ रूमा सात्विक, सर गंगा राम अस्पताल, श्रीमती मनीषा कौशिक सहायक महाप्रबंधक एवं बैंक के अन्य अधिकारी।

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय द्वारा आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में लगाई गई राजभाषा प्रदर्शनी के स्टाल पर मुख्य प्रबंधक, श्री संजय लाम्बा, दिल्ली उत्तर एवं मध्य की प्रबंधक– राजभाषा सुश्री ज्योति, दिल्ली दक्षिण की सहायक प्रबंधक सुश्री रश्मि चौधरी एवं अन्य अधिकारी।

देवनागरी लिपि : मानकीकरण एवं चुनौतियाँ

संदीप मौर्य
लिपिक
इंडियन ओवरसीज़ बैंक

केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी के मानकीकरण का कार्य देश के प्रतिष्ठित विद्वानों और भाषाविदों, हिंदी सेवी संस्थाओं, राज्य सरकारों एवं विभिन्न मंत्रालयों के उच्च अधिकारियों से विचार–विमर्श करके प्रारंभ किया गया तथा इसके अंतर्गत प्रथमतः 1967 में ''हिंदी वर्तनी का मानकीकरण'' नाम से लघु पुस्तिका प्रकाशित की गई थी। वर्ष 1983 में इस पुस्तिका का संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण ''देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण'' प्रकाशित किया गया। इस पुस्तिका की लगातार बढ़ती हुई माँग को देखते हुए वर्ष 1989 में इसका पुनर्मुद्रण कराया गया तथा विभिन्न हिंदी सेवी संस्थाओं, कार्यालयों, शिक्षण संस्थानों में इसका निःशुल्क वितरण कराया गया ताकि अधिक–से–अधिक संस्थाओं में हिंदी के मानक रूप का प्रयोग बढ़े। राजभाषा हिंदी के संदर्भ में सभी मंत्रालयों, राज्यों, सरकारों, शैक्षिक संस्थाओं, एन.सी.ई.आर.टी, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं आदि ने भाषा में एकरूपता लाने के लिए इस मानकीकरण को आधिकारिक रूप से अपनाया। वर्ष 1967 के मानकीकरण का मुख्य आधार प्रयोक्ता और टंकण यंत्र रहा था। नवीन सूचना प्रौद्योगिकी के युग में हिंदी भाषा, देवनागरी लिपि तथा वर्तनी के मानकीकरण को पुनः संशोधित और परिवर्धित करने की आवश्यकता महसूस की गई। कंप्यूटर में उपलब्ध विभिन्न सॉफ्टवेयर और फॉन्टों के कारण हिंदी भाषा में कार्य करने में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता था। इन समस्याओं के समाधान के लिए यूनिकोड तैयार किया गया।

संविधान की आठवीं अनुसूची में स्वीकृत भारतीय भाषाओं को देवनागरी लिपि में भी लिखा जा सके इसके लिए विकसित परिवर्धित देवनागरी वर्णमाला में पहले कुछ ही भाषाओं के लिए विशेषक चिन्ह बनाए गए थे। अद्यतन स्थिति के अनुसार भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाएँ शामिल हैं। तदनुसार इस पुस्तिका में जिन भाषाओं की विशेष ध्वनियों के लिए विशेषक चिन्ह सम्मिलित नहीं हैं, उन्हें विकसित करने का कार्य भी किया गया है। इसका संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण वर्ष 2016 में प्रकाशित किया गया।

देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण का यह संस्करण हिंदी भाषा के आधुनिकीकरण, मानकीकरण और कंप्यूटरीकरण के क्षेत्र में नई दिशा प्रशस्त करेगा।

भाषा मनुष्य समुदाय के मध्य परस्पर विचार विनिमय का सशक्त एवं विश्वसनीय माध्यम है। भाषा मनुष्य के व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होने के साथ–साथ उसकी सामाजिक–सांस्कृतिक और आध्यात्मिक अस्मिता का जीवंत प्रतीक भी है। भाषा के बिना मनुष्य समाज की कल्पना ही नहीं की जा सकती। संस्कृत के महान साहित्यकार दंडी ने अपने काव्यादर्श में भाषा के महत्व को स्वीकारते हुए कहा है कि ''यह संपूर्ण भुवन अंधकारमय हो जाता, यदि संसार में शब्द–स्वरूप ज्योति अर्थात् भाषा का प्रकाश न होता।" भाषा के माध्यम से ही देश की संस्कृति, परंपरा से प्राप्त अथाह ज्ञान–विज्ञान एवं गौरवमय इतिहास को जाना जा सकता है। लिपि भाषा की अमूल्य धरोहर को संचित करने, उसकी समुन्नति और उसके व्यवहार क्षेत्र को प्रदर्शित करने का सर्वाधिक प्रभावी माध्यम है।

भारत के विस्तृत भूभाग में बोली जाने वाली भाषा हिंदी है, जिसकी लिपि देवनागरी है। हिंदी भाषा के व्यवहार क्षेत्र और उसकी जन–व्यापकता को देखते हुए ही स्वतंत्रता के पश्चात 14 सितंबर,1949 को देवनागरी में लिखित हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भी, हिंदी भिन्न–भिन्न भाषा–भाषी लोगों के बीच संपर्क स्थापित करने का माध्यम रही और उसने उत्तर से लेकर दक्षिण और पूर्व से लेकर पश्चिम तक सभी देशवासियों को एकता के सूत्र में पिरोने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए ही महात्मा गांधी ने कहा था– "अखिल भारत के परस्पर व्यवहार के लिए ऐसी भाषा की आवश्यकता है, जिसे

जनता का अधिकतम भाग पहले से ही जानता—समझता है और हिंदी इस दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है।" वर्तमान में देवनागरी लिपि हिंदी भाषा के अतिरिक्त संस्कृत, मराठी, कोंकणी, संथाली, बोडो और नेपाली आदि भाषाओं की भी लिपि है।

भारतीय संविधान में हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित होने पर हिंदी की लिपि, वर्तनी और अंकों का स्वरूप आदि विषयों में एकरूपता लाने के लिए तत्कालीन शिक्षा मंत्रालय (वर्तमान में मानव संसाधन विकास मंत्रालय) द्वारा विविध स्तरों पर प्रयास किए गए। सन 1966 में शिक्षा मंत्रालय ने मानक देवनागरी वर्णमाला प्रकाशित की। इसके अनुसार देवनागरी के जो वर्ण एक से अधिक रूपों में लिखे जाते थे, उनके स्थान पर प्रत्येक वर्ण का एक ही मानक रूप निर्धारित किया गया था। संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी के स्वीकृत होने तथा विभिन्न राज्यों की अपनी—अपनी भाषाओं को प्रतिष्ठा मिल जाने के बाद देवनागरी को देश की सामासिक संस्कृति की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनाने के लिए अन्य भारतीय भाषाओं के मानक लिप्यंतरण की आवश्यकता अनुभव की गई। देवनागरी में अन्य भारतीय भाषाओं की जिन विशिष्ट ध्वनियों के लिपि चिन्ह नहीं थे, उनके लिए नए लिपि चिन्हों का निर्धारण किया गया और तत्कालीन शिक्षा मंत्रालय द्वारा सन 1966 में परिवर्धित देवनागरी वर्णमाला नामक पुस्तिका प्रकाशित की गई। वर्णमाला के साथ ही हिंदी वर्तनी की विविधता को दूर कर वर्तनी की एकरूपता स्थापित करने का भी तत्कालीन शिक्षा मंत्रालय ने प्रयास किया और हिंदी वर्तनी की विभिन्न समस्याओं को दूर करने के लिए भाषाविदों के साथ गंभीर विचार—विमर्श के पश्चात 1967 में हिंदी वर्तनी का मानकीकरण नामक पुस्तक का प्रकाशन किया। मानक देवनागरी वर्णमाला, परिवर्धित देवनागरी वर्णमाला और हिंदी वर्तनी का मानकीकरण इन तीनों पुस्तिकाओं के समन्वित रूप को संशोधन और परिवर्धन के साथ केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा सन 1983 में देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण नामक पुस्तक का प्रकाशन किया गया। इस कार्य में केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा भाषाविदों, पत्रकारों, हिंदी सेवी संस्थाओं तथा विभिन्न मंत्रालयों के प्रतिनिधियों के सहयोग से इन विषयों पर सर्वसम्मत निर्णय तक पहुँचने का प्रयास किया गया था।

वर्तमान युग सूचना—प्रौद्योगिकी का युग है। वैश्वीकरण के इस दौर में भौगोलिक दूरियां संकुचित हो रही हैं, जिस कारण समस्त विश्व ने एक ग्राम का स्वरूप ले लिया है। वैज्ञानिक संसाधनों के नित—नए आविष्कारों के साथ ही परस्पर संपर्क स्थापित करने के नित नए माध्यम भी विकसित हो रहे हैं। इस परिदृश्य में विश्व स्तर पर एक ऐसी भाषा की आवश्यकता है जो परिवर्तित होती हुई जीवन शैली के साथ जन—मन की सभी अंतर्राष्ट्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। मुझे यह कहने में गर्व है कि हिंदी ज्ञान—विज्ञान और साहित्य की विभिन्न विधाओं और दैनंदिन प्रयोग में आने वाली प्रयुक्तिगत शब्दावली को अभिव्यक्त करने में पूर्ण सशक्त और समृद्ध है। अपनी संप्रेषण क्षमता के बल पर ही हिंदी आज न केवल विश्व की अन्य भाषाओं के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है बल्कि द्रुत गति से विश्व—भाषा बनने की ओर भी अग्रसर है। विश्व पटल पर हिंदी की व्यापकता के कारण ही भारत की प्राचीन अथाह ज्ञान—विज्ञान संपदा के प्रति विद्वानों का आकर्षण बढ़ा है। आज वैदिक साहित्य, ज्ञान—विज्ञान और गणित विश्व के विभिन्न विश्वविद्यालयों में शोध का विषय बन चुके हैं।

यह निर्विवाद है कि हिंदी को आधुनिक सूचना— प्रौद्योगिकी की दृष्टि से समुन्नत बनाने में देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता और उसकी व्यवस्थित ध्वन्यात्मक वर्णमाला ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विगत कुछ समय में हिंदी और देवनागरी दोनों ही मानकीकरण और परिमार्जन के दौर से गुजरी हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में निरंतर विकास और प्रगति को देखते हुए हिंदी भाषा, देवनागरी लिपि तथा वर्तनी के मानकीकरण को संशोधित और परिवर्धित करते रहने की आवश्यकता महसूस की जाती रही है। कंप्यूटर में उपलब्ध विविध सॉफ्टवेयर और फॉन्ट के कारण कई बार हिंदी भाषा में कार्य करने में व्यवहारिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। इन समस्याओं के समाधान के लिए सूचना प्रौद्योगिकी विभाग, संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के सहयोग से यूनिकोड तैयार किया गया, जिसके आधार पर हिंदी वर्तनी के मानक स्वरूप को विकसित करने में सहायता मिली। संविधान की आठवीं अनुसूची में स्वीकृत बाईस भारतीय भाषाओं को देवनागरी में लिखा जा सके, इसके लिए भी निदेशालय द्वारा भाषा विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में परिवर्धित देवनागरी लिपि तैयार की गई जिसमें विभिन्न भारतीय भाषाओं के लिए विशेषक चिन्ह निर्धारित किए गए।

देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण पुस्तक के इस नवीन संस्करण में भी भाषाविदों के परामर्श पर कुछ व्यावहारिक एवं उपयोगी संशोधन किए गए हैं। ''द'' के साथ अर्धस्वर य और व आने पर संयुक्त व्यंजनों के परंपरागत रूप को प्राथमिकता देना तथा संयुक्ताक्षर के साथ आने वाली ह्रस्व ''इ'' की मात्रा का विशिष्ट संशोधित रूप इनमें प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं।

इस महत्त्वपूर्ण कार्य में भाषाविदों, भाषा–विशेषज्ञों,तकनीकी विशेषज्ञों, पत्रकारों, प्रकाशकों, हिंदी सेवी संस्थाओं तथा विभिन्न मंत्रालयों के प्रतिनिधियों का सहयोग प्राप्त हुआ है। मैं निदेशालय परिवार की ओर से सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ और आशा करता हूँ कि देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण पुस्तक का यह नवीनतम संस्करण हिंदी भाषा के आधुनिकीकरण और मानकीकरण की दिशा में नवीन दिशा प्रशस्त करेगा, साथ ही देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी को तकनीकी दृष्टि से और अधिक समृद्ध करके उसे सर्वजन सुकर, सर्वजन ग्राह्य और सर्वजन उपयोगी बनाएगा। इस संस्करण के संबंध में आप सभी के बहुमूल्य सुझावों तथा विचारों का स्वागत है। निदेशालय द्वारा इन सुझावों पर यथासमय कार्यवाही कर देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण पुस्तक को और अधिक सामयिक एवं उपयोगी बनाया जाएगा।

चुनौतियाँ

जिस तरह साहित्य 'समाज का दर्पण' है। उसी तरह लिपि 'वाणी का दर्पण' है। लिपि से ही वाणी का प्रतिबिंब, लेखन के रूप में दिखाई देता है। हमारी हिंदी भाषा और लिपि देवनागरी, सिर्फ एक भाषा और लिपि नहीं है, ये भारतवासियों की सभ्यता और संस्कृति की अमूल्य धरोहर भी है।

आज एक बार देवनागरी बनाम रोमन लिपि चर्चा का विषय बना हुआ है। इसका मुख्य कारण है, युवाओं में रोमन लिपि का बढ़ता हुआ चलन। कॉलेज के विद्यार्थियों तथा कॉर्पोरेट सेक्टर में नौकरी करने वालों युवाओं में रोमन लेखन की प्रवृत्ति ज्यादा दिखाई पड़ रही है। यह भविष्य के लिए अच्छी बात नहीं है। कुछ युवा तो यह कहने में गर्व महसूस करते हैं कि 'मुझे हिंदी नहीं आती है'। इस मानिसकता से बाहर आकर उन्हें सिर्फ अन्य भाषाओं का प्रयोग रोजगार के लिए करना होगा। यदि लिपि रूपी नींव खिसक गई तो भाषा की इमारत को ढहते देर नहीं लगेगी। देवनागरी के सामने उत्पन्न चुनौतियाँ गंभीर है और जटिल भी। सच तो यह है कि 'भाषा' और 'लिपि' नकारात्मक परिवर्तन के कारण जीवित नहीं बच सकती है।

मोबाइल के द्वारा संदेश भेजना हो या सोशल मीडिया पर कुछ भी लिखना हो तो भाषा चयन को उलझन समझकर फटाफट रोमन में ही लिखकर भेज देते हैं। भले ही दूसरा समझे या नहीं समझे। कुछ लोगों का तो यह भी कहना है कि हिंदी को रोमन लिपि में लिखने से परहेज नहीं करना चाहिए, बल्कि हमें उसका स्वागत करना चाहिए। उनका तर्क था कि मोबाइल, कंप्यूटर, इंटरनेट आदि के सहारे हिन्दी लिखने में आसान होती है। इसलिए हमें समय और जरुरत के अनुसार किसी पर जोर नहीं करना चाहिए। एक दिन मैंने 'व्हाट्सऐप' पर मैसेज डालकर अपने परिचित एक आदमी से पूछा कि 'आपने मेरा काम कर दिया'? तो उनका जबाब आया 'My ankal dide we let of sory' इसका अर्थ मैं आज तक समझ नहीं पाया और यह मात्र एक उदाहरण है। इस तरह की घटनाएं बहुत मिलेंगी।

हिंदी को रोमन लिपि में लिखने की प्रवृति में कुछ भारतीय, अंग्रेजी लेखक रोमन लिपि को ही मानक मानने की सलाह देने लगे हैं। रोमन लिपि न तो उच्चारण की दृष्टि से मानक है और न ही एकरूपता के लिहाज से, जबकि देवनागरी लिपि जैसे बोली जाती है वैसे ही लिखी जाती है। एक समय ऐसा भी था जब महात्मा गांधी, बालगंगाधर तिलक, विनोबा भावे जैसे महान नेताओं और स्वतंत्रता सेनानियों ने राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी और देवनागरी लिपि को स्थापित करने के लिए प्रयास किया। शहीदे आजम भगत सिंह ने भी अपनी मातृभाषा पंजाबी के लिए गुरुमुखी के बजाए वैज्ञानिकता के चलते देवनागरी लिपि को अपनाने की बात कही थी। उनका प्रयास था कि देश के जिन हिस्सों में देवनागरी लिपि प्रचलित नहीं हुई है वहाँ भी उसे पहुँचाया जाए। इसके लिए अनेक साहित्यिक संस्थाएँ कार्यरत हैं। आज स्थिति ऐसी हो गई है कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों में भी देवनागरी की जगह रोमन लिपि लेते जा रही है। पहले जहाँ हर क्षेत्रों में देवनागरी लिपि को पहुँचाने का कार्य किया जा रहा था अब वहाँ देवनागरी लिपि को रोमन लिपि से बचाने की जरूरत आ गई है। हम यह कह सकते हैं कि इस समय देवनागरी लिपि के अस्तित्व को रोमन लिपि से खतरा बढ़ता ही जा रहा है। हालात दिन पर दिन ऐसे बनते जा रहे हैं कि हिन्दी भाषा क्षेत्र के बच्चे

भी देवनागरी लिपि को लिखने–पढ़ने में कठिनाई महसूस करने लगे हैं। उनके लिए देवनागरी में लिखना मुश्किल होता जा रहा है। आजादी के पहले भी कुछ लोग रोमन लिपि की वकालत कर रहे थे लेकिन उस समय राष्ट्रवाद का ज्वार तेज था जिसके फलस्वरूप वे अलग–थलग पड़ गए। अब रोमन की सोच से बाहर निकलकर देवनागरी को आगे बढ़ाने का कार्य करना होगा।

देवनागरी लिपि इस देश की सबसे उपयुक्त और वैज्ञानिक लिपि है। रोमन लिपि अंग्रेजी भाषा को ही ठीक से व्यक्त नहीं कर पाती है। वह एक अत्यंत अराजक लिपि है। अंग्रेजी के महान लेखक जार्ज बर्नार्ड शा इस लिपि को किसी लायक नहीं समझते थे। उन्होंने अपनी वसीयत में एक अच्छी खासी रकम इस लिपि की जगह किसी नई लिपि के विकास के लिए रखी थी। रोमन लिपि न तो उच्चारण की दृष्टि से मानक है और न ही एकरूपता के लिहाज से। but और put की उच्चारण में जो विषमताएं हैं वह हिन्दी और देवनागरी में कहीं नहीं मिलेगी। इस गुण को समझते हुए नई पीढ़ी में इसके प्रति सम्मान और विश्वास जगाना होगा।

मैं ढूँढ रहा था आशा को ...

जीवन की परिभाषा में
मैं ढूंढ रहा था आशा को
कहाँ खो गयी कहाँ सो गयी
नन्ही सी वो मेरी आशा
सपनों की अभिलाषा में...
सुबह से लेकर साँझ हो गयी
नैना भी परेशां हो गए
खोज ना पाए आशा को।।

फैला घोर अँधेरा था
आंधी तुफानों के बीच
रस्ता भी पथरीला था
तभी दिखा एक नन्हा दीपक
तेज हवा में जलता हुआ
रोशन था उससे उजियारा
वहीं खड़ी मेरी आशा थी
मैंने ढूंढ लिया आशा को।।

फिर कुछ दूर चला मैं आगे
फूलों के सुन्दर उपवन में
भ्रमरों का मधुर संगीत था
बारिश की नन्ही बूंदे थी
मिट्टी की सोंधी–सोंधी
खुशबु थी

आसमान में इन्द्र धनुष था
इन्द्र धनुष के सात रंग में
रंगों से भरी मेरी आशा थी
मैंने ढूंढ लिया आशा को।।

माँ के चेहरे की चिंता और
पिता की बूढी आँखों में
देहरी पर राहत के पत्नी के
मौन कहे संवादों में
निश्छल नन्ही बिटिया की
उन मीठी–मीठी बातों में
मैंने ढूंढ लिया आशा को।।

कठिन परीक्षा है पंछी की
आहत जिसके पर भी हैं पर
आशा के पंखो से ही अब
उसको अम्बर छूना है
उसको अब अम्बर छूना है।।

दिव्या भारद्वाज
प्रबंधक राजभाषा
नेशनल इंश्योरेंस कंपनी दि.क्षे.का.–4

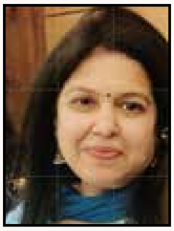

बैंक ऑफ महाराष्ट्र

माननीय संसदीय राजभाषा समिति के माननीय सदस्यों द्वारा दिनांक 11 मार्च, 2024 को बैंक ऑफ महाराष्ट्र, दिल्ली अंचल कार्यालय के राजभाषा कार्यान्वयन का निरीक्षण किया गया। समिति ने दिल्ली अंचल कार्यालय द्वारा किए जा रहे राजभाषा कार्यान्वयन की सराहना की। वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय की ओर से डॉ अभिजीत फुकन, आर्थिक सलाहकार एवं श्री सर्वेश कुमार मिश्र, सहायक निदेशक (राजभाषा), बैंक ऑफ महाराष्ट्र की ओर से महाप्रबंधक श्रीमती चित्रा दातार, उप अंचल प्रबंधक श्रीमती चारू मिश्रा, मुख्य प्रबन्धक (राजभाषा) श्री महेंद्र सिंह, मुख्य प्रबन्धक (राजभाषा) श्री सुभान्शु सक्सेना, प्रबंधक (राजभाषा) सुश्री शुभ्रा नीति ने निरीक्षण बैठक में सहभाग लिया। इस अवसर पर माननीय सांसदों ने बैंक के प्रकाशनों और राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्राप्त पुरस्कारों व शील्ड की प्रदर्शनी का भी अवलोकन किया।

दिनांक 15 मार्च 2024 को दिल्ली अंचल कार्यालय द्वारा बैंक के सभी राजभाषा अधिकारियों सहित दिल्ली व एनसीआर स्थित सभी बैंकों, वित्तीय संस्थाओं और बीमा कंपनियों के राजभाषा प्रभारियों और राजभाषा अधिकारियों सहित कुल 150 प्रतिभागियों हेतु ''भविष्य की बैंकिंग'' विषय पर अखिल भारतीय राजभाषा सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार का उद्घाटन सुश्री अंशुली आर्या, आई.ए.एस, सचिव (राजभाषा) के कर–कमलों से किया गया और बैंक ऑफ महाराष्ट्र के कार्यपालक निदेशक श्री आशीष पाण्डेय जी विशेष रूप से इस सेमिनार में उपस्थित हुए। महाप्रबंधक (मासंप्र व राजभाषा) श्री के. राजेश कुमार, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) डॉ. राजेन्द्र श्रीवास्तव सहित बैंक के प्रधान कार्यालय सहित सभी अंचलों में तैनात राजभाषा अधिकारियों एवं संपर्क राजभाषा अधिकारियों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। दिल्ली अंचल कार्यालय में तैनात मुख्य प्रबन्धक (राजभाषा) श्री सुभान्शु सक्सेना ने सेमिनार का संयोजन किया।

प्रतियोगिता

विश्व हिंदी दिवस पर पंजाब नैशनल बैंक, पश्चिमी दिल्ली द्वारा स्टाफ–सदस्यों हेतु 'तीन मिनट बिना अंग्रेजी का प्रयोग किए अपने यादगार पल साझा करने की प्रतियोगिता' में स्टाफ–सदस्य, एवं निर्णायकगण उप मंडल प्रमुख, श्री नीरज कुमार, एवं श्री संजय धर और दिल्ली अंचल के मुख्य प्रबन्धक, (राजभाषा) श्री आशीष शर्मा।

मंडल प्रमुख, पश्चिमी दिल्ली, श्री एस.पी गोस्वामी द्वारा विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक

इंडियन ओवरसीज़ बैंक द्वारा विश्व हिन्दी दिवस 2024 के उपलक्ष्य में आयोजित हिन्दी प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए मुख्य क्षेत्रीय प्रबन्धक, दिल्ली क्षेत्र, श्री अनिल कुमार

एस.टी.सी. दिल्ली, इंडियन ओवरसीज़ बैंक द्वारा विभिन्न क्षेत्रों की शाखाओं में कार्यरत स्टॉफ सदस्यों के लिए ऑनलाइन हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई। प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए सुश्री पुनीत कौर चावला, प्रबन्धक (राजभाषा)

इंडियन ओवरसीज़ बैंक द्वारा दिल्ली क्षेत्र में कार्यरत स्टॉफ सदस्यों के लिए आयोजित एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला में मंचासीन श्री अनित कुमार, मुख्य क्षेत्रीय प्रबन्धक तथा सुश्री पुनीत कौर चावला, प्रबन्धक (राजभाषा)

जीवन जीने की प्रेरणा

घुट–घुट कर जीना छोड़ दे,
तू रुख हवाओं का मोड़ दे,
हिम्मत की अपनी कलम उठा,
लोगों के भरम को तोड़ दे,
तू छोड़ ये आंसू उठ हो खड़ा,
मंजिल की ओर अब कदम बढ़ा,
हासिल कर इक मुकाम नया,
पन्ना इतिहास में जोड़ दे,
घुट–घुट कर जीना छोड़ दे,
तू रुख हवाओं का मोड़ दे,
हिम्मत की अपनी कलम उठा,
लोगों के भरम को तोड़ दे।

उठना है तुझे नहीं गिरना है,
जो गिरा तो फिर से उठना है,
अब रुकना नहीं इक पल तुझको,
बस हर पल आगे बढ़ना है,
राहों में मिलेंगे तूफ़ान कई,
मुश्किलों के होंगे वार कई,
इन सबसे तुझे न डरना है,
तू लक्ष्य पे अपने जोर दे,
घुट–घुट कर जीना छोड़ दे,
तू रुख हवाओं का मोड़ दे,
हिम्मत की अपनी कलम उठा,
लोगों के भरम को तोड़ दे।

चल रास्ते तू अपने बना,
छू लेना अब तू आसमान,
धरती पर तू रखना कदम,
बनाना है अपना ये जहाँ,
किसी के रोके न रुक जाना तू,
लकीरें किस्मत की खुद बनाना तू,
कर मंजिल अपनी तू फतह,
कामयाबी के निशान छोड़ दे,
घुट–घुट कर जीना छोड़ दे,
तू रुख हवाओं का मोड़ दे,
हिम्मत की अपनी कलम उठा,
लोगों के भरम को तोड़ दे।

कमल सिंह
सहायक प्रबन्धक (राजभाषा)
दि न्यू इंडिया एश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड,
क्षेत्रीय कार्यालय–II

सीनियर सिटीजन सेविंग स्कीम

दीपांजली
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली उत्तर

वरिष्ठ नागरिक बचत योजना को सीनियर सिटीजन सेविंग स्कीम कहते हैं। यह भारत सरकार द्वारा चलाई गई एक ऐसी बचत योजना है जो केवल वरिष्ठ नागरिकों के लिए है। सरकार द्वारा चलाई गई विभिन्न योजनाओं में से इस योजना को सर्वश्रेष्ठ माना गया है जिसके दो मुख्य कारण हैं। पहला यह कि सरकार इस योजना में बुजुर्गों को सबसे ज्यादा ब्याज दर देती है। दूसरा यह कि इस योजना के अंतर्गत सबसे ज्यादा टैक्स छूट दी जाती है। अब हम इस योजना से जुड़े कुछ तथ्यों के बारे में विस्तार से जानेंगे।

सीनियर सिटीजन योजना में खाता कैसे खुलवाएं।

इस योजना के तहत खाता खोलने के लिए सबसे पहले अपने नजदीकी बैंक या डाकघर में जाएं। वहां जाकर सीनियर सिटीजन सेविंग स्कीम का फार्म प्राप्त करें।

आवेदन फार्म मिलने पर सबसे पहले फार्म में मांगी गई सारी जरूरी जानकारी को दर्ज करें। जानकारी भरते वक्त सावधान रहें कि आपका कुछ भी तथ्य गलत ना हो।

इसके बाद आवेदन फार्म के साथ अपने केवाईसी दस्तावेजों की फोटोकॉपी संलग्न करें जैसे आधार कार्ड, पैन कार्ड, उम्र का प्रमाण एवं एक पासपोर्ट आकार की फोटो। इसके साथ साथ अपने सारे ओरिजनल दस्तावेज भी अवश्य लेकर जाएं।

सभी दस्तावेजों के साथ काउंटर पर अपना फार्म जमा करवा दें और इस तरह से आप सीनियर सिटीजन सेविंग स्कीम के तहत बहुत ही आसानी से खाता खुलवा सकते हैं।

सीनियर सिटीजन सेविंग स्कीम में निवेश का नियम।

इस योजना के तहत कम से कम 1000 रुपए डालकर खाता खुलवाया जा सकता है। इस योजना में निवेश करने की अधिकतम सीमा 15 लाख रुपए थी परंतु हाल ही में सरकार ने 2023 के बजट में इस निवेश सीमा को बढ़ा कर 30 लाख रुपए कर दिया है। इसलिए अब इस योजना में वरिष्ठ नागरिक 30 लाख रुपए तक का निवेश करके इनकम टैक्स में ज्यादा बचत का लाभ उठा सकते है।

हर तीन महीने में मिलती है आमदनी।

सीनियर सिटीजन सेविंग स्कीम में निवेशक को पैसा जमा करवाने पर अगले 5 साल तक हर तिमाही में ब्याज के रूप में एक निश्चित आमदनी की किस्त मिलती है। यह आमदनी तिमाही की पहली से पांचवीं तारीख में लाभार्थी के योजना से जुड़े हुए बचत खाते में भेज दी जाती है। यानी कि हर साल 1 अप्रैल, 1 जुलाई, 1 अक्टूबर और 1 जनवरी से लेकर हर महीने की 5 तारीख तक निवेशक को ब्याज वाला पैसा मिल जाता है। यदि उस दिन बैंकिंग अवकाश होता है तो अगले कार्य दिवस पर निवेशक को पैसा मिल जाता है। 5 साल की अवधि पूरी होने पर जमा की गई पूरी राशि वापस कर दी जाती है। क्योंकि आपको इस स्कीम के तहत जो जमा राशि प्रदान की जाती है वह आपकी आमदनी यानी कि आपके द्वारा जमा पर ब्याज के रूप में होती है। इस प्रकार इस योजना में आपको पूरा पैसा मिल जाता है और योजना की अवधि के दौरान आपको नियमित आमदनी भी प्राप्त होती रहती है।

जमा राशि पर मिलेगा एफडी से भी ज्यादा सालाना ब्याज

सीनियर सिटीजन सेविंग स्कीम के तहत सरकार ने 1 अप्रैल 2023 से ब्याज दर को बढ़ाकर 8.2% कर दिया था। अप्रैल से पहले इस योजना पर 8% और इससे पहले केवल 7.6% का ही ब्याज था। ब्याज की दर बढ़ने से 2023 से यह योजना सबसे ज्यादा ब्याज देने वाली सरकारी योजना बन गई है। प्रत्येक वित्त वर्ष की तिमाही में सरकार द्वारा पहले सीनियर सिटीजन सेविंग स्कीम की नई ब्याज दर घोषित कर दी जाती है। जिस दिन आप इस योजना के तहत खाता खुलवाएंगे, उस दिन की ब्याज दर के हिसाब से आपका

खाता पांच साल के लिए खोल दिया जाएगा। बीच में ब्याज दर बदलने का पहले से खुले हुए खाते पर कोई असर नहीं पड़ता है। अगर आप वरिष्ठ नागरिक हैं और एक अच्छी ब्याज दर प्राप्त करना चाहते हैं तो आज ही अपने नज़दीकी बैंक में जाकर एससीएसएस खाता अवश्य खुलवाएं।

सीनियर सिटीजन स्कीम से पैसे निकालने का नियम एवं इसकी मैच्योरिटी अवधि।

इस योजना में मैच्योरिटी की समय सीमा 5 साल की होती है। इसके अलावा अगर आप चाहें तो मैच्योरिटी के बाद 1 साल के अंदर इसकी मैच्योरिटी अवधि को 3 साल के लिए आगे बढ़ा सकते हैं। मेच्योरिटी के बाद पैसे निकालने पर किसी भी तरह का कोई भी चार्ज नहीं लिया जाता है। अगर आप 3 साल के लिए फिर से आईएमए निवेश कर रहे हैं तो 1 साल पूरा होने के बाद आप कभी भी खाता बंद करा सकते हैं उस स्थिति में आपकी जमा रकम में से कोई भी रकम नहीं काटी जाएगी।

यदि आप सीनियर सिटीजन सेविंग स्कीम के अंतर्गत समय से पहले पैसा निकालना चाहते हैं तो खाता खोलने से लेकर निकासी के बीच के समय के आधार पर दंड नियम लागू होते हैं। समय पूर्व निकासी के दंड नियम कुछ इस प्रकार हैंः—

खाता खोलने की तारीख से 2 साल पूरा होने से पहले अकाउंट बंद करने पर जमा राशि का 5% जुर्माना के रूप में काटा जाता है।

सीनियर सिटीजन सेविंग स्कीम में यदि निवेशक खाता खोलने से लेकर 2 से 5 साल के बीच पैसे निकालना चाहता है तो जमा राशि का 1% जुर्माने के रूप में काट लिया जाएगा।

सीनियर सिटीजन सेविंग स्कीम में निवेश करने के लाभ

वरिष्ठ नागरिक बचत योजना में आप कम से कम 1000 रुपए में खाता खुलवा सकते हैं जो एक बहुत ही छोटी राशि है।

60 वर्ष एवं उससे अधिक आयु का कोई भी व्यक्ति इस योजना में निवेश कर सकता है।

अधिकतम जमा राशि 30 लाख रुपए या रिटायरमेंट पर प्राप्त होने वाली राशि में से जो भी कम हो निवेश कर सकते हैं।

5 साल की अवधि पूरी होने पर जमा की गई पूरी राशि वापस कर दी जाती है।

सीनियर सिटीजन सेविंग स्कीम में निवेश करने पर वरिष्ठ नागरिकों को सबसे सुरक्षित और विश्वसनीय निवेश विकल्प प्राप्त होता है।

इस योजना में अभी 2024 में प्रतिवर्ष 8.2% ब्याज दर का लाभ प्राप्त होता है। जो विशेष रूप से एफडी और बचत खाते जैसे पारंपारिक निवेश विकल्पों की तुलना में सबसे अधिक है।

सीनियर सिटीजन बचत योजना में ब्याज राशि का भुगतान हर तीन महीने में किया जाता है। यानी हर 3 माह के बाद आपको ब्याज राशि का लाभ प्राप्त होता रहेगा।

आयकर अधिनियम की धारा 80 सी के तहत सीनियर सिटीजन सेविंग स्कीम में निवेश करने पर खाता धारक को 1.5 लाख रुपए प्रति वर्ष के हिसाब से टैक्स में छूट का लाभ प्राप्त होता है।

इस योजना के अंतर्गत निवेश करने की प्रक्रिया काफी सरल है। भारत के किसी भी बैंक की किसी भी शाखा में वरिष्ठ नागरिक बचत खाता खुलवाया जा सकता है।।

जीवन उद्देश्य...

लक्ष्य की ओर नित
अग्रसर हों
खुद की बनी राह पर
प्रतिबद्धता से
धुन में
जुनून के साथ
एकाग्र होकर
असफलता से सीखते हुए

चलते हुए...
बने अध्येता हम स्वयं
अपने जीवन के...
दृढ़ निश्चय
श्रेष्ठ चयन
और
संकल्प के प्रवाह में...
उत्साह से लबालब

छलकते हुए
आत्मस्वीकृति
संतुलन व सरलता से
प्रसन्न रहकर
बढ़ते जाए उन्मुक्त
अपने शिखर की ओर ......

स्वस्थ, मुदित व उमंग भाव से .....
जीवन का हर पल पूर्ण हो
उपलब्धियों और सकारात्मकता से...

कल्पना चौहान
प्रशासनिक अधिकारी (राजभाषा)
भारतीय जीवन बीमा निगम, उत्तर क्षेत्रीय कार्यालय

बैंकर

मन करता था पंछी सा उड़,
कभी इस डाल तो कभी उस डाल।
पंख फैला ऊंची भरूं उड़ान,
लगा दूँ जी जान, कर लूँ मुट्टी ये जहान।
मेहनत और कामयाबी की , भरी जब उड़ान,
लगने लगा छोटा ये असीमित आसमान।
मन हुआ पुलकित ये जान,
कि घूमना है मुझे ये सारा जहान।
दुनिया के इस छोर से,
उस छोर तक है अपना मुकाम।
बिन कुछ किए ही,
घूमना है ये जहान।
हर पल हर दिन सुहाना था,
लेकिन लौटकर घर तो आना था।
घर आए तो ना यारी थी , ना याराना था।
अपनेपन के नाम पर एक घर पुराना था।
हर किसी को काम की खोज में जाना था।
हम भी चल दिए लोगों की भीड़ में,
जहां हर कोई बेगाना था।
वर्षों बिता दिए महानगरों में, किसी मुकाम की खोज में।
किसी मुकाम को खोजते, हमने खुद को गुमा दिया।
भरनी थी उड़ान कामयाबी की ,
लेकिन तुमने तो खुद को मिटा दिया।
ये कैसी कामयाबी , कैसी उड़ान है, यारो।
जिसके बोझ तले असहाय हो रहे हो।
उड़ो उन्मुक्त, असीमित जहान में,
पर भावनाओं के पर ना काटो।
ना मारो इच्छाओं को, उन्हें जुनून से हासिल करो।
जिन्दगी नायाब है यारों, एक हार पर यूं ना उसे व्यर्थ करो।
तुम भी हो किसी के, कोई तुम्हारा भी है।
कोई अपना, कोई बेगाना भी है।
ना चल दो ऐसे ही, यूं हार के
एक पल तो सोचो, तुम्हारी कामयाबी
का गुजरा जमाना भी तो है।

श्रीमती शर्मिला कटारिया
मुख्य प्रबंधक
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली

मानसून

चढ़ा जेठ, डरा सेठ।
उबलती गर्मी, धैर्य खोती नरमी।।
कहीं लू है पकड़े। कहीं चमकी है जकड़े।।
जवाब देती मोटर। क्यों पानी–पानी करे वोटर।।
वो आम का पकना।
और लीची का चखना।।
जामुन की घटा।
अंगूर अलग से डटा।।
क्या पौधे, क्या फल।
क्या इंसान, क्या नल।।

बिना पानी के क्या स्वाद आये।
खाये बेशक जितना, मन को न भाये।।
सेहत की चिंता अलग से सताये।
जगत मानो चहुदिस त्राहि– कृष्ण मचाये।।

ऐसे में कहीं से, आयी मानसून की आहट।
कहीं बरसी झम–झम, कहीं हुई अकुलाहट।।

वो मोर का नाचना, वो मेंढ़क की टर्र–टर्र।
वो कवि की कल्पना, मुरली बजाये घर–घर।।
न बाढ़ की चिंता, न जल भराव का झंझट।
गर कराई है हमने नदी–नालों की मरम्मत।।

नहीं तो होगी ईश्वर की माया।
कहीं टूटी सड़कें, कहीं बदहाली छाया।।

मानसून है आशा।
पर सोचे ज़रा सा।।

दुर्लभ फुहारों को खूब संचित।
न रहे जीव–पौधे पानी से वंचित।।

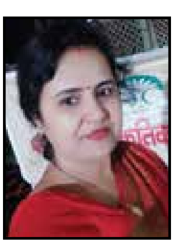

ममता ठाकुर
दिलशाद गार्डेन
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया

दिल्ली बैंक नराकास द्वारा सदस्य कार्यालयों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों के लिए हिंदी संगोष्ठी तथा हिंदी प्रतियोगिता का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दिल्ली (बैंक) द्वारा अपने सदस्य कार्यालयों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों के लिए ''नवीनतम ई–टूल्स एवं आधुनिक व्याकरण'' विषय पर हिंदी संगोष्ठी तथा ''कुछ भूल गए, कुछ याद रहा'' प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 03.05.2024 को पंजाब नैशनल बैंक के प्रधान कार्यालय, द्वारका के मल्टीपर्पज हॉल में किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता दिल्ली बैंक नराकास के अध्यक्ष, श्री समीर बाजपेयी, मुख्य महाप्रबंधक ने की। विषयगत व्याख्यान के लिए माननीय संसदीय राजभाषा समिति के सचिवालय में कार्यरत अवर सचिव, श्री विक्रम सिंह कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे और राजभाषा विभाग, पंजाब नैशनल बैंक के महाप्रबंधक, श्री देवार्चन साहू विशेष रूप से उपस्थित थे।

स्वागत संबोधन में महाप्रबंधक, श्री देवार्चन साहू ने दिल्ली बैंक नराकास के अध्यक्ष, श्री समीर बाजपेयी, मुख्य अतिथि और संगोष्ठी वक्ता, श्री विक्रम सिंह तथा दिल्ली बैंक नराकास के सदस्य कार्यालयों से पधारे सभी राजभाषा अधिकारियों का अभिवादन किया। उन्होंने बैंक द्वारा राजभाषा के प्रसार–प्रचार में किए जा रहे प्रयासों का एक संक्षिप्त परिचय दिया और कार्यक्रम की सफलता के लिए शुभकामनाएं दी।

अध्यक्षीय संबोधन देते हुए श्री समीर बाजपेयी, मुख्य महाप्रबंधक ने मुख्य वक्ता और मुख्य अतिथि, श्री विक्रम सिंह, अवर सचिव, सचिवालय, माननीय संसदीय राजभाषा समिति का अभिनन्दन किया और उपस्थित सभी राजभाषा अधिकारियों को इस कार्यक्रम के उद्देश्य को सफल बनाने के लिए साधुवाद दिया। उन्होंने कहा कि दिल्ली बैंक नराकास के सभी सदस्य एकजुट होकर वर्ष पर्यन्त राजभाषा के प्रचार–प्रसार की गतिविधियों को सफलतापूर्वक संचालित करते रहते हैं जिसके परिणामस्वरूप दिल्ली बैंक नराकास देश की सर्वश्रेष्ठ नराकासों में से है। उन्होंने श्री विक्रम सिंह जी का आभार व्यक्त किया कि उन्होंने दिल्ली बैंक नराकास के आग्रह को स्वीकार करते हुए इस संगोष्ठी में

व्याख्यान देने के लिए समय निकाला। उन्होंने महाप्रबंधक, राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय, पंजाब नैशनल बैंक का भी इस आयोजन को सफल बनाने के लिए दिए गए सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया।

अवर सचिव, सचिवालय, माननीय संसदीय राजभाषा समिति, श्री विक्रम सिंह ने विषयगत व्याख्यान को अत्यंत सरल और रोचक ढंग से प्रस्तुत किया और पीपीटी के माध्यम से अनुवाद और वॉयस टाइपिंग के नवीनतम टूल्स के बारे में बताया और उसका लाइव प्रयोग करके भी दिखाया। उन्होंने वाक्य निर्माण के समय की जाने वाली सामान्य गलतियों का उल्लेख करते हुए उन्हें व्याकरण के आधार पर शुद्ध कैसे लिखा जाना चाहिए, के बारे में विस्तार से वर्णित किया।

बैंक ऑफ बडौदा के मुख्य प्रबंधक, श्री पंकज कुमार वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए श्री विक्रम सिंह, अवर सचिव के विषय ज्ञान और प्रस्तुतीकरण की सराहना की और अध्यक्ष, दिल्ली बैंक नराकास को इस प्रकार के ज्ञानवर्धक और रुचिकर कार्यक्रम आयोजन के लिए बधाई दी।

संगोष्ठी समापन के उपरांत दिल्ली बैंक नराकास के सदस्य कार्यालयों से पधारे राजभाषा अधिकारियों के लिए 'कुछ भूल गए, कुछ याद रहा' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

हिंदी सेमिनार

इंडिया इन्फ्रास्ट्रचर फाइनेंस कॅम्पनी द्वारा दिनांक 22.02.2024 को आयोजित हिंदी सेमिनार में उपस्थित उच्चाधिकारी एवं स्टाफ सदस्य

भारतीय संगीत परंपरा

अनादिनिधनं ब्रह्म शब्दतवायदक्षरम् ।
विवर्तते अर्थभावेन प्रक्रिया जगतोयतः?

भारती
प्रबंधक (राजभाषा)
पंजाब एण्ड सिंध बैंक, प्रधान कार्यालय

अर्थात् शब्द रूपी ब्रह्म अनादि, विनाश रहित और अक्षर है तथा उसकी विवर्त प्रक्रिया से ही यह जगत भासित होता है। इस प्रकार सम्पूर्ण संसार अप्रत्यक्ष रूप से संगीतमय हैं। संगीत एक ईश्वरीय वाणी है। अतः यह ब्रह्म रूप ही है। संगीत आनन्द का अविर्भाव है तथा आनन्द ईश्वर का स्वरूप है। संगीत के माध्यम से ही ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है।

संगीत एवं आध्यात्म भारतीय संस्कृति का सुदृढ़ आधार है। भारतीय संस्कृति आध्यात्म प्रधान मानी जाती रही है। संगीत से आध्यात्म तथा मोक्ष की प्रप्ति के साथ भारतीय संगीत के प्राण भूत तत्व रागों के द्वारा मनः शांति, योग ध्यान, मानसिक रोगों की चिकित्सा आदि विशेष लाभ प्राप्त होते है। प्राचीन समय से मानव संगीत की आध्यात्मिक एवं मोहक शक्ति से प्रभावित होता आया है। संगीत का सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ भरत मुनि का नाट्यशास्त्र है।

संगीत' शब्द 'सम्+ग्र' धातु से बना है। अन्य भाषाओं में 'सं' का 'सिं' हो गया है और 'गै' या 'गा' धातु (जिसका भी अर्थ गाना होता है) किसी न किसी रूप में इसी अर्थ में अन्य भाषाओं में भी विद्यमान है। ऐंग्लोसैक्सन में इसका रूपान्तर है 'सिंगन' जो आधुनिक अंग्रेजी में 'सिंग' हो गया है, आइसलैंड की भाषा में इसका रूप है 'सिंग', (केवल वर्ण विन्यास में अन्तर आ गया है,) डैनिश भाषा में है 'सिंग , डच में है 'त्सिगन', जर्मन में है 'सिंगेन'। अरबी में 'गना' शब्द है जो 'गान' से पूर्णतः मिलता है। सर्वप्रथम 'संगीतरत्नाकर' ग्रन्थ में गायन, वादन और नृत्य के मेल को ही 'संगीत' कहा गया है। वस्तुतः 'गीत' शब्द में 'सम्' जोड़कर 'संगीत' शब्द बना, जिसका अर्थ है 'गान सहित'। नृत्य और वादन के साथ किया गया गान 'संगीत' है। शास्त्रों में संगीत को साधना भी माना गया है।

गायन मानव के लिए प्रायः उतना ही स्वाभाविक है जितना वाक्। कब से मनुष्य ने गाना प्रारंभ किया, यह बतलाना उतना ही कठिन है जितना कि कब से उसने बोलना प्रारंभ किया है। प्रामाणिक तौर पर देखें तो सबसे प्राचीन सभ्यताओं के अवशेष, मूर्तियों, मुद्राओं व भित्तिचित्रों से जाहिर होता है कि हजारों वर्ष पूर्व लोग संगीत से परिचित थे। देव–देवी को संगीत का आदि प्रेरक सिर्फ हमारे ही देश में नहीं माना जाता, यूरोप में भी यह विश्वास रहा है। यूरोप, अरब और फारस में जो संगीत के लिए शब्द हैं उस पर ध्यान देने से इसका रहस्य प्रकट होता है। संगीत के लिए यूनानी भाषा में शब्द 'मौसिकी' लैटिन में 'मुसिका', फ्रांसीसी में 'मुसीक', पोर्तुगी में 'मुसिका', जर्मन में मूसिक', अंग्रेजी में 'म्यूजिक', इब्रानी, अरबी और फारसी में 'मोसीकी'। इन सब शब्दों में साम्य है। ये सभी शब्द यूनानी भाषा के 'म्यूज'शब्द से बने हैं। 'म्यूज' यूनानी परम्परा में काव्य और संगीत की देवी मानी गयी है। कोश में 'म्यूज' शब्द का अर्थ दिया है 'दि इन्सपायरिंग गॉडेस ऑफ सॉंग' अर्थात् 'गान की प्रेरिका देवी'। यूनान की परम्परा में 'म्यूज' 'ज्यौस'की कन्या मानी गयी हैं। ज्यौस' शब्द संस्कृत के 'द्यौस्' का ही रूपान्तर है जिसका अर्थ है 'स्वर्ग'। 'ज्यौस' और 'म्यूज' की धारण ब्रह्मा और सरस्वती से बिलकुल मिलती–जुलती है। सुव्यवस्थित ध्वनि, जो रस की सृष्टि करे, वही संगीत कहलाती है। गायन, वादन व नृत्य तीनों के समावेश को संगीत कहते हैं। संगीत नाम इन तीनों के एक साथ व्यवहार से पड़ा है। गाना, बजाना और नाचना प्रायः इतने पुराने है जितना पुराना आदमी है। बजाने और बाजे की कला आदमी ने कुछ बाद में खोजी–सीखी हो, पर गाने और नाचने का आरंभ तो न केवल हज़ारों बल्कि लाखों वर्ष पहले उसने कर लिया होगा, इसमें कोई संदेह नहीं।

प्रकृति की प्रत्येक वस्तु एक प्रकार से संगीत का निर्माण करती है। यह विभिन्न प्रकार की ध्वनियां ही तो हैं जिनके मेल से जिस रस की प्राप्ति होती है वही संगीत है। पक्षियों के चहकने में, नदी के बहाव में, झरने की आवाज में, पत्तों की सरसराहट में, संगीत है।

भारतीय संगीत के मुख्य दो प्रकार हैं–शास्त्रीय संगीत और भाव संगीत। शास्त्रीय संगीत उसे कहते हैं, जिसमें नियमित शास्त्र होता है और जिसमें कुछ विशिष्ट (ख़ास) नियमों का पालन करना आवश्यक होता है। उदाहरणार्थ, शास्त्रीय संगीत में राग के नियमों का पालन करना पड़ता है, न करने से राग हानि होती है। इसके अतिरिक्त लय–ताल की सीमा में रहना

पड़ता है, गीत का कौन सा प्रकार हम गा रहे हैं, उसका निर्वाह भी उसी प्रकार से होना चाहिए, इत्यादि–इत्यादि। भाव संगीत में शास्त्रीय संगीत के समान न कोई बन्धन होता है और न उसका नियमित शास्त्र ही होता है। भाव संगीत का मुख्य और एकमात्र उद्देश्य कानों को अच्छा लगना है, अतः उसमें कोई बन्धन नहीं रहता–चाहे कोई भी स्वर प्रयोग किया जाए, चाहे जिस ताल में गाया जाए व आलाप, तान, सरगम, आदि कुछ भी प्रयोग किया जाए अथवा न प्रयोग किया जाए। भाव संगीत का मुख्य उद्देश्य रंजकता है। रंजकता के लिए ही कहीं–कहीं शास्त्रीय संगीत का सहारा भी लिया जाता है। भाव संगीत को सुगम संगीत कहते हैं। संगीत के माध्यम से परमात्मा से आत्म मिलन किया जा सकता है। जब हम परमात्मा का नाम संगीतमय रूप में लेते हैं तो एक अलग प्रकार का सुकून प्राप्त होता है। संगीत तनाव मुक्त करने में सफल होता है।

संगीत किसी भी देश को एकता के सूत्र में बांधने का काम करता है, जहां न कोई जाति बंधन है न कोई सीमाओं का बंधन। संगीत मिलन का प्रतीक है, धर्मनिरपेक्षता का प्रतीक है। ऐसे ही एक शख्स भारतीय शास्त्रीय संगीतकार उस्ताद बिस्मिल्लाह खान शहनाई वादक जिनकी शहनाई की गूंज केवल भारत ही नहीं बल्कि विदेशों तक गूंजती है। उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ान ऐसे मुसलमान थे जो सरस्वती की पूजा करते थे। वे ऐसे पांच वक्त के नमाज़ी थे जो संगीत को ईश्वर की साधना मानते थे और जिनकी शहनाई की गूंज के साथ बाबा विश्वनाथ मंदिर के कपाट खुलते थे। वे ऐसे बनारसी थे जो गंगा, संकटमोचन और बालाजी मंदिर के बिना अपनी ज़िंदगी की कल्पना नहीं कर सकते थे। वे ऐसे अंतरराष्ट्रीय संगीत साधक थे जो बनारसी कजरी, चैती, ठुमरी और अपनी भाषाई ठसक को नहीं छोड़ सकते थे। वे ऐसे बनारसी थे जो गंगा में वज़ू करके नमाज पढ़ते थे और सरस्वती का स्मरण करके शहनाई की तान छेड़ते थे। वे इस्लाम के ऐसे पैरोकार थे जो अपने मजहब में संगीत के हराम होने के सवाल पर हंस कर कह देते थे, 'क्या हुआ इस्लाम में संगीत की मनाही है, कुरान की शुरुआत तो 'बिस्मिल्लाह' से ही होती है।

लोकगीत तो प्रकृति के उद्‌गार हैं। साहित्य की छंदबद्धता एवं अलंकारों से मुक्त रहकर ये मानवीय संवेदनाओं के संवाहक के रूप में माधुर्य प्रवाहित कर हमें तन्मयता के लोक में पहुंचा देते हैं। लोकगीतों के विषय, सामान्य मानव की सहज संवेदना से जुड़े हुए हैं। इन गीतों में प्राकृतिक सौंदर्य, सुख–दुःख और विभिन्न संस्कारों और जन्म–मृत्यु को बड़े ही हृदयस्पर्शी ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

संगीतमयी प्रकृति जब गुनगुना उठती है तब लोकगीतों का स्फुरण हो उठना स्वाभाविक ही है। विभिन्न ऋतुओं के सहजतम प्रभाव से अनुप्राणित ये लोकगीत प्रकृति रस में लीन हो उठते हैं। बारह मासा, छैमासा तथा चौमासा गीत इस सत्यता को रेखांकित करने वाले सिद्ध होते हैं। पावसी संवेदनाओं ने तो इन गीतों में जादुई प्रभाव भर दिया है। पावस ऋतु में गाए जाने वाले कजरी, झूला, हिंडोला, आल्हा आदि इसके प्रमाण हैं।

सामाजिकता को जिंदा रखने के लिए लोकगीतों/लोकसंस्कृतियों का सहेजा जाना बहुत जरूरी है। कहा जाता है कि जिस समाज में लोकगीत नहीं होते, वहां पागलों की संख्या अधिक होती है। सदियों से दबे–कुचले समाज ने, खास कर महिलाओं ने सामाजिक दंश/अपमान/घर–परिवार के तानों/जीवन संघर्षों से जुड़ी आपा–धापी को अभिव्यक्ति देने के लिए लोकगीतों का सहारा लिया। लोकगीत किसी काल विशेष या कवि विशेष की रचनाएं नहीं हैं। अधिकांश लोकगीतों के रचयिताओं के नाम अज्ञात हैं। दरअसल एक ही गीत तमाम कंठों से गुजर कर पूर्ण हुआ है। महिलाओं ने लोकगीतों को ज़िन्दा रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आज वैश्वीकरण की आंधी में हमने अपनी कलाओं को तहस–नहस कर दिया है। अपनी संस्कृतियां अनुपयोगी/बेकार की जान पड़ने लगी हैं। ऐसे समय में जोगिया, फाजिलनगर, कुशीनगर जनपद की संस्था–'लोकरंग सांस्कृतिक समिति ने लोकगीतों को सहेजने का काम शुरू किया है। संस्था ने तमाम लोकगीतों को बटोरा है और अपने प्रकाशनों में छापा भी है। संस्था महत्वपूर्ण लोक कलाकारों के अन्वेषण में भी लगी हुई है और उसने रसूल जैसे महत्वपूर्ण लोक कलाकार की खोज की है जो भिखारी ठाकुर के समकालीन एवं उन जैसे प्रतिष्ठित कलाकार थे।

हम लोग जिन गीतों से अपने मन को जोड़कर देख पाते है, वह है फिल्मी गीत! भारतीय सिनेमा और गीत, संगीत का साथ आत्मा और शरीर का है। अगर कहा जाये तो दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। आज सिनेमा की अप्रत्याशित सफलता और ऊँचाई में गीत–संगीत का ही विशेष योगदान है। सिनेमा जो आज नये सफलता का इतिहास रच रहा है इसका एक बड़ा कारण गीत, संगीत है। भारतीय सिनेमा में संगीत का पुराने समय से ही महत्वपूर्ण स्थान रहा है। हम यह जानते हैं की 1913 से भारत में फिल्मों का निर्माण शुरू हुआ लेकिन इसे लोकप्रियता और पहचान आजादी के बाद मिली। हमारे फिल्म जगत में नौशाद, एस. डी. बर्मन, मोहम्मद ज़हूर खय्याम, हसरत जयपुरी, मजरूह सुल्तानपुरी जैसे गीतकार और संगीतकार थे जिनके लिखे गीत और स्वरबद्ध किये संगीत को बॉक्स ऑफिस पर सफलता

की गारंटी माना जाता था। कई बेहतरीन फ़िल्में हैं जिनके गीत आज भी सदाबहार हैं और सुने जाते हैं। सन 2000 के आगमन के बाद भारतीय गीत–संगीत परिपेक्ष्य को देखा जाये तो थोड़ा बदलाव हुआ है, अब शोर और तेजी से बजने वाले गाने भी चलते हैं। लेकिन कर्णप्रिय और प्रेम प्रसंगयुक्त गानों में कोई परिवर्तन नहीं आया है, भजन हो या ग़ज़ल वे भी पहले के तरह ही पसंद आ रहे हैं। आज वर्तमान संगीत में समाज का हर वर्ग रूचि ले रहा है, पसंद कर रहा है। आज भारतीय गीत–संगीत की मधुरता पूरी दुनिया में चर्चित है। विश्व में जहाँ हर तरह की गीत, संगीत चाहे वेस्ट्रन, अरबी या अन्य लेकिन इन सब के बीच जो आयाम, लोकप्रियता भारतीय गीत–संगीत को मिली वह अद्वितीय है। आदिकाल से अब तक गीत–संगीत हमारी परम्परा, संस्कार, रिवाज़ के उत्थान और तरक्की के गवाह रहे हैं। गीत–संगीत इंसान के लिए प्रकृति का एक अनूठा वरदान है, यह एक अद्भुत उपहार है जो सिर्फ गिने–चुने लोगों को ही मिलता है। गीत–संगीत दुर्लभ कला है।

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया दिल्ली अंचल द्वारा संयुक्त रूप से दिनांक 07 मार्च, 2024 को 'एम्पावर हर' मुहिम के अंतर्गत 'महिला विशेष कार्यशाला का आयोजन कमानी ऑडिटोरियम, नई दिल्ली में किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती देबाश्री मुखर्जी, सचिव, जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 'नारी सशक्तिकरण' पर सत्र लिया गया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत यूनियन बैंक ऑफ इंडिया क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 04 नवम्बर, 2023 को 'संत निरंकारी उच्च माध्यमिक स्कूल' में हिन्दी निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में छठी से दसवीं कक्षा के कुल 80 छात्रों ने भाग लिया।

श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक, गृह मंत्रालय भारत सरकार द्वारा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली का दिनांक 02.04.2024 को राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया गया।

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया दिल्ली अंचल द्वारा संयुक्त रूप से महिला दिवस के अवसर पर 'पिंकाथॉन वॉक' का आयोजन जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में दिनांक 04 मार्च, 2024 को किया गया।

विज़न इंडिया 2047

सुश्री सबिता पात्र
वरिष्ठ प्रबंधक
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया,
आंचलिक कार्यालय दिल्ली

हमारा देश भारत अब विकासशील देश कि श्रेणी से आगे विकसित देश बनने की राह में अग्रसर है। इसी श्रृंखला में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आजादी के 100 साल पूरे होने तक देश को 30 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था वाले एक विकसित राष्ट्र में बदलने से जुड़े एक रोडमैप का अनावरण किया।

सन् 2047 (आजादी के 100 साल पूरे होने तक) को भारत एक विश्व शक्ति बन चुका होगा, एक देश जिसका आधार अपनी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत पर होगा। विज़न इंडिया 2047 का अर्थ है कि हम एक ऐसे भारत की कल्पना करें जो अपने अगले सपनों को पूरा करने के लिए तैयार है। पहले दशक में विज्ञान, तकनीक, और अर्थव्यवस्था में वृद्धि करने के बावजूद, भारत अपनी विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बढ़ाता रहा है। वहां तकनीकी उन्नति, जल संसाधन, ऊर्जा संक्रियान और स्वास्थ्य क्षेत्र में अद्भुत प्रगति देखने को मिल रही है।

हमारा लक्ष्य है कि 2047 तक भारत अपने विज्ञान, शिक्षा, स्वास्थ्य, और आर्थिक क्षेत्रों में विश्व स्तर पर उत्कृष्टता प्राप्त करें। भारतीय युवा जो विश्व के नवाचारों में अग्रणी बने रहेंगे, उन्हें इस देश के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। इस सपने को पूरा करने के लिए हमें अपने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और दार्शनिक विरासत को महत्व देना होगा। हमें एक भारत बनाना है जो गरीबी, भेदभाव, और असमानता के खिलाफ लड़ेगा।

'विकसित भारत /2047'

'अमृत काल' का लक्ष्य एक ऐसे भारत का निर्माण करना है जहां सुविधाओं का स्तर गांव और शहर को बांट न रहा हो; जहां सरकार नागरिकों के जीवन में अनावश्यक हस्तक्षेप न करे; जहां दुनिया का हर आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर मौजूद हो। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उन्होंने नारा दिया, "सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास।"

भारत देश ने आजादी का अमृत महोत्सव मनाया और अमृत काल के पंच प्राण को साझा किया: विकसित भारत का लक्ष्य, औपनिवेशिक मानसिकता के किसी भी निशान को हटाना, अपनी जड़ों, एकता पर गर्व करना, नागरिकों में कर्तव्य की भावना जागृत करना हैं।

रोडमैप:

प्रधान मंत्री के दृष्टिकोण पर प्रकाश डालते हुए, केंद्रीय वित्त मंत्री ने अपने केंद्रीय बजट वित्त वर्ष 2022–2023 के भाषण में साझा किया कि अमृत काल (75 पर भारत से 100 पर भारत) के दौरान, सरकार का लक्ष्य है बृहद–आर्थिक स्तर के विकास फोकस को सूक्ष्म–आर्थिक स्तर के सर्व–समावेशी कल्याण फोकस के साथ लागू करे।

डिजिटल अर्थव्यवस्था और फिनटेक, प्रौद्योगिकी–सक्षम विकास, ऊर्जा परिवर्तन और जलवायु कार्रवाई को बढ़ावा देना। सार्वजनिक पूंजी निवेश के साथ निजी निवेश से शुरू होने वाले पुण्य चक्र पर भरोसा करें जो निजी निवेश को बढ़ावा देने में मदद करता है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि सबका साथ, सबका प्रयास के माध्यम से जन भागीदारी आवश्यक है और सप्तर्षि सिद्धांतों को रेखांकित किया गया। समावेशी विकास; अंतिम मील तक पहुंचना; बुनियादी ढाँचा और निवेश; क्षमता को उजागर करना; हरित विकास; युवाशक्ति; वित्तीय क्षेत्र।

उपर्युक्त भविष्यवादी और समावेशी दृष्टिकोण के अनुरूप, सरकार ने महिलाओं के विकास, स्वास्थ्य, शिक्षा, कौशल विकास, विज्ञान और प्रौद्योगिकी उन्नति, बुनियादी ढांचे के निर्माण, रोजगार, कृषि, बढ़ते विनिर्माण, औद्योगिक उत्पादन पर ध्यान केंद्रित करने जैसे कई कदम उठाए हैं।

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को ध्यान में रखते हुए पंचामृत नीति के अनुसार हरित विकास पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। सरकार 2030 तक अपनी गैर–जीवाश्म ऊर्जा क्षमता को 500 गीगावॉट तक बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है; 2030 तक अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं का 50% नवीकरणीय ऊर्जा से पूरा करना; 2030 तक कुल अनुमानित कार्बन उत्सर्जन में एक अरब टन की कमी लाना; अपनी अर्थव्यवस्था की कार्बन तीव्रता को 45% से कम करना; 2070 तक नेट ज़ीरो के लक्ष्य को प्राप्त करना। सरकार पहले से ही हरित ईंधन, हरित ऊर्जा, हरित खेती, हरित गतिशीलता, हरित भवन और हरित उपकरण के लिए विभिन्न कार्यक्रमों और विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों में ऊर्जा के कुशल उपयोग के लिए नीतियों को लागू कर रही है। इसी तरह, सरकार ब्लॉकचेन, एआई, आईओटी आदि जैसी महत्वपूर्ण और उभरती प्रौद्योगिकियों पर भी ध्यान केंद्रित कर रही है।

इसके कार्य बिंदुओं और परिणाम लक्ष्यों को दो अवधियों – 2030, और तब से लेकर 2047 तक की 17 वर्ष की अवधि – में विभाजित करता है। इससे यह सुनिश्चित करना है कि भारत अब से कुछ सालों के बाद मध्यम आय के जाल में न फंस जाए। अर्थव्यवस्था में खेतों से लेकर कारखानों तक में लंबे अरसे से चल रहे संरचनात्मक बदलाव को तेज करने और आय में असमानता के व्यापक रूझान को रोकने की जरुरत है। अब जबकि पंचवर्षीय योजनाओं को तिलांजलि दे दी गई है, उभरते वैश्विक रुझानों और भारी नुकसान पहुंचाने वाली अप्रत्याशित संकटों (ब्लैक स्वान) के मद्देनजर लक्ष्यों को नए सिरे से व्यवस्थित करने के लिए 2047 की योजना की मुनासिब अंतराल पर फिर से समीक्षा करने का प्रावधान किया जाना चाहिए। वर्ष 2030 से लेकर 2047 के बीच 9 फीसदी की ऊंची विकास दर का लक्ष्य काबिले तारीफ है, लेकिन वैकल्पिक परिदृश्यों पर ध्यान देना और जरुरत पड़ने पर रास्ता बदलना भी उचित रहेगा।

विज़न इंडिया 2047 का उद्देश्यः

1. 18–20 हज़ार अमेरिकी डॉलर की प्रति व्यक्ति आय और मज़बूत सार्वजनिक वित्त एवं एक सुदृढ़ वित्तीय क्षेत्र के साथ 30 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था प्राप्त करना।
2. ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में विश्वस्तरीय आधारभूत संरचना और सुविधाओं का निर्माण करना।
3. नागरिकों के जीवन में सरकार के अनावश्यक हस्तक्षेप को समाप्त करना और डिजिटल अर्थव्यवस्था एवं शासन को बढ़ावा देना।
4. रक्षा और अंतरिक्ष क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनना तथा विश्व में भारत की भूमिका की वृद्धि करना।
5. नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता में वृद्धि और कार्बन उत्सर्जन को कम करके हरित विकास एवं जलवायु कार्रवाई को बढ़ावा देना।
6. युवाओं को कौशल एवं शिक्षा के साथ सशक्त बनाना और रोज़गार के अधिक अवसर पैदा करना।
7. देश में शीर्ष स्तर की 10 प्रयोगशालाओं के निर्माण के लिये विदेशी अनुसंधान एवं विकास संगठनों के साथ साझेदारी करना और कम से कम 10 भारतीय संस्थानों को वैश्विक स्तर पर शीर्ष 100 की सूची में लाना।

भारतीय अर्थव्यवस्था की वर्तमान स्थिति और भविष्य की संभावनाएँः

वर्तमान स्थितिः भारत 2047 तक दुनिया की दो सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनने की राह पर है। आकलन किया गया है कि भारत वर्तमान में नॉमिनल टर्म्स (Nominal terms) में विश्व की पाँचवीं, जबकि क्रय शक्ति समता (Purchasing Power Parity & PPP) के संदर्भ में विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। वर्ष 2022 तक भारत के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का आकार ब्रिटेन और फ्राँस की जीडीपी से बड़ा हो चुका था।

सकल घरेलू उत्पाद (GDP) in + tn :

देश का नाम	वर्ष 2022	वर्ष 2023
अमेरिका	25.5	27.9
चीन	17.9	17.7
जपान	4.2	4.4
जर्मनी	4.1	4.2
भारत	3.4	3.7

भविष्य की संभावनाएँ:

विभिन्न आकलनों के अनुसार वर्ष 2030 तक भारत की जीडीपी जापान और जर्मनी को पीछे छोड़ देगी। रेटिंग एजेंसी 'S-P' का अनुमान है कि भारत की नॉमिनल जीडीपी वर्ष 2022 में 3.4 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर वर्ष 2030 तक 7.3 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर हो जाएगी।

आर्थिक विस्तार की इस तीव्र गति के परिणामस्वरूप भारतीय सकल घरेलू उत्पाद का आकार बढ़ेगा और भारत एशिया–प्रशांत क्षेत्र में दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। आयोग के पूर्वानुमान के प्रारंभिक परिणामों में भविष्यवाणी की गई है कि:

वर्ष 2047 में भारत के निर्यात का मूल्य 8.67 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर होगा जबकि इसके आयात का मूल्य 12.12 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर होगा। भारत की औसत जीवन प्रत्याशा 67.2 (वर्ष 2021 में) से बढ़कर 71.8 हो जाएगी और इसकी साक्षरता दर 77.8% (वर्ष 2021 में) से बढ़कर 89.8% हो जाएगी।

आज हम जो बीज बोएंगे वही भविष्य में मिलने वाले फल को परिभाषित करेंगे। 2047 के लिए परिकल्पित विकसित भारत के उपर्युक्त परिवर्तनकारी उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, देश को "सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास" पर ध्यान केंद्रित करना जारी रखना चाहिए।

विज़न इंडिया 2047 एक सपना नहीं है, बल्कि एक संकल्प है। एक संकल्प जो हमें एक समृद्ध, जागरूक और एकत्रित भारत की दिशा में ले जाएगा। इस प्रयास में हम सभी भारतीयों को मिलकर काम करना होगा ताकि हम अपने सपनों को अस्तित्व में बदल सकें और वह दिन दूर नहीं जब हम सभी इस सपने की गौरवशाली यात्रा का हिस्सा बनेंगे।

यूनाइटेड इंडिया इंश्यूरेन्स कंपनी लिमिटेड

स्वास्थ्य उत्पादों पर ऑनलाइन सम्मेलन का आयोजन

दिनांक 14 मई 2024 को द्वारा ऑनलाइन सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें विशेषरूप से फैमिली मेडिकेयर पॉलिसी पर विस्तार से जानकारी दी गई। इस सम्मेल का प्रमुख उद्देश्य जन साधारण को स्वास्थ्य बीमा के प्रति संवेदित करना और कंपनी के उत्पादों से अवगत कराना था।

सम्मेलन का उद्घाटन कंपनी के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक श्री बी. एस. राहुल के हाथों कराया गया। अपनेअध्यक्षीप संबोधन में अध्यक्ष महोदय ने आज के परिपेक्ष में स्वास्थ्य को लेकर उत्पन्न हो रही चुनौतियाँ, बीमा कंपनियों का इन चुनौतियों से निपटने में योगदान और कंपनी के उत्पादों की विशिष्टताओं पर अपने विचार व्यक्त किए। सम्मेलन का आयोजन महाप्रबंधक श्री प्रणय कुकार के संरक्षण और प्रोत्साहन में किया गया जबकि महाप्रबंधक श्री सी एम मनोहरन के मार्गदर्शन में उत्पादों पर प्रस्तुति दी गई।

दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 59वीं छमाही बैठक

दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 59वीं छमाही बैठक, मुख्य अतिथि श्री के. पी. शर्मा, उप निदेशक (का.) तथा श्री राजेश श्रीवास्तव, उप निदेशक (नीति), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की उपस्थिति एवं श्री समीर बाजपेयी, अध्यक्ष– दिल्ली बैंक नराकास मुख्य महाप्रबंधक (दिल्ली अंचल), पंजाब नैशनल बैंक की अध्यक्षता में दिनांक 22 दिसंबर, 2023 को पंजाब नैशनल बैंक के गुरुग्राम स्थित प्रधान कार्यालय के ऑडिटोरियम में सम्पन्न हुई।

बैठक में दिल्ली बैंक नराकास के 49 सदस्य कार्यालयों के स्थानीय कार्यालयाध्यक्षों की गौरवमयी उपस्थिति के साथ– साथ दिल्ली बैंक नराकास के राजभाषा प्रभारियों द्वारा भी सहभागिता की गई।

बैठक के आरंभ में श्रीमती मनीषा शर्मा, सदस्य– सचिव एवं सहायक महाप्रबंधक, पंजाब नैशनल बैंक ने गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के मुख्य अतिथियों, अध्यक्ष दिल्ली (बैंक) नराकास, गणमान्य अतिथियों एवं बैठक में उपस्थित समस्त अधिकारियों का स्वागत किया। उन्होंने उपस्थित सदस्य कार्यालयों के अध्यक्षों एवं उच्चाधिकारियों का राजभाषा के प्रति प्रतिबद्ध होने के लिए आभार व्यक्त करते हुए कहा कि राजभाषा के प्रचार–प्रसार के प्रति उनकी संवेदनशीलता के परिणामस्वरूप ही दिल्ली बैंक नराकास के तत्वाधान में इस वर्ष कुल 25 हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन संभव हो पाया है जिनमें कुल 137 प्रतिभागियों ने पुरस्कार प्राप्त किए हैं। राजभाषा शील्ड योजनाओं में विभिन्न श्रेणियों में 26 शील्ड प्रदान की। उन्होंने राजभाषा सरिता का प्रवाह ऊपर से नीचे की ओर बनाए रखने का आग्रह किया। उन्होंने मुख्य अतिथि, श्री के. पी. शर्मा, उप निदेशक (का.) तथा उप निदेशक (नीति), श्री राजेश श्रीवास्तव का दिल्ली बैंक नराकास की ओर से आभार व्यक्त करते हुए, भविष्य में भी उनके सहयोग और मार्गदर्शन की अपेक्षा व्यक्त की।

मुख्य अतिथि, श्री के. पी. शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, भारत सरकार, गृह मंत्रालय ने अपने सम्बोधन में कहा कि हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए 'सबका साथ, सबका विश्वास और सबका प्रयास' ही मूलमंत्र है। उन्होंने राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए सबका साथ होने का आह्वान किया। उन्होने बताया कि सबका साथ तभी संभव हो सकता है

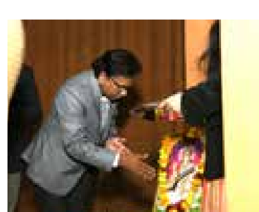

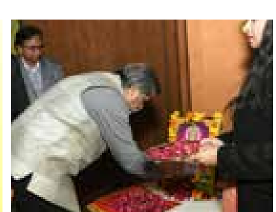

जब सबको विश्वास हो कि कार्यालय का समस्त कार्य हिंदी में किया जा सकता है और फिर समस्त कार्य को हिंदी में करने के लिए सभी का प्रयास होना आवश्यक है। श्री कुमार पाल शर्मा ने दिल्ली बैंक नराकास को देश की सर्वश्रेष्ठ नराकासों में बताया

व इसके कार्यों की सराहना की। उन्होंने सभी उपस्थितजनों से आह्वान किया कि सभी हिंदी में काम करें, सभी काम हिंदी में करें।

श्री समीर बाजपेयी ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में मुख्य अतिथियों तथा सभी उपस्थितों का अभिनन्दन करते हुए नए जुड़े सदस्य कार्यालय, इंडिया पोस्ट पेमेंट बैंक का भी दिल्ली बैंक नराकास परिवार में स्वागत किया। उन्होंने सभी कार्यालय अध्यक्षों से हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने का आह्वान करते हुए बताया कि देश के प्रधानमंत्री देश–विदेश सभी जगहों पर हिंदी का प्रयोग करते हैं और यह हम सभी के लिए गर्व की बात है। अपनी भाषा के प्रयोग में सदैव गर्व की अनुभूति होनी चाहिए। अध्यक्ष महोदय ने मुख्य अतिथियों को अवगत कराया कि दिल्ली बैंक नराकास की गतिविधियां वर्ष भर निर्बाध रूप से चलती रहती हैं, न केवल छमाही बैठकों का समयबद्ध आयोजन किया जाता है, अपितु दिल्ली बैंक नराकास की छमाही पत्रिका "बैंक भारती" का भी ससमय प्रकाशन सुनिश्चित किया जाता है और नराकास द्वारा वर्ष पर्यन्त संगोष्ठियां, सेमीनार, कार्यशालाएं और प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि हम सब मिलकर न केवल राजभाषा कार्यान्वयन के सभी लक्ष्य प्राप्त करेंगे अपितु उत्कृष्टता के नए आयाम स्थापित करेंगे।

मुख्य अतिथि, श्री राजेश श्रीवास्तव, उप निदेशक (नीति), राजभाषा विभाग, भारत सरकार, गृह मंत्रालय ने "तकनीकी अनुवाद– समस्याएं एवं समाधान" विषय पर व्याख्यान देते हुए अनुवाद की अपेक्षाएं और बारीकियों से अवगत कराया। उन्होंने अंग्रेजी में प्रयोग किए जाने वाले मुहावरों और लोकोक्तियों का शाब्दिक अनुवाद करने से बचने का परामर्श देते हुए उदाहरण सहित बताया कि कैसे इस प्रकार के वाक्यों का भावानुवाद किया जाना चाहिए। अनुवादक को इस बात का ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि विषयगत सन्दर्भ में किस शब्द या वाक्य का उपयोग उपयुक्त रहेगा भले ही वो शाब्दिक अनुवाद से पूर्णतः भिन्न हो।

इस अवसर पर मंचासीन अधिकारियों ने दिल्ली बैंक नराकास की गृह पत्रिका बैंक भारती के 30वें अंक का तथा पंजाब नैशनल बैंक, अंचल कार्यालय, दिल्ली द्वारा प्रकाशित छमाही पत्रिका दीपस्तम्भ का विमोचन किया।

तदोपरांत मंचासीन सभी विशिष्टजनों द्वारा दिल्ली बैंक नराकास की राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता के विजेता बैंक, वित्तीय संस्थान और बीमा कंपनी कार्यालयों तथा सदस्य कार्यालयों की गृह पत्रिकाओं और ई–पत्रिकाओं के विजेताओं को शील्ड और प्रमाण पत्र प्रदान किए। इस कार्यक्रम में विभिन्न श्रेणियों में 26 राजभाषा शील्ड तथा प्रमाण–पत्र वितरित किए गए।

तत्पश्चात सदस्य सचिव, दिल्ली बैंक नराकास ने मंचासीन गृह मंत्रालय के अधिकारियों की उपस्थिति में बैठक की कार्रवाई आगे बढ़ाते हुए सदस्य कार्यालयों की छमाही प्रगति रिपोर्ट के आधार पर बैठक की कार्यसूची में दिए गए विषयों पर मदवार चर्चा की।

दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा सदस्य कार्यालयों के लिए लागू राजभाषा शील्ड योजना के अंतर्गत प्रतिवर्ष उनकी छमाही रिपोर्टों

के मूल्यांकन के आधार पर पुरस्कार दिए जाते हैं। इस मद में राजभाषा शील्ड एवं प्रमाण–पत्र प्रदान करने हेतु सदस्य कार्यालयों को बैंक, वित्तीय संस्थान तथा बीमा कम्पनियां शीर्षान्तार्गत 3 वर्गों बांटा गया है। सदस्य कार्यालयों द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं, ई– पत्रिकाओं को भी गृह पत्रिका एवं

ई–पत्रिका वर्ग के अंतर्गत पुरस्कृत किया जाता है।

वर्ष 2023 में राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता के अंतर्गत विभिन्न श्रेणियों में कुल 18 एवं पत्रिकाओं के लिए 8 पुरस्कार प्रदान किए गए।

कार्यक्रम की समाप्ति मुख्य प्रबंधक, बैंक आफ इंडिया के श्री सरताज मोहम्मद शकील के धन्यवाद ज्ञापन से हुई।

भारतीय रिज़र्व बैंक

विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर भारतीय रिज़र्व बैंक, नई दिल्ली कार्यालय द्वारा 10 जनवरी 2024 को 'हिन्दी में नया सृजन : प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक तथा सोशल मीडिया के आईने में' विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान देने के लिए अतिथि वक्ता के रूप में हिंदी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार और भाषाविद् डॉ. पूरनचंद टंडन, वरिष्ठ प्रोफेसर (सेवानिवृत्त), हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय को आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम की अध्यक्षता क्षेत्रीय निदेशक, श्री रोहित पी. दास द्वारा की गई।

अतिथि वक्ता डॉ. पूरनचंद टंडन का स्वागत करते हुए क्षेत्रीय निदेशक महोदय, श्री रोहित पी. दास

अतिथि वक्ता डॉ. पूरनचंद टंडन का स्वागत करते हुए भारतीय रिज़र्व बैंक लोकपाल महोदय श्री आर. के. मूलचंदानी

भारतीय रिजर्व बैंक, दिल्ली के परिसर में सप्ताह में दो दिन पारंगत पाठ्यक्रम (जनवरी–मई, 2024 सत्र) की कक्षाओं के आयोजन कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते हुए श्री राजकुमार वाल्मिकी, सहायक निदेशक (भाषा), हिन्दी शिक्षण योजना, भारत सरकार।

सोने के लिए अलार्म

शिल्पा बंसल
सहायक प्रबंधक
इंडियन ओवरसीज बैंक
पीतमपुरा शाखा

"उफ्फ... अलार्म बज गया। इतनी जल्दी अलार्म क्यों बज जाता है। ... बस सुबह के लिए राजमा और भिगो दूं, फिर सोती हूं। आज तो डिनर बनाते हुए नींद आ रही थी..." मैं बोली।

उधर तपाक से मेरे पति अमित का जवाब आया – "यह कौन सी नई बात है, रोज का ही तो है। लोग उठने के लिए अलार्म लगाते हैं, हम रात को सोने के लिए भी।"

"हां तो अब क्या करें? 12:00 बजे तक तो कम से कम सो जाएं। इसीलिए रात को 12:00 बजे से 10 मिनट पहले का अलार्म लगा कर रखते हैं। ताकि कम से कम 5–6 घंटे की नींद तो मिले। पर यहां है कि काम ही खत्म होने को नहीं आता। वह तो शुक्र है कमला (कामवाली) सुबह कम से कम रसोई का सारा काम संभाल लेती है।" मैं अमित से बोली।

मैं और अमित एक ही सरकारी बैंक में अधिकारी पद पर कार्यरत हैं। अमित की बैंक शाखा घर से लगभग डेढ़ घंटा दूर है। यह सोचकर कि हम में से कोई एक जल्दी घर पहुंच जाए, हमने मेरी शाखा से तीन–चार किलोमीटर की दूरी पर एक घर किराए पर ले लिया।

कमला सुबह नाश्ता व टिफिन तैयार करती है। फिर अमित नाश्ता करके जल्दी निकल जाते हैं। उसके बाद थोड़ा बहुत सफाई व बर्तन का काम कराके, तैयार होकर मैं भी बैंक चली जाती हूं। कितनी बार कमला को कहा कि रात को भी खाना बना जाया कर। बैंक से वापस आकर खाना बना बनाया मिल जाए तो खुद के लिए भी थोड़ा सा वक्त मिल जाए। लगभग रोजाना ही घर पहुँचते पहुँचते मुझे 8:00 बजे से ऊपर हो जाते हैं और 8:00 बजे के बाद कमला नहीं आ सकती। उसे अपना घर भी देखना है, उसके भी छोटे–छोटे बच्चे हैं।

कहने को तो सरकारी बैंकों का समय 5:00 बजे तक है। पर वास्तविकता यह है कि 5:00 बजे के बाद अधिकारी पद के लिए दूसरी शिफ्ट शुरू हो जाती है। शाखा से निकलते–निकलते 8:00 तो बज ही जाते हैं। घर आकर खाना बनाओ, घर संगवाओ, कपड़े इस्तरी करो, सुबह की तैयारी करो, इन्हीं कामों में 12:00 कब बज जाते हैं, पता ही नहीं चलता। कुछ काम तो मैंने खुद ही बढ़ा रखे हैं। कपड़ों पर इस्तरी मुझे बाहर की पसंद ही नहीं आती। अपने लिए तो जैसे वक्त ही नहीं है। शरीर मानो मशीन सा हो गया है। अमित तो वैसे ही 10:00 बजे से पहले घर नहीं घुसते। कभी–कभी लगता है कि वक्त को थाम लें और हम दोनों घड़ी पकड़ के बैठ जाएं कि रात के 12:00 तब बजे, जब हमारे सारे काम हो जाए और सुबह भी तब हो जब अच्छे से नींद पूरी हो जाए और थकान दूर हो जाए।

पर रोज दिमाग और शरीर दोनों ही थके हुए होते हैं। बस वक्त को थामने की नाकाम कोशिश करते हैं। लेकिन आज की जिंदगी में पैसा भी बहुत जरूरी है। बिना पैसे के गुजारा कहां है। सोचती हूं अभी तो हम एक दूसरे के लिए ही समय नहीं निकल पा रहे। कल जब बच्चे होंगे तब क्या होगा। यह भी सोचती हूं कि कोई बात नहीं नौकरी छोड़ दूंगी, पर छोड़ने के लिए तो नौकरी नहीं की थी। और आजकल एक की कमाई से घर भी तो नहीं चलता। वाकई में आजकल ज्यादातर लोग पैसे के पीछे भाग रहे हैं। मैं भी। शरीर चाहे कितना ही थका हुआ हो, भागदौड़ भरी जिंदगी व व्यस्तता के कारण चाहे कितनी ही बीमारियां क्यों न लग रही हों, पर हम लोग कम कमाई में सामान्य जिंदगी जीने को तैयार नहीं है और फिर शिकायत भी करते हैं। हमें भी अच्छे से अच्छा घर और अच्छी से अच्छी गाड़ी चाहिए। इसके लिए तो शायद यह सब झेलना ही पड़ेगा।

इस भागती दौड़ती जिंदगी में हर क्षेत्र में यही हाल है। प्रमोशन और अधिक से अधिक कमाई के चक्कर में हम सभी ने अपने मन की शांति, अपने स्वास्थ्य, परिवार के साथ वक्त,

इन सभी को दांव पर लगा रखा है।

हम सभी पूरे हफ्ते जी तोड़ मेहनत करते हैं, ताकि हफ्ते के अंत के एक या दो दिन हम चैन से जी सके। वक्त तो हाथ से फिसलता जा रहा है, चाहे हमारे काम पूरे हों या ना हों, घड़ी तो अपनी रफ्तार से चलेगी। हां एक दिन ऐसा जरूर आएगा, जब हमारे पास शायद बहुत पैसे होंगे, हमारे पास बात करने के लिए वक्त भी होगा, पर शायद जिंदगी को जीने के लिए उत्साह और उतनी उम्र नहीं बचेगी। उम्र और वक्त निकल जाएगा बाकी सब कुछ हमारे पीछे ही छूट जाएगा। चाहे फिर वो बड़ा मकान हो, बैंक में अच्छा खासा बैलेंस हो या लॉकर में रखा सोना। और शायद तब हम पछताएंगे कि जो अच्छा वक्त हम अपने परिवार के साथ बिता सकते थे वह हम बिता नहीं पाए। जो असल में जिंदगी जी सकते थे वह जी नहीं पाए।

काम करना बहुत जरूरी है, पर काम करने के कुछ निश्चित घंटे होने चाहिए ताकि हर इंसान को अपने परिवार के लिए वक्त मिल सके और सबसे ज्यादा जरूरी है, अपने खुद के लिए वक्त मिल सके क्योंकि मेरे लिए मैं भी बहुत जरूरी हूं।

पहचानो मैं हिंदी हूँ

हिंदी सम्मान सम्मेलन में भाषाओं की चकाचौंध थी,
वहीं एक माता बैठी अकेली थी,
पूछा किसी ने कि अपनी पहचान तो बतलाओ,
इस चकाचौंध में गरीब के आने का कारण हमें समझाओ।
माता बोली,
मैं देश का गौरव हूँ,
सरस्वती का प्रतीक हूँ
लक्ष्मी का स्वरूप हूँ,
इस देश का श्रृंगार हूँ
मैं ही बसंत बहार हूँ
मैं भारत माता के माथे पर सजी बिंदी हूँ
मुझे पहचानो में हिंदी हूँ।
संस्कृत की गोद से जन्मी,
मैं संस्कृति हूँ।
मैं रामायण का त्याग, गीता का सार हूँ,
मैं ऋषियों का यज्ञ,
ईश्वर की वाणी और देवों की संधि हूँ
मुझे पहचानो मैं हिंदी हूँ।
मैं गंगा का जल, ब्रह्मपुत्र का बल,
मैं नर्मदा की तीव्रता और गोदावरी का वेग हूँ,
मैं ही यमुना से निकली कालिंदी हूँ
मुझे पहचानो में हिंदी हूँ।
मैं कबीर की वाणी, रहीम के दोहे,
महावीर की रचना हूँ,
मैं ही मैथली की शैली और
मुंशी के उपन्यास की नंदी हूँ मुझे पहचानो मैं हिंदी हूँ।
मैं उर्दू हूँ और देव नगरी भी मैं,
हर भाषा से प्रभावित हूँ
कई भाषाओं में प्रवाहित हूँ
हर भाषा का सम्मान करती हूँ
हर भाषा से प्यार करती हूँ
मैं नही किसी की प्रतिद्वंदी हूँ,
मुझे पहचानो में हिंदी हूँ।
ये सच है कि मैं बहुत परेशान हूँ
क्योंकि अपने ही देश में अनजान हूँ
सिर्फ कागजों में ही राजभाषा का सम्मान हूँ
मैं बाहरी भाषाओं के उपहास की बेड़ियों में जकड़ी बंदी हूँ
मुझे पहचानो मैं हिंदी हूँ।
यह सम्मेलन है जिसके सम्मान में वही निर्बल हिंदी हूँ
क्या बताऊँ अपनों की सताई
अपनों से ठुकराई हूँ
मैं भारत माता की फीकी पड़ती बिंदी हूँ
मुझे पहचानो में हिंदी हूँ।
मैं ही हिंदी हूँ।

सिद्धार्थ गुप्ता
प्रबंधक
इंडियन ओवरसीज बैंक
क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली

गांव चले ...

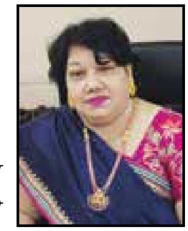

श्रीमती शर्मिला कटारिया
मुख्य प्रबंधक,
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली

सुन रही हो.... पिताजी का फोन आया है मां की तबीयत बहुत खराब है। तुम्हें चलना है या फिर छुट्टी ना मिलने का बहाना करना है। कब से कह रहा था चलो गांव हो आते है , मां की तबीयत ठीक नहीं है मिल आते हैं। लेकिन तुम्हें तो गांव के नाम से ही कुछ हो जाता है। हर बार कुछ न कुछ करके टाल देती हो। अब देखो, आखिरी बार भी मिल पाते हैं या नहीं.... कहकर रमेश फूट फूटकर रोने लगा। अंदर से मुझे भी बहुत डर लग रहा था क्योंकि मां दिल की मरीज थी। लेकिन खुद को संभालते हुए तुरंत रमेश को हिम्मत दी। सब ठीक हो जाएगा हम तुरंत चलते हैं।

ट्रेन में बैठते ही रमेश बेचैन होने लगा, अब ये ट्रेन भी पता नहीं इतनी रूक – रूककर क्यों चल रही है, उसने झल्लाते हुए कहा। उसकी मनोदशा समझ आ रही थी वह तुरंत पहुँचना चाह रहा था। लेकिन ट्रेन तो अपना समय लेगी। वहीं मैं खिड़की की ओर निहार रही थी। मन बहुत अशांत था। मन ही मन खुद को रमेश का गुनहागार मान रही थी। जब भी वो गांव चलने को कहते थे तो मैं कोई ना कोई बहाना बनाकर टाल देती थी। ये घर–घर की कहानी है। हम सोचते हैं गांव जाकर क्या करना है, ना ए.सी है ना बिजली ढंग से आती है। इतनी गर्मी में हम कैसे रहेंगे वहां। मां बाप का राह देखना हमें समझ नहीं आता। साल–भर वे इंतज़ार करते हैं कि गर्मी की छुट्टियों में हम आएंगे लेकिन हमें गांव की बजाय कुल्लू मनाली या शिमला घूमना ज्यादा भाता है। बच्चे तो गांव जाने के नाम से ही कूदने लगते थे लेकिन कहीं ना कहीं मैंने ही उन्हें दादा–दादी के प्यार से वंचित रखा। मन में पछतावा हो रहा था कि क्यों मैं पिछले तीन सालों से गांव नहीं गई। हर साल मिलते रहते तो मां की तबीयत इतनी खराब ना होती। किसी अच्छे डॉक्टर को दिखा देते। मां बाप तो अपनी तबीयत के बारे में कभी सच बताते ही नहीं है तकलीफ में होते हैं फिर भी कहते रहते हैं हम यहां ठीक हैं। लेकिन अब इस पछतावे से बीता हुआ समय तो लौटने वाला नहीं था। मन ही मन खैरियत की दुआ मांग मैंने गहरी सांस ली।

कुछ घंटे बाद हम गांव पहुँचे और तुरंत अस्पताल की ओर दौड़े, पिताजी अकेले परेशान से खड़े थे। मां बिस्तर पर ड्रिप और अन्य उपकरणों से घिरी हुई थी। प्रणाम करते हुए इन्होंने पूछा की मां की तबीयत अब कैसी है? डॉक्टर ने कहा है होश आएगा तभी कुछ बता पाएंगे। पिताजी ने रूंधे गले से जवाब दिया। मां को देखकर ये बरबस ही रो दिए और मैं आत्मग्लानि से। बेहोशी में भी उनके चेहरे पर धीमी सी मुस्कान थी मानों हम सबके आने से आनंदित हो रही हों। ये उनका हाथ सहलाते हुए माफी मांग रहे थे कि मैं आपसे मिलने नहीं आ पाया और साथ ही नाराज भी हो रहे थे कि तबीयत खराब है यह बताया क्यों नहीं। मैने भी पैर छुए और माफी मांगी। लेकिन अभी आने का और माफी मांगने का क्या फायदा? मेरा मन मुझे ही उलाहना दे रहा था। पहले आती तो मां कितनी खुश होती, बच्चों के लाड–लडाती, कितनी आवभगत करती। मुझे सहसा याद आया कि पिछली बार आई तो मां कितनी खुश हुई थी। ढ़ेरों पकवान बनाए थे पूरे घर में खुशी का माहौल था। आस पड़ोस वाली ताई चाची ने ढ़ेरों आशीर्वाद दिए थे। लेकिन आज...... अचानक ध्यान टूटा। ये डॉक्टर साहब, डॉक्टर साहब चिल्ला रहे थे। सहसा मन अनहोनी की आशंका से घबरा गया। लेकिन तभी डॉक्टर आया पूछा क्या हुआ। मां ने अभी–अभी हाथ हिलाया है। डॉक्टर ने तुरन्त हमें बाहर भेजकर जांच पड़ताल शुरू की।

अस्पताल के बेंच पर निढाल से बैठे पिताजी और दीवार का सहारा लेकर उदास से खड़े रमेश को देखकर मुझे और ज्यादा खराब लग रहा था। खुद को इनकी इस हालत का जिम्मेदार मान रही थी। लेकिन अब पछताने से क्या होने वाला था। लेकिन मेरे आंसूओं ने सब कह दिया। पिताजी ने समझाया सब ठीक हो जाएगा तुम घर जाकर थोड़ा आराम

कर लो। सफर में थक गई होगी। लेकिन पिताजी कैसे समझते कि ये सफर की थकावट नहीं ग्लानि का बोझ था। मैं भी बैठकर भगवान से दुआ मांगने लगी। तभी कुछ समय बाद डॉक्टर ने बताया की मां को होश आ गया है। खतरा अभी टला नहीं है लेकिन मरीज की हालत में सुधार हो रहा है। भगवान का लाख–लाख शुक्रिया अदा करके मैंने आँसू पोंछे। पिताजी के चेहरे पर भी थोड़ी सी चिंता कम हुई। मैं जाकर पिताजी और रमेश के लिए चाय लेकर आई। बेंच पर बैठे–बैठे कब रात गुजर गई पता ही नहीं चला । सुबह डॉक्टर ने खबर दी कि मरीज अभी खतरे से बाहर है। हम सब ने राहत की सांस ली। दो तीन दिन में मां को अस्पताल से छुट्टी मिल गई और ठीक होकर घर आ गई। हम सबको देखकर बहुत खुश हुई और ढ़ेरों आशीर्वाद दिए। मैंने पुनः माफी मांगी और वचन दिया कि अब से हर साल और हर त्यौहार हम गांव आया करेंगे। रमेश ने मंद–मंद मुस्कुराकर मेरी ओर देखा। उसकी मुस्कान देखकर मुझे अहसास हुआ कि थोड़े से शारीरिक कष्ट के चलते मैं कितना बड़ा गुनाह कर रही थी। अपनी ओर से मैं आप सभी पाठकों से भी अनुरोध करना चाहूँगी कि अपने मां–बाप, परिवार और गांव से हमेशा जुड़े रहें। यही हमारी वास्तविक धरोहर है। फिर कभी रमेश को मुझसे यह पूछने की आवश्यकता नहीं पड़ती कि गांव चलें ....

कलम

मासूम आंखों में पलते सपने,
जिंदगी की जद्दोजहद से कहीं बड़े हैं।
खुले आसमां के नीचे जो कट रही है जिंदगी,
उसके अहसास चार दीवारी से कहीं गहरे हैं।
माना बेबसी और लाचारी करती है मजबूर,
पर संघर्षो से जूझते इरादे कहीं ऊंचे हैं।
न रूकना है न थकना है मुझे,
मेरे अरमानों में रंग कहीं पक्के हैं।
पीड़ा सह कर भी बढ़ते जाना है,
मेरे हौंसलों ने भी कहीं ये वादे किए हैं।
कुछ कर दिखाऊंगी एक दिन मंजिल पाऊंगी मैं,
मेरे जहां में विश्वास के बादल कहीं घने हैं।
थामी जो कलम मशाल बन गई,
अंधेरों को हरने वाले उजाले कहीं सुनहरे हैं।

सुश्री नम्रता सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
यूको बैंक, अंचल कार्यालय
नई दिल्ली

जीवन पुकारता है

जीवित, ज्योति भांति लहराता है
नब से आगे पहुंचा जाता है
हो जहाँ तक कवि की पुकार
यह उसके भी पार जाता है
सब हाँ जी ना जी यह भी वह भी
कुछ क्षणिक प्रेम, कुछ क्षणिक द्वेष भी
कुछ हंसना, रोना कुछ पाना खोना
सब समेट स्वयं में, स्वयं को बनता है
पदचाप इसकी प्रबल सार्थक है,
परन्तु कोई कोई ही सुन पाता है
तनिक सुनो मन लगा के.... जीवन पुकारता है।

विक्रांत भट्ट
सहायक प्रबंधक
नैशनल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड,
क्षेत्रीय कार्यालय–III

रिश्ते और पौधे एक समान...

अचला सावलानी
भारतीय जीवन बीमा निगम
उत्तर क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली

ड्राइंग रूम में बैठे नलिन की आंखें भले ही अखबार में गड़ी थीं किंतु कान रसोई से आती हुई बर्तनों की आवाज से सहज ही अपनी पत्नी लता की मनः स्थिति का अनुमान लगा पा रहे थे। ऐसा नहीं था कि नलिन समझ नहीं रहा था कि लता की नाराजगी के पीछे का कारण क्या था। कदाचित कुछ हद तक वह उससे सहमत भी था।

तीन माह पूर्व जब नलिन की बहन नूतन ने अपनी पुत्री दिव्या की सगाई की सूचना दी थी तो पूरे परिवार में हर्ष की लहर दौड़ गई। खाना खाने के पश्चात कमरे में जाते ही लता ने नलिन को अपने हिसाब–किताब का खाका दिखा दिया।

''भांजी की शादी है, मां–बाबूजी तो अब रहे नहीं, ननिहाल से शगुन का सामान भी तो भेजना होगा।''

''अरे तुम तो अभी से गणित लगाने लगी ? शादी की तारीख तो पक्की होने देती, सब हो जाएगा।

लता का मन कहां मानने वाला था।

''तारीख भी अगले हफ्ते तक आ ही जाएगी। तीन–चार महीने में ही करना होगा सब।''

बात खत्म करने की गरज से नलिन ने कहा,'' तब की तब देखेंगे, अभी तो सोने दो।''

उस समय तो बात टल गई। अगले दिन से सभी अपनी दिनचर्या में व्यस्त हो गए परंतु नलिन के दिमाग में विवाह के खर्चों की सूची चलने लग गई थी। मां बाबूजी की ओर से ननिहाल का शगुन थाल, मामा–मामी की ओर से शगुन, आने जाने का खर्च, विवाह की तैयारी में हाथ खोलकर न भी खर्च करें तो भी घर की शादी में बच्चों के कपड़े आदि का व्यय कुल मिलाकर डेढ़ लाख से ऊपर ही बैठ रहा था।

एक ही आमदनी में मकान की किस्त, दो बच्चों की उच्च–शिक्षा का व्यय जब वेतन से जा रहा हो तो बचत की हालत का अनुमान लगाना कठिन नहीं होता।

रात के खाने के बाद नलिन ने ही लता से बात आरंभ की।

अपनी आमदनी और सामाजिक जिम्मेदारियां को ध्यान में रखकर सब कुछ यथासंभव कम से कम में समेटने की कोशिश में लता ने सुझाव दिया, ''मैं अपने गहनों से पेंडेंट सेट दे दूंगी। आजकल सोना पहन कर जाना ही कहां होता है, डर भी लगता है।

बच्चों को कपड़ों के लिए मना नहीं करेंगे, मेरे और तुम्हारे लिए नए कपड़ों की आवश्यकता नहीं है। मैं मैचिंग सेट अपनी बहन से ले लूंगी, काम चल जाएगा। ननिहाल शगुन में कटौती नहीं कर सकते, मां बाबूजी की इज्जत की बात है।'' नलिन और लता ने मिलकर अपने खर्च को एक लाख तक समेटने का खाका तैयार कर मन को समझा लिया और तसल्ली की सांस ली कि इतनी व्यवस्था में अधिक परेशानी नहीं होगी।

शादी के एक महीने पहले नूतन ने नलिन को फोन करके फरमान सुना दिया कि दिव्या की शादी के समय ही उनके बेटे दिव्यांश का जनेऊ संस्कार नियत हुआ है और उसके लिए जो कपड़े होते हैं वह ननिहाल से आने हैं। साथ ही बताया कि दिव्यांश ने 25000 रुपये की शेरवानी पसंद कर ली है। नलिन अकस्मात आने वाले इस खर्च के लिए तैयार ही नहीं था और उसके परिवार में ऐसी प्रथा भी नहीं थी। बहन को वह कुछ कह ही न सका। वह जानता था कि लता को बताने पर क्या प्रतिक्रिया होगी, किंतु बताना तो था ही।

''दीदी को तो सिर्फ अपना ही दिखता है, हमेशा अपना हित ही पहले देखती हैं, कभी यह नहीं सोचती कि भाई कैसे करेगा? करना आवश्यक था तो इतनी महंगी लेने की क्या पड़ी थी?''

लता के रोष का मानो आज कोई पारावार नहीं था। आर्थिक जिम्मेदारियां और सामाजिक सरोकारों का संतुलन आज बिगड़ा जो दिख रहा था।

पूरे सप्ताह घर में अजीब सा सन्नाटा पसरा रहा।

हमेशा की तरह लता भी कुछ शांत होने लगी थी और नलिन का मन भी अब तैयार हो चला था। दोनों बेटियां अपने अपने कॉलेज से घर आई तो नलिन ने उन्हें शादी से जुड़ी बातें

साझा की, लता ने भी अपनी लेन–देन की रस्मों के बारे में उन्हें बताया। बच्चे नासमझ नहीं थे, तुरंत भाँप गए मां के छुपाए हुए झंझावात को। बच्चे बुआ पर भड़क उठे।

परंतु अब हैरान होने की बारी नलिन की थी। लता ने बच्चों को कहना शुरू किया, ''देखो बेटा, मैं सब समझ रही हूं। बुआ का स्वभाव कोई नया नहीं है। सामाजिक दबाव की बात कहकर वह हमसे अधिक अपेक्षा कर रही हैं, जिसे हम मजबूरी में ही सही पूरा भी करेंगे। तुम्हारे पापा चाहते तो मना भी कर सकते थे, पर नहीं किया। जानती हो क्यों ? मना कर देने पर हम अपने हिसाब से तो कर लेते, पर रिश्तों में हमेशा के लिए खटास आ जाती। हां तुम्हारे मन में यह सवाल आ सकता है कि उन्हें भी तो सोचना चाहिए था। किंतु इससे हमारा दायित्व कम तो नहीं हो जाता। मैं और नलिन दोनों जानते और मानते हैं कि रिश्ते पौधे की तरह होते हैं, उन्हें प्रेम से सींचते रहना पड़ता है। हम दोनों ने हमेशा इसी भावना से रिश्ते निभाए हैं। तुम दोनों भी यह बात अच्छी तरह गांठ बांध लो और मन में कोई दूसरी भावना को जगह न लेने दो।''

नलिन अवाक था क्योंकि लता ने कितनी सही और कितनी गहरी बात कही थी।

जमाने के साथ बदलते रिश्ते

लैंड्लाइन का जमाना ही सही था जनाब,
रिश्ते ठहर जाया करते थे।
न वैलिडिटी का डर था और न ही टाकटाइम की कमी
वो रूठने मनाने के दिन ही सही थे साहब
हम अपनों पर हक जमाया करते थे।

आज दुनिया, बस तेरे–मेरे लाइक बटोरने के चक्कर में है,
अपनों का साथ नहीं देते, बल्कि उन्हीं की टक्कर में हैं।
अब लोग रिश्तों की डोर काट काट कर,
चमकीले पतंग उड़ाया करते हैं।

वो चिठ्ठियों का जमाना ही सही था जनाब, वो रिश्ते ठहर जाया करते थे।
ना स्वाइप लेफ्ट न स्वाइप राइट,
दिल से शिकायतों का अंबार निकाल कर भूल जाया करते थे,
वो डाकिये का इंतजार ही सही था साहब,
हम कागज और कलम से,
ता–उम्र दूर के रिश्ते भी शिद्दत से निभाया करते थे।

शिल्पी यादव
भारतीय निर्यात–आयात बैंक

कला दीर्घा

दि न्यू इंडिया एश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय– 1 में कार्यरत श्रीमती लीना साही की सुपुत्री सुश्री अदिति साही द्वारा बनाई गई चारकोल पेटिंग्स।

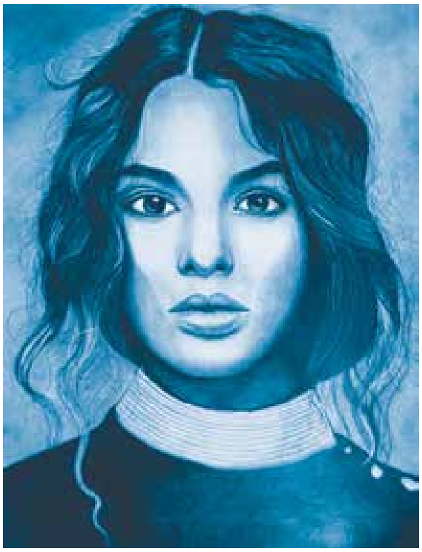

अदिति साही

'धरती आबा' : बिरसा मुंडा

आदिवासी महानायक को देशभक्ति जल, जंगल और जमीन की रक्षा के लिए विशाल बिट्रिश हुकूमत और तत्कालीन राजाओं, जागीरदारों, सरदारों, महाजनों, दिकुओं से संघर्ष की महागाथा के नायक है बिरसा मुंडा।

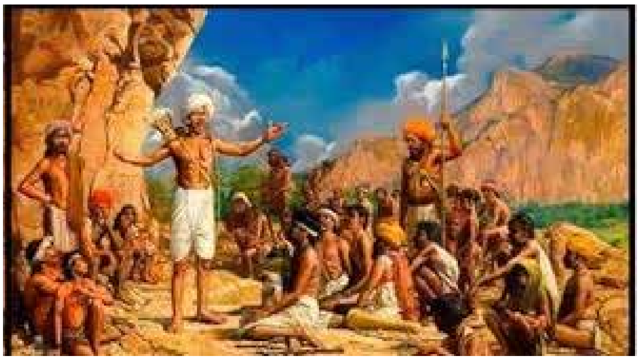

डॉ. गौतम कुमार मीणा
उप प्रबंधक (राजभाषा)
दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड
क्षेत्रीय कार्यालय 2 दिल्ली

आदिवासी महानायक बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवम्बर, 1875 में छोटा नागपुर जो वर्तमान में झारखंड राज्य के खूंटी जिले के उलीहातू गॉंव में हुआ था। इनकी माता का नाम करमी हातू और पिता का नाम सुगना मुंडा था। बृहस्पतिवार को जन्म लेने के कारण उनका नाम बिरसा मुंडा रखा गया। मुंडा एक आदिवासी समूह था जो छोटा नागपुर पठार में निवास करते थे। बिरसा के माता–पिता गरीबी की मार झेलने के कारण शिक्षा दिलवाना तो दूर दो वक्त की रोटी भी नहीं दे पाते थे। ऐसी अवस्था में बिरसा को उनकी मौसी अपने गांव खटंगा ले आती है। वहाँ पर बालक बिरसा भेड़–बकरियों को चराता था। जंगल में भेड़–बकरियों को चराते हुए बिरसा बहुत मधुर बांसुरी बजाया करता था। कुछ समय बाद बिरसा को सालगा गॉंव में प्रारंभिक शिक्षा के लिए भेजा गया, बाद में वे चाईबासा इंग्लिश मिडिल स्कूल पढ़ने आये। आर्थिक अभावों को झेलने वाले बिरसा को 15 वर्ष की आयु में ही शिक्षा छोड़नी पड़ी। बचपन से ही बिरसा जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं के लिए भटकता रहा। किशोरावस्था से युवावस्था में पहुँचते–पहुँचते दरिद्रता की वजह और उसका निराकरण खोजता रहा। समाज की विपन्नता का कारण बिरसा ने खोज लिया, वो था विस्थापन जिसके मुख्य कारण थे– वनोपज पर आदिवासियों के पुश्तैनी अधिकारों पर पाबंदी, कृषि भूमि के उत्पाद पर लगान और अन्य प्रकार की जबरन वसूली आदि।

ब्रिटिश शासन व्यवस्था, भारतीय सामंतों, कारिंदों, जमींदारों, जगीरदारों, ठेकेदारों और सेठ साहुकारों के शोषण और दमन चक्र की भट्टी में देशभर का आदिवासी समाज झुलस रहा था। देश के मूल मालिक आदिवासियों से जल, जंगल और जमीन का मालिकाना हक अधिकार छीना जा रहा था। खेत–खलिहानों, वनों और जंगलों के उत्पाद का सेठ–साहूकार बहुत कम मूल्य देते थे और मूलभूत आवश्यक वस्तुओं को ऊँचे दामों में बेचते थे। विरोध करने वाले व्यक्तियों को बहुत प्रताड़ित किया जाता था। बिना किसी अपराध के सरकारी कारिंदों के हवाले कर जेल की अमानवीय यातनाओं में धकेल दिया जाता था। आदिवासी महिलाओं के साथ भी दुराचार किया जाता था। इसी कारण गरीबी, शोषण, अत्याचार और कानूनी शिकंजों में फंसा आदिवासी समाज अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को भी पूरा नहीं कर पा रहा था।

शोषण करने वाले बाहरी लोगों को बिरसा 'दिकू' बोलते थे। ये वो लोग थे जो आदिवासी इलाकों में बाहर से आये थे या वहां के कारिंदे, जमींदार और ठेकेदार थे जो आदिवासियों को लूटते हुए उनका शोषण और अत्याचार करते रहते थे। आदिवासी समाज में शादी, उत्सव, पूजा, जन्म और मृत्यु होने पर भी टैक्स भरना पड़ता था। बिरसा को समझ में आ गया था, की इन शोषणकारी दिकू को बाहर भगाये बगैर समाज को अभावों, शोषण और दुखों से मुक्ति नहीं मिल

सकती। पाखंडवाद और धर्मांतरण के तहत समाज गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा जा रहा था बिरसा जान गये थे। इसी कारण जनचेतना अभियानों से लोगों में जन जागरूकता अभियान चलाया और अबुआ दिशोम रे, अबुआ राज (हमारी धरती, हमारा राज) की घोषणा कर दी। बिरसा मुंडा और उसके साथियों ने छोटा नागपुर में भयंकर अकाल, महामारी और लगान वसूली से त्रस्त होकर 1892 में लागू वनोपज के लगान वसूल कानून का जबरदस्त विरोध करते हुए, 1894 में अंग्रेजों से लगान माफी के लिए आंदोलन किया था। आंदोलन की व्यापकता और उग्रता को देखते हुए 1895 में उन्हें गिरफ्तार कर हजारीबाग केन्द्रीय कारागार में दो साल के कारावास की सजा दी गयी।

18 वर्ष की युवावस्था में ही जनसंघर्षों में अग्रणी भूमिका निभाने के कारण बिरसा मुंडा आदिवासी समाज के नेतृत्वकारी महानायक बन गये। जल, जंगल, जमीन पर मालिकाना हक दिलाने के लिए उन्हें 'धरती आबा' (धरती के पिता) के नाम से पुकारा जाने लगा। बिरसा मुंडा ने गुलामी के खिलाफ न केवल राजनीतिक जागृति के बारे में संकल्प लिया बल्कि समाज में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक जनजागृति पैदा करने के लिए गॉंव–गॉंव घूमकर अपनी भाषा, बोली और संस्कृति को बचाते हुए 'अबुआ दिशोम रे, अबुआ राज' का क्रांतिकारी बिगुल फूंक दिया।

उन्होंने सिंगबौंगा (सूर्य) और धरती को अपना आराधक घोषित किया था। बिरसा मुंडा दोहरी लड़ाई लड़ रहे थे एक तरफ पाखण्डवाद, अंधविश्वास और धर्मान्तरण से समाज को मुक्ति दिलाने के जनजागरण अभियान और दूसरी तरफ ब्रिटिश हुकूमत की गुलामी और अत्याचारों के खिलाफ संघर्ष कर रहे थे।

1897 से 1900 के दौरान मुंडाओं और ब्रिटिश सिपाहियों के बीच युद्ध होते रहे। समाज हितैषी बिरसा और उनके जाबांज साथियों ने सामंतो–साहूकारों, ठेकेदारों और अंग्रेजों की नाक में दम कर दिया। जीवन संगिनी माकी मुंडा के सहयोग और समर्पण से उनका उलगुलानी कारवां बढ़ता गया। उसी दौरान जांबाज साथियों के साथ मिलकर अपने तीर कमानों से खूंटी थाने पर धावा बोल दिया था। बाद में तांगा नदी के किनारे ब्रिटिश सेना के साथ युद्ध हुआ, जिसमें अंग्रेजी सेना हार गयी थी। उसके बाद उस इलाके में सख्त कार्यवाही के दौरान आदिवासी अगुवाओं की गिरफ्तारियां की गई।

जनवरी 1900 में डुम्बारी पहाड़ पर बिरसा मुंडा जनसभा को संबोधित कर रहे थे, तभी ब्रिटिश सैनिकों ने अचानक हमला कर दिया। इसमें कई महिलाऍं, युवा, बुजुर्ग मारे गये थे तथा सैंकडों गंभीर रूप से घायल हो गये। बिरसा और उनके कुछ साथी बड़ी मुश्किलों से बच–बचाकर वहॉं से निकल गये थे। बिरसा के साथियों की गिरफ्तारियाँ की गई। ब्रिटिश सरकार द्वारा बिरसा की गिरफ्तारी के साथ ईनाम की घोषणा कर दी गई। समाज के धोखेबाजों की साजिशों के कारण 3 फरवरी, 1900 को चक्रधरपुर से बिरसा को गिरफ्तार कर लिया गया। उस समय बिरसा मुंडा महान क्रांतिकारी और आदिवासी समाज का उलगुलान (महाविद्रोह) के नायक बन गये थे। मुंडा, हो, उरांव, कोल आदि सभी आदिवासियों का उलगुलान महानायक बिरसा मुंडा बन गया था। सबने मिलकर गुलामी की बेडियों को तोड़ने के लिए मुक्ति संग्राम की ठान ली और ऐलान कर दिया 'अबुआ राज ऐते जना, महारानी राज टुण्डु जना अर्थात हमारा राज आयेगा, महारानी का राज खत्म होगा। वर्तमान झारखंड में 'बिरसा क्रांति' व्यापक रूप में फैल चुकी थी। चारों और विद्रोह के स्वर उठने लगे थे। मामले को शांत करने के लिए कोर्ट केस की तारीखें दे दी गई। सरकार प्रतिरोध को देखकर बौखला गई थी और मुकदमों की सुनवाई का वक्त भी नहीं था। 9 जून 1900 को रांची जेल में बिरसा को धीमा जहर देकर मार दिया गया और प्रचार किया गया कि वह हैजा की बीमारी से मर गया। रांची की जेल में रात को ही बिरसा की लाश को चुपचाप जला दिया गया। 25 साल के युवा क्रांतिकारी, महानायक, समाज के अगुआ, वीर योद्धा बिरसा मुंडा ने आजादी की लड़ाई में अपने प्राणों का बलिदान दिया है।

देश आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और आदिवासी समाज के प्रमुख महानायक, क्रांतिकारी, स्वतंत्रता सेनानी और अल्पायु में देश के लिए बलिदानी बिरसा के परिवारजन किस हालत में हैं किसी से छिपा नहीं हैं। पिछले वर्ष इनकी पौती जौनी मुंडा जीविकापार्जन के लिए सड़क पर सब्जियां बेच रही थी तो पौते दैनिक वेतन पर कामकाज मजदूरी कर रहे हैं। सरकार का ध्यान न इनके परिवार पर गया और ना ही इनके गॉंव और घर के दयनीय हालतों पर। सरकार और आदिवासी समाज को तुरंत यथोचित सहायता करनी होगी।

वे 'धरती आबा' धरती के पिता के रूप माने जाते हैं। आदिवासी समाज के गौरवशाली व्यक्तित्व की विराट आभा सबको जल, जंगल, जमीन और देश प्रेम की प्रेरणा दे रही हैं। उलगुलान के महानायक बिरसा मुंडा की जयंती के अवसर पर 15 नवम्बर, 2021 को केंद्र सरकार जनजातीय गौरव दिवस मनाती है। धरती आबा राष्ट्रीय नहीं अंतरर्राष्ट्रीय प्रेरणास्रोत हैं।

मध्य अमेरिकी देशों में घुँघरुओं की गूंज......

सोमा दास
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
भारतीय रिज़र्व बैंक, नई दिल्ली

मैं और मेरी कत्थक नृत्य कक्षा की सहेलियाँ तबले पर 16 मात्रा की तीन ताल पर पसीना बहाकर एक 'तिहाई' के सम पर आने की कोशिश कर रही थीं। लखनऊ घराने की कत्थक नृत्य शैली की सबसे खूबसूरत बात यह है कि एक ओर जहां अभिनय के माध्यम से किसी भी कथा के सूक्ष्म पहलुओं को दर्शकों तक पहुंचाना होता है, वहीं नृत्य प्रस्तुति के समय ताल से बाहर न जाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। इसी चुनौती को जीवन का प्रयोजन मानकर मैं रविवार को अपनी कत्थक की कक्षा में साधना कर रही थी। अचानक मेरी गुरु ने बताया कि हम 4 लड़कियों को मध्य अमेरिकी देशों में कत्थक की प्रस्तुति का अवसर प्राप्त हुआ है। उस दिन मेरी खुशी का ठिकाना नहीं था। पहली बार विदेश जाने का मौका मिल रहा था, वो भी एक रुपया खर्च किए बिना। कभी–कभी जब हमें जीवन में कुछ ऐसा मिल जाता है जिसकी हमने कल्पना भी न की हो, तो ईश्वर के अस्तित्व पर सर्वथा विश्वास सा होने लगता है और यह एहसास भी होता है कि मेहनत का फल किसी न किसी रूप में हमें इसी जीवन में प्राप्त हो जाता है।

मैंने अपने घर पर यह बात बताई और मेरे घरवालों के लिए यह अत्यंत गर्व का विषय था क्योंकि मेरे माता–पिता ने मुझे हमेशा वह काम करने की छूट दी जिससे मुझे खुशी मिलती है। बचपन से ही मुझे नृत्य में रुचि थी इसलिए मैंने शास्त्रीय नृत्य में बी.ए. किया। पढ़ाई के दौरान मेरे परिवार और पापा के कई मित्र उनसे पूछा करते थे कि 'नृत्य में पढ़ाई करने से आपकी बिटिया क्या करेगी?' उन्होंने कभी इन प्रश्नों को मुझ पर हावी नहीं होने दिया और मुझसे हमेशा कहा कि 'तुम जो भी करोगी मुझे पता है पूर्ण निष्ठा से करोगी'। शायद यही वह दिन था जब मौन रहकर मेरे पिता ने उन सभी लोगों को जवाब दे दिया था।

आखिरकार कड़ी मेहनत और दिन रात रियाज करने के बाद वह दिन आ ही गया जब हम इंदिरा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पहुंचे। सबसे दिलचस्प बात यह थी कि विदेश जाना था इसलिए हम सब नृत्य की कक्षा में भी अंग्रेजी में बात करने की आदत डाल रहे थे। एक ठुमरी जिसके बोल थे "छोड़ो–छोड़ो कान्हा, देखे हैं सब लोग" का अंग्रेजी अनुवाद कर हम खूब हँसे भी। हमने उसका अनुवाद किया Leave me, Leave me Kanha, Everybody is watching us. कितनी अजीब बात है ना। हम मेक्सिको जा रहे थे जहां लोग स्पैनिश बोलते हैं और हम अंग्रेजी में बात करने की आदत डाल रहे थे।

दिल्ली से हमें 'दोहा' जाना था और फिर वहाँ से मेक्सिको का लंबा सफर तय करना था। दोहा से हमने अगली उड़ान मेक्सिको के लिए भरी। मेरी गुरु हमें सिर्फ नृत्य के गुर ही नहीं सिखाती थी अपितु हमारे सर्वांगीण विकास के लिए प्रयासरत रहती थी। इसलिए रास्ते में जो भी हो रहा था वो हमें विस्तार से समझा रही थी और हमसे यह अपेक्षा कर रही थी कि हम इस पूरे समय का लाभ उठाएं।

मेक्सिको पहुँच कर जैसे ही हम बाहर निकले तो भारत से बाहर आने का एहसास हुआ। सब स्वच्छंद होकर अपना जीवन जी रहे थे। नए परिवेश और नई चीजों के प्रति आकर्षित होना मनुष्य का स्वभाव है। यही कारण था कि वहां का वातावरण हमारे लिए जिज्ञासा का सेतु बन गया था।

हम मेक्सिको भारतीय दूतावास पहुंचे। वहां पहुँचकर ऐसा लगा जैसे कई अजनबियों के बीच अपने मिल गए हों और एयरपोर्ट से दूतावास तक आते–आते अंग्रेजी समझने में जो मुश्किलें आईं उससे राहत मिली और हम अपनी भाषा में मुक्त रूप से बात कर सकते थे। उन्होंने हमारा स्वागत किया और हमारे ठहरने की व्यवस्था एक अच्छे होटल में की।

अब इतने लंबे सफर के बाद मुलायम बिस्तर देखकर हम लोगों को निद्रा देवी ने अपने आगोश में लेने की पूरी कोशिश की। हम उनके आगोश में जाने ही वाले थे कि अचानक इंटरकॉम पर हमारी गुरु का फोन आया और उन्होंने कहा जल्दी से तैयार हो जाओ रियाज करना है। जेट लैग के कारण जहां यही सुध नहीं थी कि रास–लीला में राधा कृष्ण को छेड़ती थी या कृष्ण राधा को, हमें ठुमरी के अभिनय के रियाज का आग्रह किया जा रहा था। खैर, तस्मै श्री गुरुवै नमः पंक्ति को स्मरण करते हुए हम रियाज करने चले गए। हम बार–बार मस्तिष्क को यहाँ आने के प्रयोजन का स्मरण करवा रहे थे और मस्तिष्क हमें निद्रा देवी की याद दिला रहा था। शायद संगीत प्रेमियों की यह कमजोरी होती है कि मधुर ध्वनि सुनकर वे सब कुछ भूल जाते हैं और जैसे ही धुन बजी हम सारी थकान भूलकर रियाज में लग गए।

मेक्सिको सिटी का एक दृश्य

शाम को एक भारतीय परिवार ने हमें खाने पर बुलाया था। शायद अपने देश से इतना दूर रहकर उनका भारतीय हृदय आत्मीय अनुभूति से भर गया होगा। उन्होंने जिस आत्मीयता से भोजन कराया, उससे परदेस में मुझे अपने घर के खाने की याद आ गई। परदेस में, इतनी आत्मीयता, घर जैसा भोजन, इतना अपनापन, खुशी से मेरा मन सराबोर हो उठा, लगा जैसे अपनी ही मिट्टी में हूँ।

हमनें जल्दी–जल्दी खाना खाया और इस अविस्मरणीय आतिथ्य सत्कार के साथ हम वहाँ से निकल गए। अगले दिन हमें प्रस्तुति देनी थी। स्टेज तैयार और पूरा हॉल खचाखच भरा हुआ। विदेशियों की संख्या अधिक थी। मेरी गुरु को रामायण के सीता स्वयंवर के दृश्य की प्रस्तुति करनी थी, जिसके बारे में शुरुआत में उन्होंने अंग्रेजी में सबको बताया लेकिन वहाँ बैठे हुए अधिकांश लोग सिर्फ स्पैनिश समझते थे। लेकिन उनके अभिनय से सभी लोग उस दृश्य को समझ गए और प्रस्तुति के बाद मंच के पीछे आकर हम सभी को बधाई देने लगे। बेपनाह तालियों की गूंज विदेशी भूमि पर भारतीय नृत्य का लोहा मनवा रही थी। नृत्य थम चुका था लेकिन उसके बावजूद सारा माहौल रक्स करता नजर आ रहा था। हॉल के दरो–दीवार से घुंघरुओं के सुरीले स्वर फूट रहे थे और हमारी टीम भारतीय होने के गौरव से आत्मविभोर हुए जा रही थी। भारतीय शास्त्रीय नृत्यों की यही तो विशेषता है। प्रस्तुति के बाद एक भारतीय महिला हमसे मिलने आई। उनकी आंखों में आँसू थे और उन्होंने हमसे सिर्फ इतना कहा– " I really miss my country."

वतन से दूर वतन की याद की कसक का वह लम्हा अत्यंत हृदय विदारक था।

इस अविस्मरणीय अनुभव के साथ हम मेक्सिको से ग्वाटेमाला की ओर निकल गए। ग्वाटेमाला मध्य अमेरिका में स्थित एक देश है। Antigua नामक एक शहर में हमें प्रस्तुति देनी थी। यहाँ प्रस्तुति देना हमारे लिए चुनौतीपूर्ण था क्योंकि न तो यहाँ उपयुक्त मंच था और न ही वांछित संसाधन। लेकिन चुनौतीपूर्ण स्थितियों में सर्वोत्कृष्ट निष्पादन ही कलाकारों की निशानी है।

मुझे महादेवी वर्मा की दो पंक्तियाँ याद आईं:–

वह पथ क्या, पथिक कुशलता क्या, जिस पथ में बिखरे शूल न हों,

नाविक की धैर्य कुशलता क्या, यदि धाराएँ प्रतिकूल न हों।

इसी मंत्र के सहारे हमने मंच के लिए स्वयं वांछित संसाधनों की व्यवस्था की। कहीं से लंबा कपड़ा लाकर स्टेज के पीछे बैकड्रॉप की तरह लगाया और लाइट वगैरह की व्यवस्था की।

Antigua

इसके बाद हम बेलीज़ की ओर निकल पड़े। बेलीज मध्य अमेरिका का सबसे कम जनसंख्या वाला देश है। बेहद खूबसूरत और शांत देश। इस पूरे सफर में सबसे अच्छी

बात यह थी कि हमारे मोबाइल फोन काम नहीं कर रहे थे और उस समय व्हाट्सएप नहीं था। आजकल हम अपने मोबाइल फोन में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि जिंदगी की खूबसूरती को फेसबुक या व्हाट्सएप पर महज देखते हैं, जिंदगी को जीते नहीं हैं। बेलीज़ में सैन पैड्रो नामक शहर में एक द्वीप में जाने का मौका मिला। जब एक छोटे से हवाई जहाज में हम इस द्वीप की ओर बढ़ रहे थे तो मशहूर गाना 'ब्लू है पानी पानी' गलत साबित हो रहा था। वहाँ पानी हरा था और इतना साफ कि अपना अक्स भी दिखाई दे। इस द्वीप में पहुँचकर हमने Under water diving की। जब मैं छोटी थी तो टीवी पर एक कार्टून आता था 'Little Mermaid'. समुद्र के नीचे का जीवन बस उसी में देखा था मैंने। एरियल और उसके दोस्तों को नीचे ढूँढने के लिए मैं समुद्र में चली गई। शुरुआत में बहुत डर लग रहा था, लेकिन जैसे ही मैंने समुद्र के अंदर का जीवन देखा, मैं एक अलग ही दुनिया में चली गई। छोटी–छोटी मछलियाँ मेरे कानों में कुछ कह रही थी (शायद कह रही होंगी अरे! बंगालन मुझे कच्चा मत खा जाना) बड़ी मछलियाँ कुछ attitude में थी। ढेर सारे कोरल्स जिनके बीच से हम गुजर रहे थे। ऊपर आने के बाद एक अलग सी शांति थी और हम होटल आकर सो गए।

अगले दिन फिर से रियाज और प्रस्तुति। इस तरह से कुल 16 अलग–अलग जगहों पर प्रस्तुति के बाद हम मधुर स्मृतियों के साथ भारत वापस आए। 10 दिन तक एक अलग ही दुनिया में रहने के बाद बहुत कुछ सीखने को मिला। सबसे बड़ी बात यह कि भारतीय शास्त्रीय नृत्यों की एक अलग ही पहचान है और विदेशों में इसके बारे में जानने के लिए लोग बहुत उत्सुक हैं। इसीलिए तो हम गर्व से कहते हैं– हमारा भारत महान।

भारतीय रिज़र्व बैंक

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर हिन्दी के साथ– साथ अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को सम्मान देने के प्रयोजन से भारतीय रिज़र्व बैंक, नई दिल्ली कार्यालय में कार्यालय के स्टाफ सदस्यों के लिए 26 फरवरी 2024 को एक **सर्वभाषा काव्य पाठ** का आयोजन किया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय निदेशक श्री रोहित पी. दास; सुश्री सुचित्रा मौर्या, भारतीय रिज़र्व बैंक लोकपाल तथा श्री अरविंद कुमार, मुख्य महाप्रबंधक की गरिमामयी उपस्थिति रही। क्षेत्रीय निदेशक महोदय श्री रोहित पी. दास ने अपने सम्बोधन में कहा कि भाषा किसी भी राष्ट्र और समाज की आत्मा होती है, जिसमें वह देश, वह समाज संवाद करता है और भाषा ही देश और समाज को एक सूत्र में पिरोती है। उन्होंने कहा कि हमारा देश एक बहुभाषी देश है और कहीं न कहीं यही बहुभाषा हमारी पहचान है, जिस पर हमें गर्व करना चाहिए। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि हमें अपनी मातृभाषा में बात करनी चाहिए और भारत की भाषाओं को लुप्त होने से बचाने में सहयोग देना चाहिए। कार्यालय के कुल 13 स्टाफ सदस्यों द्वारा हिन्दी, बंगाली, असमिया, मैथिली, भोजपुरी, मगही, पंजाबी, गुजराती, तेलुगू, उड़िया, मराठी, संस्कृत इत्यादि भाषाओं में काव्य पाठ किया गया।

सभी उपस्थितगण को संबोधित करते हुए श्री अरविंद कुमार, मुख्य महाप्रबंधक

वरिष्ठ अधिकारियों सहित सभी प्रतिभागीगण

गलतियों से सीखकर ही मिलता है सफलता का रास्ता

गणेश नारायण साहू
प्रबंधक
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली

मुझे अचानक कानपुर से दिल्ली स्लीपर क्लास का ही टिकट लेकर निकलना पड़ा। ट्रेन छूटने में लगभग दो तीन मिनट का समय बचा होगा कि तभी एक बदहवास सी सोलह सत्रह साल की लड़की आई। उसने अपनी अटैची सीट के नीचे रखी और अपना पिट्ठू बैग निकाल कर अपनी गोद में मजबूती से पकड़कर सामने वाली सीट के कोने में दुबक कर बैठ गई। उसने विंडो का शटर डाउन किया और अपने सिर को चुन्नी से ढकते हुए यूं देख रही थी कि कहीं कोई उसे खोज तो नहीं रहा है?

ट्रेन का हार्न बजा और ट्रेन रेंगने लगी। लगभग दस मिनट बाद जब ट्रेन शहर पार कर चुकी तो उसके चेहरे पर राहत नजर आ रही थी। इसी दौरान उसका मोबाईल बजा और वो खुसरपुसर कर बहुत ही धीमी आवाज में बात कर रही थी और मेरे अनुमान से उसकी बातचीत का सारांश था कि मैंने जरूरी नकदी, सामान और कागजात रख लिए हैं और मैं ट्रेन में बैठ चुकी हूँ।

मुझे कुछ गड़बड़ सी लग रही थी। मैंने सोचा बातचीत करके कुछ पता किया जाए। मैंने पूछ लिया, "क्या बात है बेटी? क्या पहली बार ट्रेन से सफर कर रही हो?" उसने जवाब दिया, "नहीं अंकल, मैं पहले भी रेल में सफर कर चुकी हूं, लेकिन तब मम्मी पापा होते थे। आज अकेली हूं" मैंने कहा, "वेरी गुड, इंसान ऐसे ही सीखता है। आप किस क्लास में पढ़ती है?'' उसने जवाब दिया कि इसी साल अभी इंटरमीडिएट की परीक्षा दी है। मैंने कहा, "शायद आगे पढ़ाई करने के लिए दिल्ली जा रही हो?'' उसने जवाब दिया, "कुछ ऐसा ही समझ लीजिए।" मैने कहा, "क्या मतलब? ऐसा ही क्यों समझ लीजिए?"

उसने बताया कि अब मैं आगे की पढ़ाई भी करूंगी और नौकरी भी। मैंने कहा, "वाह यह तो बहुत खुशी की बात है कि तुमने छोटी उम्र में ही नौकरी पा ली।" उसने कहा, "यह नौकरी मेरे दोस्त ने लगवाई है। वो कालेज में एडमीशन भी दिलाएगा।"

"अच्छा तो वो आपका कोई रिश्तेदार या जानपहचान का होगा?" मैंने प्रश्न उछाला। वो बोली, "नहीं अंकल, यह मेरा व्हाट्सऐप वाला दोस्त है, लगभग छह महीने पहले ही दोस्ती हुई है। हम खूब चैट करते हैं। वो मुझसे बहुत लव करता है। उसी ने बुलाया है कि मैं घर में किसी को बिना बताए उसके पास आ जाऊं और नौकरी पाने के बाद घरवालों को सरप्राईज कर दूं। मैंने दोस्त की बात मान ली। इसीलिए किसी को भी बिना बताए आ गई हूँ।"

मैं अवाक् था। कदाचित यह किशोरावस्था के कल्पनालोक में आसक्ति को प्रेम समझकर दुनिया के छल–कपट से अनजान कदम बढ़ा रही है। मुझे समझ नहीं आ रहा कि भावी संभावित खतरों के बारे में क्या और कैसे समझाऊं? लेकिन..

मैंने बातों ही बातों में पूछा कि "तुम्हारी उम्र और नाम क्या है?" उसने बताया कि "मेरी उम्र 15 साल है और मेरा नाम दिशा है" फिर मैंने पूछा कि "क्या तुम उसका नाम पता या उसकी उम्र कुछ जानती हो?" उसने कहा नहीं अंकल जी मुझे इनमें से कुछ पता नहीं है

मुझे तो सिर्फ उसका मोबाइल नंबर पता है जिससे मैं व्हाट्स ऐप पर बातचीत करती हूँ। उसने मुझे पूरा भरोसा दिलाया है कि वो मुझसे बहुत प्रेम करता है इसलिए उसके बुलाने पर मैं दिल्ली जा रही हूँ।

मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि आखिर मैं इस सीधी साधी लड़की को कैसे समझाऊं कि तुम एक झूठे प्यार के झाँसे में आ गयी हो। मैंने फिर से उसे समझाने की कोशिश की और पूछा बेटी क्या तुम्हारे पास उसकी कोई फोटो है? "उसने कहा नहीं अंकल जी"।

अब मैं उससे कुछ और पूछता कि वो कहने लगी कि अच्छा अंकल जी दिल्ली रेलवे स्टेशन आने वाला है, मैं अपनी अटैची निकाल लूं और क्या आप मुझे अपना मोबाइल नम्बर दे सकते हैं मुझे आपसे बात करके अच्छा लगा। कभी मन

किया तो आपसे बात कर लिया करूंगी। फिर उसने मेरा नंबर ले लिया बस इतने में दिल्ली का रेलवे स्टेशन आ गया और वो चली गई।

मैंने भी दिल्ली में अपने भाई के घर पर गर्मियों की छुट्टियों का आनंद लिया। एक दिन मुझे ख्याल आया कि पता नहीं उस लड़की के साथ क्या हुआ होगा। भगवान करे वो जहां कहीं भी हो ठीक हो।

करीब एक महीना बाद उस लड़की का फोन आया उसने कहा, अंकल जी आपने पहचाना मुझे? मैं दिशा हूँ आपको रेल गाड़ी में मिली थी। फिर मुझे याद आ गया और मैंने उसका हाल चाल पूछा। मुझे जिसका डर था वही हुआ। उसने मुझे अपनी आप बीती बताई और कहा, अंकल मैं जिस लड़के पर भरोसा करके आयी थी, उस लड़के ने मेरे सारे पैसे ले लिए और मुझे धोखा दे दिया। अंकल मैं घर भी वापस नहीं जा सकती हूं। क्या आप मेरी कोई मदद कर सकते हैं।

मैं उसकी बात सुन कर भावुक हो गया और उसकी मदद के लिए तैयार हो गया।

मैंने उसे अपने भाई के घर का पता देकर घर आने को कहा वो मेरे घर आ गयी और रो–रो कर मदद मांगने लगी। मैंने उसे घर वापस जाने की सलाह दी।, उसने कहा मै कहां जाँऊ। अंकल जी, मेरे घर में मेरी बूढ़ी मां है। अब तो लोग भी उन्हें ताने देते होंगे ऐसे में अगर मैं अपनी मां के पास वापस जाऊंगी तो लोग मेरे साथ–साथ मेरी माँ को भी मार डालेंगे।

मैंने दिशा से पूछा कि फिर आगे क्या सोचा हैं? तुम अपनी ज़िन्दगी आगे कैसे गुज़रोगी? दिशा ने मन को छू लेने वाला अपना फैसला सुनाया और साथ ही अपने साथ लायी अपनी सारी अंक तालिका (मार्कशीट) दिखाई और कहा अंकल जी मैं पढ़ाई में बहुत अच्छी रही हूँ, मैंने 10वीं और 12वीं में टॉप किया था। कानपुर में पढ़ाई में अव्वल रहने से मेरे जगह–जगह पोस्टर लगे हैं। इसलिए मैं अपनी पढ़ाई फिर से शुरू करना चाहती हूं और अपनी पढ़ाई के दम पर एक बार फिर से अपना नाम कमाना चाहती हूं, उसके बाद मैं अपनी मां के पास जरूर जाउंगी। अंकल जी, बस मुझे किसी अच्छी जगह नौकरी दिला दीजिए, जहां मैं सुरक्षित रह सकूं और अपनी फीस के लिए पैसे भी कमा सकूं।

मैंने उसकी हिम्मत और सूझ–बूझ की उसे दाद दी और उसकी सहायता करने की ठान ली। दिल्ली में ही मेरे भाई का महिला छात्रावास था और पास में ही स्कूल भी था। मैंने उसकी नौकरी वहां लगवा दी और भाई के महिला छात्रावास में रहने के लिए कक्ष भी दिलवा दिया।

अब दिशा सुरक्षित और खुश थी, अब वो रोज छात्रावास से स्कूल जाने लगी। वो बी. ए. में एडमिशन लेना चाहती थी पर अभी उसके रहने और नौकरी का ही बंदोबस्त हुआ था.. अब दिशा के पास फीस भरने के लिए कोई पैसे नहीं बचे थे। मैंने दिशा से कहा "दिशा बेटे तुम मेरी बेटी जैसी हो, मैं तुम्हारी फीस भर दूंगा तुम टेंशन मत लो बस तुम मन लगाकर खूब पढ़ाई करो" पर दिशा ने मना कर दिया उसने कहा अंकल जी आप मेरी पहले ही बहुत मदद कर चुके हैं। अब आगे की लड़ाई मेरी है और मैं इसे जीत कर दिखाउंगी। आप मेरे पिता जैसे नहीं, आप मेरे पिता ही है और मैं अपने माता–पिता का नाम जरूर रोशन करूंगी।

अब दिशा को स्कूल में नौकरी करते–करते दो महीने हो चुके थे और उसको दो महीने का वेतन भी मिल चुका था। उसने दिल्ली यूनिवर्सिटी में बी.ए. में एडमिशन ले लिया। उस दिन दिशा की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था अब वो अपने सपने को साकार करने का सफर शुरू कर चुकी थी। दिशा रोज स्कूल जाती और वापस आकार मन लगाकर खूब पढ़ाई करती। दिशा ने बी.ए. प्रथम वर्ष में प्रथम स्थान प्राप्त किया और मुझे फोन करके खुशख़बरी सुनाई। मैंने अपनी बेटी दिशा को अपने दोनों हाथों से आशीर्वाद दिया। उस दिन मैंने दिशा की जीत का जश्न मनाया।

इसी तरह दिशा ने बी.ए द्वितीय और तृतीय वर्ष में भी कॉलेज टॉप किया। एक बार फिर हर गली में दिशा के टॉपर होने के पोस्टर नजर आए। दिशा का नाम हो गया था। दिशा ने अपना ग्रेजुएशन पूरा किया। दिशा खुश थी पर वो उतनी खुश नहीं दिख रही थी जितना उसे खुश होना चाहिए था, मैंने दिशा से पूछा क्या बात हैं क्या तुम खुश नहीं हो? उसने कहा खुश तो हूँ पर अंकल जी मेरा सपना आई.ए.एस बनने का हैं, मैं जिस दिन आई.ए.एस अफसर बन जाउंगी वो दिन मेरी ज़िन्दगी का सबसे बड़ा दिन होगा क्योंकि आई.ए.एस बनके सबसे पहले मैं अपनी माँ से मिलने जाउंगी और उस दिन मैं सबसे ज्यादा खुश होगी। मैं आई.ए.एस अधिकारी बनने का इंतजार कर रही हूं। दिशा का उत्साह देख, मेरे पास बोलने के लिए शब्द ही नहीं थे। मैंने सच्चे दिल से दुआ दी और कहा तुम आई.ए.एस अधिकारी जरूर बनोगी।

कुछ ही महीने बाद आई.ए.एस के रिक्त पदों के फॉर्म निकले। दिशा ने फॉर्म भरा और परीक्षा दी। परन्तु इस बार उसकी किस्मत ने उसका साथ नहीं दिया और वह आई ए एस की परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो पायी। दिशा जैसे मानो आसमान से सीधी ज़मीन पर आ गिरी हो। उस दिन वह बहुत रोई।

लेकिन दिशा ने एक बार फिर से उठ खड़े होने का फैसला लिया और पहले से भी ज्यादा मेहनत की। उसने दोबारा से आईएएस की परीक्षा दी। इस बार दिशा ने फिर से अपनी सफलता के झंडे गाड़ दिए और साक्षात्कार तक जा पहुंची। अब वो दिन दूर नहीं था जब दिशा अपनी माँ से मिलने कानपुर जाएगी।

आज दिशा का फाइनल रिजल्ट आने वाला था। वह सुबह से ही मंदिर मे जाकर भगवान के सामने हाथ जोड़ कर बस एक ही बात कहती रही कि मुझे आईएएस अफसर बना दो ताकि मैं अपनी माँ का झुका हुआ सर एक बार फिर से गर्व से ऊंचा कर सकूं ताकि कोई मेरी माँ को भगोड़ी बेटी की माँ न कहे बल्कि बड़े सम्मान से कहें कि वो देखो आईएएस दिशा की माँ आ रही हैं।

भगवान ने इस बार उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। मैंने टीवी चालू किया और समाचार चैनल स्थापित किया। हर न्यूज चैनल पर दिशा के आईएएस बनने की चर्चा चल रही थी। मेरे लिए वो लम्हा ऐसा था कि मेरी आंखो से खुशी के आंसू बह रहे थे। दिशा ने सभी के लिए एक मिसाल कायम की, जिसे पढ़ना हैं उसके लिए कठिन परिस्थितियां कोई मायने नहीं रखतीं। ठान लो तो सफलता को दिशा मिल ही जाती है।

जब कानपुर में दिशा के घर के पड़ोसियों ने दिशा के आईएएस अफसर बनने की खबर देखी तो उन्होंने तुरंत दिशा की मां को बताया। जब दिशा की मां ने यह खबर देखी तो वह खुशी से रो पड़ी। अपनी बेटी से मिलने के लिए तड़प उठी। दिशा के पड़ोसियों में एक आदमी पत्रकार था जिसने दिशा का मोबाइल नंबर ढूंढ़ कर दिशा से उसकी माँ की बात करवाई।

दिशा अब तक मंदिर में ही बैठी थी उसका मोबाइल बजा। उसने फोन उठाया। दिशा ने हैलो कहा उधर से जवाब आया कहां हो बेटा घर वापस आ जाओ। दिशा अपनी मां की आवाज तुरंत पहचान गई और रो–रो कर माफी मांगने लगी। दिशा ने पूछा आपको मेरा नंबर कहां से मिला? तब उसकी मां ने बताया कि तुम्हारे आईएएस अफसर बनने की खबर टीवी पर आ रही है। मुझे तुम्हारा नंबर बगल वाले पत्रकार चाचा से मिला।

अब तो दिशा बहुत खुश हुई। आख़िर भगवान ने उसकी दोनों इच्छाएं जो पूरी कर दी थी। अब दिशा सिर्फ दिशा नहीं रह गई थी आईएएस अधिकारी दिशा बन चुकी थी और मां ने भी उसे माफ कर दिया था। आईएएस अधिकारी दिशा का इंटरव्यू लिया गया उसने अपने कठिन संघर्ष के बारे में बताया और लोगों को यह संदेश देते हुए कहा कि "ठान लिया जाए तो मुश्किलें आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकती"।

दिशा का कानपुर में बहुत गर्मजोशी से स्वागत किया गया। उसकी गली वाले उस पर फूल बरसा रहे थे, उसके साथ फोटो ले रहे थे, तमाम पत्रकार आए हुए थे, उसने अपनी खोई हुई पहचान वापस पा ली और अपने माता–पिता के नाम पर चार चांद लगा दिए।

जो लोग दिशा और उसकी माँ को ताने देते थे। वो लोग उन दोनों को फूलों की माला पहना रहे थे दिशा ने अपनी मेहनत से लोगो का नजरिया बदल दिया था। अब लोग भगोड़ी दिशा को भूल चुके थे, उन्हें सिर्फ आईएएस अफसर दिशा याद थी। चारों ओर बस दिशा के सफलता के चर्चे हो रहे थे।

दिशा से आईएएस दिशा का सफर तानों और अपमान से भरा था। दिशा के लिए ये सफर आसान नहीं था लेकिन उसने अपनी सच्ची लगन और मेहनत से खुद को ही नहीं बल्कि अपनी मां बाप को भी लोगों की नज़रो में सम्मान दिलाया।

दिशा ने दिल्ली में अपनी माँ को मुझसे से मिलाया और बताया कि कैसे मैंने उसकी सहायता की। दिशा का कठिन परिस्थितियों में साथ देने के लिए उन्होंने मेरे हाथ जोड़ कर मेरा धन्यवाद किया। अब दिशा और उसकी माँ दिल्ली में खुशी–खुशी साथ रहते है।

सीख– अपनी गलतियों से तभी सीख पाएंगे, जब पहले हम इन्हें स्वीकार करना सीखेंगे।

मंत्री की सीख

प्रीति श्रीवास्तव
आईडीबीआई बैंक लि.

यह एक बहुत प्राचीन राज्य, मगध की कहानी है। मगध देश में एक राजा सूर्य प्रताप सिंह राज किया करते थे। उनके राज्य मे प्रजा एवं सभी लोग बहुत खुश थे। राजा का एक बेटा था, राजकुमार सूर्ययांश। वह बहुत ही आलसी एवं कामचोर था। राजा की भी उम्र हो चली थी, वो चाहते थे कि अपना राज्य बेटे को सौंप कर आराम करें, लेकिन राजकुमार सूर्ययांश राज्य संभालना नहीं चाहता था। वो तो ऐश एवं आराम का जीवन व्यतीत कर रहा था। सुबह 11 बजे तक सो कर अपने कक्ष से निकलता और फिर अपने दोस्तों के साथ शिकार पर निकल जाता था। राजा ने कई बार समझाया लेकिन फिर भी वह समय का महत्व नहीं समझ रहा था,बल्कि मेहनत तो करना ही नहीं चाहता था।

एक दिन राजकुमार सुबह 11 बजे उठा और अपने कक्ष में ही लेटा रहा। उसकी उसके मित्र से लड़ाई हो गई थी, इसलिए पूरा दिन वो अपने कक्ष से बाहर ही नहीं निकला, बल्कि दिन भर लेटा रहा एवं कुछ सोचता रहा। दिन में जब सेवक खाना लेकर उसके कक्ष में गया तो अपनी मनपसंद सब्जी न पाकर राजकुमार सूर्ययांश को बहुत क्रोध आया। यहां तक की गुस्से में उसने सेवक के हाथ से पूरा खाने का थाल फेंक दिया। जब यह बात राजा को पता चली तो वह बहुत चिंतित हुए। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि कैसे अपने बेटे को समझायें एवं अनुशासित करके उसको चिंता एवं क्रोध से मुक्त करें। ऐसे ही दिन निकलते गए, राजकुमार सूर्ययांश अपने कक्ष में ही पूरा दिन लेटे रहते और सोचते रहते और उनका सारा गुस्सा राजमहल के सेवकों एवं मंत्रियों पर निकलता। दिन पर दिन राजकुमार का गुस्सा बढ़ता जा रहा था। राजा ने राजकुमार से बात भी की कि खाली बैठने से अच्छा है कि राजपाट का कार्य ही संभाले, लेकिन राजकुमार के कान पर जूं तक ना रेंगी। हारकर राजा ने अपनी परेशानी का जिक्र अपने मंत्री से किया।

मंत्री बहुत चतुर था। उससे भी राजकुमार की ये दशा देखी नहीं जा रही थी। उसको एक तरकीब सूझी, उसने राजा से कहा कि राजकुमार से बोले कि हमारे बाड़े में तीन जंगली हाथी हैं, अगर राजकुमार अपनी कुशलता से उन तीन हाथियों को नियंत्रित कर पाएंगे तो राजा उन्हें उनकी एक पसंदीदा भेंट देंगे। राजा ने ऐसा ही किया, वो मंत्री के साथ राजकुमार सूर्ययांश के कक्ष में गए तो राजकुमार अपने बिस्तर पर लेटे हुए किसी सोच मे डूबे थे। मंत्री ने राजकुमार से कहा कि,'' राजकुमार जी, हम आपसे कुछ जरूरी बात करने आए हैं। हमारे पास तीन हाथी हैं, जो राजा को बहुत प्रिय हैं, लेकिन बस एक ही दिक्कत है कि वो तीनों हाथी प्रशिक्षित नहीं हैं। जो भी नया प्रशिक्षक उनको सिखाने आता है, वो हाथी उसे अपनी सूंड़ से उठाकर उसे फेंक देते हैं। आप तो कितने शूरवीर एवं साहसी हैं। आप के इलावा ये कार्य तो पूरी दुनिया में कोई नहीं कर सकता।'' अपनी तारीफ सुन कर राजकुमार की आंखो में चमक आ गयी। मंत्री आगे बोले,'' यही नहीं, अगर आपने इन हाथियों को अपने नियंत्रण में कर लिया तो राजा आपको एक पसंदीदा भेंट भी देंगे।''

मंत्री की सारी बात सुनकर राजकुमार बोले कि, ''हे राजन! मैं आपके तीनों हाथियों को प्रशिक्षित करूंगा। राजा ने आज्ञा दे दी। राजकुमार ने राजा से तीन महीने का समय मांगा और अगले दिन से ही तीनों हाथियों को प्रशिक्षित करना शुरू कर दिया। वह जब हाथियों के बाड़े मे पहुंचा तो तीनों आराम से बैठे हुए थे। उसने उन तीनों को खाना दिया, पानी पिलाया और उन्हें साफ किया। वो रोज़ उनको खाना देने लगा और उनकी सेवा करने लगा। इस तरह से वो उन तीनों का दोस्त बन गया। इसी तरह वो उन हाथियों का दिल जीतने में सफल हो ही गया। एक दिन वो तीनों को मैदान में ले गया और वो दौड़ने लगा, तो उसे देख कर तीनों हाथी भी दौड़ने लगे। फिर कुछ दूर जा कर उसने अपने हाथ उठाए तो हाथी भी अपनी सूँड उठाने लगे। वह रोज़ हाथियों को मैदान में ले जाता और उनको प्रशिक्षित करने लगा। तीनों हाथी भी

उसकी बात मानते, वो जो करता वो उसकी नकल करते। इस तरह से तीनों हाथी तीन महीने में पूरी तरह से प्रशिक्षित हो गए। राजकुमार ने फिर राजा एवं मंत्री को सूचित किया कि तीनों हाथी प्रशिक्षित हो चुके हैं। राजा भी मंत्री के साथ तीनों हाथियों को देखने फिर मैदान गए तो उन्होंने देखा कि तीनों हाथी कितने कुशल हो चुके है। यह देख कर वह बहुत आश्चर्यचकित हो गए और राजकुमार की सराहना भी की।

प्रशिक्षित हाथियों को देख कर राजा बहुत खुश हुए और मंत्री से पूछा कि,'' हाथी तो अब प्रशिक्षित हो गए लेकिन इससे राजकुमार कैसे ठीक होंगे और जिम्मेदार बनेंगे?'' उनकी बातें सुनकर मंत्री मुस्कुराए और राजा से बोले,'' हे राजन! चलिये अब राजकुमार को समझाने का समय आ गया है। राजकुमार के समीप जाकर वो बोले कि,'' राजकुमार सूर्ययांश, हमारी ज़िंदगी में भी ये तीन हाथी मौजूद हैं। जिन्हें चिंता, क्रोध एवं घमंड के नाम से जाना जाता है। हमें भी बस इन तीनों को अनुशासित करना है एवं नियंत्रण में रखना है, यहां आपके प्रशिक्षण वाला काम हमारी बुद्धि करती है।''

राजकुमार सूर्ययांश उनकी बातें ध्यान से सुन रहे थे। मंत्री आगे बोले,''चिंता करना किसी समस्या का हल नहीं है बल्कि चिंतन करने से समस्या का हल मिलता है। अपनी सकारात्मक सोच से इस चिंता के हाथी को नियंत्रण में रख सकते हैं। दूसरा हाथी हैं, क्रोध। क्रोध करने से दूसरों का नुकसान हो या न हो परंतु अपना नुकसान जरूर होता है। क्रोध करना कुछ जगहों पर जरूरी होता है जैसे कोई आपके मूल अधिकारों का हनन कर रहा हो आदि, पर कब, कहां, और कितना क्रोध करना चाहिए, यही अपने नियंत्रक यानि बुद्धि से हमें सीखना चाहिए। तीसरा हाथी है घमंड, यह काम मैं कर सकता हूँ, इससे गर्व कहते है बल्कि यह काम केवल मै ही कर सकता हूँ इससे घमंड कहते हैं। हमें गर्व करना चाहिए घमंड नहीं, इसी बात को हमें अपनी बुद्धि के द्वारा इस इस तीसरे हाथी को समझाना चाहिए।''

मंत्री की बातें सुनकर राजकुमार के आँखों में आँसू आ गए और वह राजा के पैरों में गिर पड़ा और बोला, ''पिताजी मैं आपकी बात को अच्छे से समझ चुका हूँ, कृपया मुझे माफ कर दीजिये। अब मैं अपना समय बर्बाद नहीं करूंगा बल्कि राजपाट का कार्य संभालूँगा और आपको कभी निराश नहीं करूंगा। आपको मुझ पर गर्व होगा ये वादा है मेरा आपसे। राजा ने राजकुमार को उठाया और उन्हें गले से लगा लिया।

तो दोस्तो! इस कहानी की तरह हम सब भी अपने मन के इन बेलगाम हाथियों को सुधार सकते हैं, उनको अपनी नियंत्रक बुद्धि द्वारा नियंत्रित कर सकते हैं। हमें सर्वश्रेष्ठ बनने के लिए इन तीनों बेलगाम हाथियों पर लगाम लगाना चाहिए, जो कि सिर्फ अभ्यास से ही आ सकता है और सिर्फ अभ्यास के द्वारा ही हम इन हाथियों को नियंत्रित रख कर जीवन में सफलता पा सकते हैं। कई बार सही मार्गदर्शन न मिल पाने के कारण हम रास्ते से भटक जाते हैं। ये हमारे तीन हाथी ही सही रास्ते पर चलकर हमें सही मार्ग दर्शन प्रदान करते हैं, जिससे हम सफलता के कदम चूम सकते हैं। आज हर कोई सफलता प्राप्त करना चाहता है, खुद पर नियंत्रण रख कर ही हम कठिन से कठिन मंज़िलों को भी हासिल कर सकते हैं। इसीलिए शायद किसी ने सही ही कहा है कि–

स्वयं पर नियंत्रण और अनुशासन ही सफलता की कुंजी है।

बैंक ऑफ़ बड़ौदा, नई दिल्ली अंचल में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का आयोजन

बैंक ऑफ़ बड़ौदा, नई दिल्ली अंचल द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर महाप्रबंधक एवं प्रमुख – सरकारी संपर्क श्री विजय कुमार बसेठा की अध्यक्षता में संगोष्ठी और काव्य पाठ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हास्य कवि दीपक गुप्ता ने मातृभाषा और प्रगति पर अपनी बात रखी और अपनी कविताओं का पाठ किया। इस कार्यक्रम में 75 से अधिक स्टाफ–सदस्य शामिल हुए तथा हास्य रस की कविताओं का भरपूर आनंद उठाया।

मुख्य अतिथि, हास्य कवि दीपक गुप्ता का स्वागत करते हुए महाप्रबंधक श्री विजय कुमार बसेठा।

दिलकश चाय

छोटी सी दुनिया है मेरी
चाय का कप और हम है उसमें
हम दोनों की मोहब्बत से
रश्क करते हैं सारे
पर वो आशिकी ही क्या
जिसमें लोगों के ताने न सुने
एक दूसरे में गुम हो जाते हैं
सारी दुनिया भूल जाते हैं
बिन बोले एक दूसरे को समझ जाते हैं
जो सकूं उसको अधरों से लगा कर होता है
वो तो जन्नत का द्वार होता है
खाक पड़े ऐसी दुनिया भर के लोगों पर
जो हमारे इश्क मोहब्बत को रुसवा करते हैं ओर
पल पल इस की कमियां गिनाते हैं
पर उस आशिकी का मज़ा ही क्या
जब तक जग में उसके नाम से रुसवा न हो जाए
हम दोनों तो अपनी ही जिंदगी में मस्त रहते हैं
सर्द हवाएं हों तन्हाई का आलम हो
तो हुस्ने दिलकश चाय ही हमारा साथ निभाती है
सुबह का दिलकश नज़ारा हो
ढलती सुबह का इस्तकबाल हो
इसकी याद कमबख्त आ ही जाती है
फिर इस मासूम दिल का क्या कसूर
इस को छूने की, महसूस करने की
ख्वाहिशें परवान चढ़ जाती हैं
और न चाहते हुए भी ये लबों को चूम ही जाती है
खबर फैल गई पूरे जहां में हमारी
क्योंकि इसकी महकती खुशबू
दिलकश अंदाज से सब का दिल बेकाबू हो गया है
मुकदमा हमारी आशिकी का
दर्ज कर के
खुद इसका मज़ा ले रहे हैं
आलम ये है हमें सज़ा दिलाने आए थे
अब खुद उसकी आशिकी में गिरफ्त में आ गए हैं
हम ने खुले आम इजहार ऐ इकरार किया है
उसकी महफिल सजा कर लोगों को
उसका दीदार करने का मौका दिया है
उसके आने से पहले उसकी खुशबू की महक से सब
सम्मोहित हो गए
एक ओर के नज़र मुरीद हो गए
सौ झमेलों की दवा है ये
हर उलझी पहेली का हल है ये
सब को इलम है हमारी आशिकी का
अब वो खुद भी कदर करते हैं इसकी
पता है इस की जिंदगी का फलसफा है ये
इससे दगा कर नहीं सकते
इससे वफा का वादा किया है
जो हमारे जनाजे के साथ ही विदा होगा
जब भी जमेगी कोई महफिल तो हमारी आशिकी
हमारे बिना भी याद सबको दिलाएगी
ओर सबों के लबों को चूम जायेगी
लोग हमारी रूहानियत को महसूस करेंगे
हमारी आशिकी के कद्रदान बनेंगे
हर घूंट घूंट में वाह वाह के अल्फाज़ बोलेंगे
मस्ती में जीने का अंदाज सीखेंगे
दिल ही दिल में हमें शुक्रिया अदा फरमाएंगे
ओर हमारी आशिकी के रंग में देश को ही रंग देंगे
देश की बागडोर ही चाय वाले को सौंप देंगे।
हमारी मोहब्बत के फसाने सब को सुनाएंगे
हमारी मोहब्बत आशिकी की वफ़ा को सलाम करेंगे।

राजेश कुमार उपाध्याय
उप प्रबंधक
युनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
प्रादेशिक कार्यालय –1, नई दिल्ली

प्राचीन भारत की ज्ञान विरासत

निखिलेश कुमार
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)
इंडिया इन्फ्रास्ट्रक्चर फाइनेंस कंपनी लिमिटेड

भारत की प्राचीन चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद पर आधारित है– आयुर का अर्थ है 'लंबा जीवन' और वेद का अर्थ है 'ज्ञान'। लगभग 3,000 साल पहले संस्कृत में लिखी गई चरक संहिता और सुश्रुत संहिता, आयुर्वेद के दो महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं जो हर्बल दवाओं और शल्य चिकित्सा प्रक्रियाओं का उपयोग करके विभिन्न शारीरिक बीमारियों के उपचार के लिए समर्पित हैं। यह प्रमाणित हो चुका है कि ऋषि चरक ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में हुए थे और तक्षशिला विश्वविद्यालय से जुड़े थे। सुश्रुत की सबसे पुरानी ताड़पत्र पांडुलिपियों में से एक संयुक्त राज्य अमेरिका के लॉस एंजिल्स काउंटी संग्रहालय में संरक्षित है।

चरक संहिता में पाँच पुस्तकें हैं जिनमें 120 अध्याय हैं। इसमें आहार, स्वच्छता और व्यायाम और जीवनशैली को विनियमित करने और शरीर की बीमारियों को ठीक करने के लिए निवारक उपायों के लिए कई निर्देश शामिल हैं। इसमें चिकित्सा शिक्षा और किसी मरीज के पूरी तरह से ठीक होने के लिए डॉक्टरों और चिकित्सा चिकित्सकों द्वारा अपनाए जाने वाले आवश्यक चरणों पर अनुभाग भी शामिल हैं। चरक संहिता एक दार्शनिक और नीतिगत दस्तावेज है जिसमें डॉक्टर बनने के इच्छुक छात्रों के लिए 'दीक्षा की शपथ' भी शामिल है।

ऋषि सुश्रुत एक प्रसिद्ध चिकित्सक और सर्जन थे, जिनका जन्म 600 ईसा पूर्व में हुआ था। उनके कार्य एवं अनुभव को सुश्रुत संहिता के 186 अध्यायों के साथ, 120 मुख्य (सूत्र स्थान–46, निदान स्थान–16, शरीर स्थान–10, चिकित्सा स्थान–40, कल्प स्थान–8) और 66 परिशिष्ट (उत्तरतंत्र) के रूप में, 1,120 बीमारियों और 700 औषधीय पौधों में वर्णित किया गया है और इसे चिकित्सा विज्ञान का विश्वकोश' माना जाता है।

सुश्रुत मानव विच्छेदन (आपरेशन) के समर्थक थे, इसलिए, सुश्रुत संहिता में शल्य चिकित्सा प्रशिक्षण, उपकरणों और शल्य चिकित्सा प्रक्रियाओं पर विस्तृत विवरण शामिल हैं जिनका आज भी आधुनिक चिकित्सा विज्ञान द्वारा पालन किया जाता है। कई सर्जिकल प्रक्रियाएं, जैसे कि चीरा लगाना, ताप (थर्मल) दागना, दांत निकालना, हर्निया सर्जरी, सिजेरियन सेक्शन, टूटी हुई हड्डियों का प्रबंधन, जिसमें उनका पुनर्वास और प्रोस्थेटिक्स का उपयोग शामिल है, इन सबका विस्तार से वर्णन किया गया है।

ऐसी ही एक घटना का वर्णन 1793 में मद्रास गजट' ने पूरी शल्य चिकित्सा प्रक्रिया का विस्तार से किया गया है, जिसमें बताया गया है कि अंग प्रत्यारोपण की प्रथा प्राचीन काल से ही भारत में सफलतापूर्वक की जा रही थी। लोगों के शरीर को शल्य क्रिया से ठीक करने के लिए भारतीय ऋषियों (डॉक्टरों) और वैद्यों की 2,500 साल पुरानी शल्य चिकित्सा पद्धतियाँ सही ढंग से बताती हैं कि आधुनिक अंग प्रत्यारोपण एवं प्लास्टिक सर्जरी दुनिया को भारत का उपहार है।

यह कहानी एक सत्य घटना पर आधारित है। वर्णन मिलता है कि ब्रिटिश सेना के लिए राशन ढोने का काम करने वाला एक पारसी बैलगाड़ी चालक कोवासजी उस समय घायल हो गया, जब टीपू सुल्तान की सेना के साथ अंग्रेजों का युद्ध चल रहा था और उसकी नाक कट गई थी। उसने पहले से ही पुणे में एक कुम्हार (वैद्य) के बारे में सुन रखा था, जो टूटी या कटी हुई नाक बना देता था। बताया जाता है कि कुम्हार ने एक बार नई नाक बनाने के लिए रोगी के माथे की त्वचा का उपयोग किया था।

अपनी नई नाक पाने की संभावना से प्रसन्न होकर, जब कोवासजी ने यह खबर अपने ब्रिटिश अधिकारी को बताई तो बहुत अधिक आश्चर्यचकित हुआ और उसने अपने दोस्त, जो सेना में एक डॉक्टर था, से इसके बारे में बात की। साथ ही, उन्होंने पूरी प्रक्रिया का प्रत्यक्ष निरीक्षण करने के लिए कावसजी के साथ पुणे जाने का निर्णय लिया।

एक निर्धारित दिन, कोवासजी को कुम्हार के घर में भर्ती कराया गया और सर्जरी शुरू हुई। ब्रिटिश अधिकारी भी यह देखने के लिए उपस्थित थे कि कैसे कुम्हार ने सबसे पहले मोम की एक पतली पर्त का उपयोग करके कोवासजी की

नाक का आकार बनाया था। फिर इस मोम की प्लेट को चपटा करके उसके माथे पर रख दिया गया और प्लेट के चारों ओर एक रूपरेखा बना दी गई। प्लेट के नीचे की त्वचा की एक पतली परत को काटकर निकाल दिया गया, जिससे भौंहों के बीच की जगह में त्वचा का केवल एक छोटा सा हिस्सा जुड़ा रह गया। फिर इस त्वचा को मोड़ा गया, नीचे लाया गया और वहां रख दिया गया जहां उसकी मूल नाक थी। अब नाक के दोनों किनारों पर चीरे में नई त्वचा के किनारों को डालकर नाक जैसी संरचना को उसके चेहरे पर मजबूती से बिठा दिया गया।

अगले चार से पांच दिनों में, कोवासजी को न्यूनतम गतिशीलता के साथ अपनी पीठ के बल लेटना पड़ा। कुम्हार ने कोवासजी को कई आयुर्वेदिक उपचार दिए कि घाव ठीक हो गए और नई संरचना कोवासजी के चेहरे में मजबूती बैठ जाए। आख़िरकार, नाक की नई त्वचा को माथे से अलग करने के लिए नाक के पुल पर एक छोटी सी सर्जरी की गई, जो अब तक नई नाक संरचना में महत्वपूर्ण रक्त आपूर्ति कर रही थी। 25 दिनों में, कावासजी पूरी तरह से ठीक हो गए और एक नई नाक के साथ खुशी महसूस करते हुए अपने घर लौट आए।

कोवासजी की नई नाक की खबर जंगल की आग की तरह फैल गई, क्योंकि ब्रिटिश डॉक्टरों और अधिकारी, जो इस अविश्वसनीय घटना के प्रत्यक्षदर्शी थे, ने अपने पेशेवर और सामाजिक हलकों में इसके बारे में बात की। परिणामस्वरूप, पॉटर (कुम्हार) की नई नाक की सर्जरी को बंबई (अब, मुंबई) के कई प्रमुख समाचार पत्रों में व्यापक रूप से रिपोर्ट किया गया, जिसमें शल्य चिकित्सा द्वारा बनाई गई नई नाक और कावसजी की वास्तविक फोटोज शामिल थीं।

भारत के बारे में हमारे प्राचीन ज्ञान के आधार पर, कुम्हार द्वारा कावसजी की नाक के जीर्णोद्धार की दुनिया में वापसी करते हुए, यह खबर इंग्लैंड तक पहुंची और 1794 में, इसे 'द जेंटलमैन मैगज़ीन में भारतीय मस्तक(फोरहेड) फ्लैप विधि राइनोप्लास्टी की यूरोप में प्रकाशित पहली रिपोर्ट के रूप में प्रकाशित किया गया। डॉ जे. लंदन के एक प्रसिद्ध सर्जन सी. कार्प्यू इस रिपोर्ट से इतने प्रेरित हुए कि उन्होंने भारत में अपने दोस्तों से भारतीय शल्य चिकित्सा पद्धतियों के बारे में सारी जानकारी एकत्र की और फिर इसे इंग्लैंड में आज़माने के लिए कटिबद्ध हो गए।

सितंबर 1814 में, ब्रिटिश सेना का एक अधिकारी, जिसकी नाक उसके पेट के संक्रमण को ठीक करने के लिए ली गई दवा के दुष्प्रभाव (रियेक्शन) के कारण पूरी तरह से सड़ गई थी, मांस और हड्डी दोनों ही खराब हो चुके थे। वो डॉ. कार्प्यू के क्लिनिक में आए। डॉ. कार्प्यू ने नाक गुहा पर एक नई नाक बनाने के लिए माथे से त्वचा लेने की भारतीय पद्धति का उपयोग करके इस रोगी का ऑपरेशन किया। पट्टियाँ हटाने के बाद, रोगी ने कहा, "हे भगवान, वहाँ एक नाक है!" जल्द ही डॉ. कार्प्यू को एक और मरीज मिल गया और वह उसे भी नई नाक देने में सफल रहे। 1816 में अपने अनुभवों के आधार पर, डॉ. कार्प्यू ने एक पुस्तक प्रकाशित की, जिसका शीर्षक था, फोरहेड के इंटेगुमेंट्स से एक खोई हुई नाक को प्राप्त करने के लिए दो सफल ऑपरेशनों का लेखा–जोखा'। उसी दौर में इंग्लैंड से ही यह सर्जरी ज्ञान अमेरिका पहुंचा और वहां पर भी कई डॉक्टरों ने प्रयोग किया और इसका वर्णन कुछ अमेरिकी स्टडीज में भी मिलता है।

भारतीय कुम्हार (पाटर वैद्य) की सर्जरी से लेकर आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों तक के पाठों को संकलित एवं संयोजित करने के लिए और उसे ज्ञापित करने हेतु डॉ. कार्प्यू की ईमानदारी सराहना की पात्र है। उन्होंने यह माना कि कोवासजी की नई नाक का कुम्हार (वैद्य) ने जो ऑपरेशन किया वह भारत की प्राचीन चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद पर आधारित था। इसका वर्णन कई पश्चिमी लेखों में किया गया है।

संदर्भ स्रोतः

1. नयना शर्मा मुखर्जी, एट अल., 2011, भारतीय इतिहास कांग्रेस की कार्यवाही।
2. वॉल्यूम. 72, भाग–1, पृ. 968–977.
3. सुश्रुत संहिता, हिंदी भाष्य के साथ डॉ. अनंत राम शर्मा द्वारा संपादित सुश्रुत विमर्शिनी, 2021, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
4. द जेंटलमैन्स मैगज़ीन, अक्टूबर 1794, गूगल द्वारा डिजिटलीकृत, पृ. 883.
5. एम. फेलिक्स फ्रेशवॉटर, अगस्त 2015, एस्थेट सर्जन जे. वॉल्यूम। 35. क्रमांक 6, पृ. 748–758.
7. जे.सी. कार्प्यू, 1981, मस्तक (माथे) के त्वचा से खोई हुई नाक को बहाल करने के लिए दो सफल ऑपरेशनों का लेखा–जोखा, द क्लासिक्स ऑफ मेडिसिन लाइब्रेरी, बर्मिंघम यू.के.।

बेटी

राजीव शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
पंजाब नैशनल बैंक, प्रधान कार्यालय

वह सारा दिन घर में इधर से उधर दौड़ती रहती, खूब धमाल–चौकड़ी मचाती, उछलती, कभी बेड तो कभी सोफे पर से कूदती। उसकी हंसी से, मानो सारा घर ही खनखना जाता। शंकर ने उसका नाम 'नन्ही' रखा था। अढ़ाई वर्ष पूर्व, जब नन्ही पैदा हुई थी, तो शंकर ने उन्हीं दिनों में नौकरी छोड़कर, अपना कारोबार शुरू किया था जो नन्ही के साथ–साथ बढ़ रहा था। नन्ही, रत्ना और शंकर की प्रथम औलाद थी जिसे शंकर जान से भी अधिक प्यार करता था। वह सारा दिन कारोबार में व्यस्त रहता मगर, जैसे ही शाम को सात बजे वह घर पहुंचता, सारे दिन की उलझनों व थकान को भुलाकर, नन्ही के साथ खूब खेलता और तोतली जुबान में उससे ढेरों बातें करता। समय बीतता रहा, नन्ही, अब स्कूल जाने लगी थी, शंकर का कारोबार भी काफी फैल चुका था लेकिन, वह शाम को सात बजे घर आ जाता और नन्ही से स्कूल की एवं दिनभर की बातें करके एकदम तरोताजा हो जाता। रत्ना की किसी बात को वह चाहे भूल जाए मगर, नन्ही की फरमाईशों को पूरा करना कभी नहीं भूलता था। रत्ना कई बार इस बात पर नाराज भी हो जाती मगर, बेटी की खुशी उसकी नाराजगी दूर कर देती।

नन्ही, अब नन्ही नहीं रही थी। वह बड़ी हो गयी थी। बहुत सी बातें वह अब, अपनी मां के साथ साझा करती लेकिन फरमाईश केवल शंकर से ही। तेज दिमाग, पढ़ने में अत्यन्त होशियार, खुश मिजाज व मजाकिया स्वभाव की नन्ही, बला की खूबसूरत भी थी। जैसे–जैसे नंन्हीं बड़ी हो रही थी, शंकर और रत्ना के दिमाग में, रह–रहकर यह ख्याल आता कि नन्ही की शादी के बाद वह दोनों बिल्कुल अकेले रह जाएंगे। यह सोच, उन्हें उदासी के अथाह समुद्र में निःसहाय छोड़ देती, जिसमें से वह, एक–दूसरे के सहारे से ही निकल पाते थे।

अच्छे अंकों की बदौलत, नन्ही को, शहर के सबसे उत्तम कालेज में दाखिला मिल गया। दिन प्रतिदिन, उसके व्यक्तित्व में बदलाव व निखार आने लगा। वह अत्यन्त सलीके से तैयार होकर कालेज जाती। वापिस लौटकर थोड़ा सुस्ताती और फिर अपनी पढ़ाई में जुट जाती। शाम को जब शंकर घर लौटता, तो नन्ही से केवल, डायनिंग टेबल पर ही बात हो पाती थी। खाना खाकर, वह फिर से पढ़ने लग जाती। अब उसकी फरमाईशें भी कम हो गयी थी।

जवान बेटी के बाप की स्थिति भी, उसी व्यापारी की तरह होती है, जिसका करोड़ों का कारोबार, उधार फैला हो और हर समय मन में, रकम डूबने का डर समाया रहता हो। शंकर और रत्ना को, अपनी बेटी पर पूरा विश्वास था। वैसे भी रत्ना, उसे सब अच्छे–बुरे के बारे में समझाती रहती मगर, उम्र का यह पड़ाव, एक सीधी ढलान की तरह ही होता है, जिसपर तमाम एहतियात रखने के बावजूद भी फिसलने का अंदेशा बना रहता है। रत्ना और शंकर, इस बात से बाखूबी वाकिफ थे, इसीलिए शंकर, अपने व्यस्त कारोबार में से भी समय निकालकर, बिना कोई आभास दिये, उसपर नजर रखकर, बाप के कर्तव्य को अंजाम देता था। रत्ना, उसकी दिनचर्या और हरकतों पर पैनी नजर रखती और हल्के से बदलाव की आहट पर ही, उसे समझाने की प्रक्रिया शुरू कर देती थी। ग्रेजुएशन में, नन्ही को स्टेट स्कॉलरशिप मिला। वह आगे पढ़ना चाहती थी। रत्ना और शंकर चाहते थे कि अच्छा सा घर–वर ढूंढकर, उसकी शादी कर दी जाए। ''नहीं पापा, मैं अभी शादी–वादी के चक्कर में नहीं पड़ना चाहती। मुझे अभी और पढ़ना है, अपना कैरियर बनाना है।''नन्ही ने शायद पहली बार शंकर की बात से असहमति व्यक्त की थी। ''बेटा, तुम ग्रेजुएट हो गयी हो और अधिक पढ़कर क्या करोगी? तुम्हें कौन सी नौकरी करनी है?'' शंकर ने समझाते हुए कहा। ''पापा, आप ही तो कहते हैं कि इन्सान को हर स्थिति का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिये। मैं चाहती हूं कि मेरे पास अच्छी योग्यता हो ताकि अगर कभी आवश्यकता पड़े तो मैं उस योग्यता का लाभ उठाकर, जीवन–यापन कर सकूं और वैसे भी, अभी मेरी उम्र केवल उन्नीस वर्ष ही तो है। मैं इतनी जल्दी शादी नहीं करना चाहती।'' नन्ही ने अपने

तर्क तथा फैसले से शंकर और रत्ना को खामोश रहने पर मजबूर कर दिया।

नन्ही ने एक व्यवसायिक कालेज में दाखिला ले लिया और रात–दिन पढ़ाई में जुटी रहती। समय मानों पंख लगा चुका हो। एक वर्ष कैसे बीत गया, पता ही नहीं चला। हमेशा की भांति ही, नन्ही अच्छे अंक प्राप्त कर रही थी।

एक दिन, नन्ही शाम को कॉलेज से लौट रही थी, तो रास्ते में उसने एक बुजुर्ग दम्पति को, कार में बदहवास पड़े देखा। लोग दर्शक बने खड़े थे मगर, मदद के लिए कोई आगे नहीं आ रहा था। पता करने पर ज्ञात हुआ कि कोई गाड़ी टक्कर मार गयी थी। नन्ही ने झट से आगे बढ़कर, ड्राईविंग सीट पर बैठे बुजुर्ग को साईड में करके बैठने की जगह बनायी और कार लेकर अस्पताल की ओर चल दी। टक्कर का सदमा लगने से बदहवास हुए पति–पत्नी को प्राथमिक उपचारोपरांत अस्पताल से छुट्टी दे दी गयी। नन्ही, उन दोनों को उनके घर तक छोड़ने गयी, मगर उनके बहुत आग्रह के बावजूद वह, वहां थोड़ी देर भी नहीं रूकी। हालांकि, अस्पताल से फोन करके उसने अपनी मां को सारी स्थिति से अवगत करवा दिया था लेकिन वह यह भी जानती थी कि जब तक वह घर नहीं पहुंच जाएगी, उसके मां–बाप, बेचैन ही रहेंगे। वैसे भी, अब यहां रूकने का कोई औचित्य नहीं था। बुजुर्ग दम्पति, अब अपने घर पर थे और सदमें से उबर चुके थे। वैसे भी घर में नौकर–चाकर नजर आ रहे थे, अतः उन्हें हर प्रकार का आराम था। दोनों से विदा लेकर, उसने अपने घर की राह ली।

घर पहुंचने तक नौ बज चुके थे। वह जल्दी से फ्रेश होकर, खाने की मेज पर आ गयी। रत्ना और शंकर उसका इंतजार ही कर रहे थे। खाना खाते समय, उसने सारा वृतान्त सुनाया। शंकर ने उसकी पीठ थपथपाकर, उसकी हिम्मत और नेक कार्य की दाद दी।

इस घटना को बीते अभी तीन दिन ही हुए थे कि वह दोनों बुजुर्ग, शाम को, नन्ही का शुक्रिया अदा करने उसके घर आ पहुंचे। रत्ना और नन्ही ने अत्यन्त आदर सहित दोनों को बिठाया। शंकर अभी नहीं लौटा था। रत्ना ने उनके लिए चाय का प्रबन्ध किया। चाय की चुस्कियों के साथ वह दोनों नन्ही की जम कर तारीफ कर रहे थे। चाय का दौर अभी समाप्त ही हुआ था कि शंकर भी आ गया। बाहर खड़ी विदेशी गाड़ी देखकर उसे यह समझते देर नहीं लगी कि घर पर कोई मेहमान पधारे हैं, लेकिन कौन हैं, इसके बारे में बेखबर था।

जान–पहचान की औपचारिकता के बाद वह भी उनकी बातों के सिलसिले में शामिल हो गया। नन्ही उनसे क्षमा प्रार्थना करके अपने कमरे में जरूरी असाइनमेंट पूरा करने के लिए चली गयी लेकिन शंकर और रत्ना, बहुत देर तक उनके साथ बतियाते रहे। घड़ी की सुइयों ने जब आठ बजने का बिगुल बजाया तो चारों की बातों से तन्द्रा टूटी। वह दोनों अब विदा लेकर जाने के लिए उठ खड़े हुए। शंकर और रत्ना ने उन्हें खाना खाकर जाने का बहुत आग्रह किया मगर वे नहीं मानें। बातचीत के दौरान, शंकर अब तक जान चुका था कि वह बुजुर्ग, शहर के पुश्तैनी रईस सेठ चन्द्र प्रकाश हैं। शंकर अभी तक अनेकों बार, उनकी कंपनी के साथ, व्यवसायिक संबंध बनाने की असफल कोशिश कर चुका था और आज इन्हीं सब बातों को सोचते–सोचते वह फ्रेश हुआ और फिर तीनों ने इकट्ठे खाना खाया। लाख कोशिश के बावजूद भी वह, यह बात अपने भीतर न रख सका और अपनी पत्नी तथा बेटी के साथ बांट ली। तीनों ने समय की चाल को दाद दी और भगवान का शुक्रिया अदा किया।

नन्ही का अब अन्तिम सेमेस्टर था। वह हर समय पढ़ने में लगी रहती। रत्ना और शंकर भी, किसी प्रकार से उसकी पढ़ाई में कोई खलल नहीं डालना चाहते थे, इसलिये नन्ही के लिये आने वाले शादी के प्रस्ताव उन्होंने तीन महीने तक लम्बित कर दिये थे।

एक दिन शाम को, एक ड्राइवर ने आकर शंकर के हाथ में एक लिफाफा थमा दिया। लिफाफे में, एक पन्ने पर केवल इतना ही लिखा था, 'प्रिय शंकर जी, हमारी हार्दिक इच्छा है कि कल रात का खाना, आप हमारे साथ खाएं। ड्राइवर ठीक आठ बजे, गाड़ी लेकर आपको लेने आ जाएगा।' यह निमन्त्रण कम, आदेश अधिक था और सेठ चन्द्र प्रकाश का आदेश, शंकर चाहकर भी नहीं ठुकरा सका। उसने ड्राइवर को हां कह दी। रात को खाने की मेज पर उसने सेठ जी के भेजे निमन्त्रण पत्र का खुलासा किया और उसी की तर्ज पर, अगले दिन रात आठ बजे तैयार रहने का आदेश भी कर दिया। नन्ही अपनी पढ़ाई की वजह से नहीं जाना चाहती थी मगर, शंकर के यह कहने पर कि इन बन रहे संबंधों की धुरी तो वही है, वह मान गयी।

शंकर, आज छः बजे ही लौट आया। वह हर काम जल्दी–जल्दी कर रहा था और सात बजने तक वह तैयार

हो चुका था। अब घड़ी की सुइयां मानों आगे बढ़ना ही भूल गयी हों। वह कभी इस कमरे में जाता तो कभी उस कमरे में, कभी सोफे पर बैठता तो कभी डायनिंग चेयर पर, कभी रत्ना को आवाज देकर जल्दी तैयार होने को कहता तो कभी नन्ही को। जैसे–तैसे समय बीता। ड्राइवर के आने पर तीनों एकदम तैयार थे। उन्होंने दरवाजे पर ताला लगाया और गाड़ी में बैठ गये। सेठ चन्द्र प्रकाश और उनकी पत्नी, दरवाजे पर ही खड़े थे। बड़ी गर्मजोशी से स्वागत किया। नन्ही को तो गले लगाकर प्यार किया। पाँचों, ड्राइंग रूम में बैठ गये। नौकर, शर्बत के गिलास और विभिन्न प्रकार के नमकीन–मीठा प्लेटों में लेकर आगे–पीछे घूम रहे थे। शंकर बातचीत के दौरान अवसर की तलाश में था कि मौका मिले और वह सेठ जी की कंपनी के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित करने की बात शुरू करे मगर, सेठ जी थे कि व्यापार की कोई बात ही नहीं कर रहे थे। इतने में एक नौकर ने आकर सेठानी जी के कान में कुछ कहा और फिर सेठानी जी ने सेठ जी की ओर देखा। 'चलिये, खाना मेज पर आपकी बाट जोह रहा है।' कहकर सेठ जी उठ खड़े हुए। सेठ जी के साथ बाकी सब भी उठे और दूसरे कमरे की ओर बढ़ गये। चारों दीवारों की जगह, छत को छूते लकड़ी के शोकेस, विभिन्न प्रकार की क्राकरी से भरे हुए थे। कमरे के मध्य में, सोलह कुर्सी वाली डायनिंग टेबल, क्रिस्टल की बेहतरीन क्राकरी से सजी हुई थी। सूप से लेकर, भोजनोपरांत मिष्ठान तक, हर व्यंजन, पाक कला का उत्कृष्ट नमूना था। मगर इस सबसे भी बढ़कर, अपनत्व की जो मिठास सारे वातावरण में घुली हुई थी, उसने खाने का जायका, कई गुणा बढ़ा दिया था। यह समय भी अजीब सा है, जब इसे रफ्तार पकड़नी चाहिये, तब तो यह रेंगने लग जाता है और जब इससे धीरे चलना दरकार होता है, तब यह तूफानी रफ्तार से भागने लग जाता है। साढ़े दस बज चुके थे। सबने खाना आदि खा लिया था मगर शंकर को अपनी बात कहने का अवसर ही नहीं मिल पा रहा था। हालात से समझौता करके उसने भोजन तथा उन्हें दिये गये सम्मान के लिये सेठ जी को ध न्यवाद देते हुए, जाने की इजाजत मांगी। सेठानी जी ने नौकर की तरफ देखा, तो वह तुरन्त अन्दर से तीन पैकेट उठा लाया। सेठानी जी ने स्वयं अपने हाथों से यह पैकेट, इन तीनों को दिये। काफी इन्कार के बाद तीनों को वे पैकेट लेने पड़े। सेठ जी ने ड्राइवर को बुलाकर उन्हें घर छोड़कर आने का आदेश दिया और फिर नन्ही की ओर मुड़ते हुए बोले, 'बेटा, हमारे तीन पुत्र हैं। तीनों विदेश में हैं, बहुत अच्छा व्यवसाय कर रहे हैं और अपने–अपने परिवार में खुश हैं। हमारे पास भी सब कुछ है मगर, बच्चों का प्यार व साथ नहीं है। व्यवसायिक व्यस्तताओं के चलते उनके अच्छे भविष्य के लिए मैंने उन्हें बोर्डिंग स्कूल में पढ़ाया, जिससे वह सदा के लिए हमसे दूर हो गये। वह कभी भी हमारे पास नहीं आते। कभी–कभी हम ही उनसे मिलने विदेश चले जाते हैं। हम कई बार सोचते हैं कि, काश! हमारे एक लड़की होती, कम से कम हमसे मिलने तो आती रहती। भगवान बहुत दयालु है बेटा, उन्होंने हमारी फरियाद सुन ली और हमें, तुमसे मिलवा दिया। अब तुम, सिर्फ शंकर जी की ही बेटी नहीं हो, हमारी भी हो। यह घर तुम्हारा है, जब चाहे आओ। जिस चीज की आवश्यकता हो, अपना हक समझ के कह देना।' सेठ जी की आंखों की नमी, उनके शब्दों की सच्चाई कह रही थी। सेठानी जी ने भी, नन्ही को सीने से लगाकर, इस तरह प्यार किया जैसे कोई मां, अपनी बेटी को विदा करते समय करती है। सेठ जी ने शंकर से कहा, ''आप बहुत भाग्यशाली हैं कि आपके यहां बेटी का जन्म हुआ है। जाने लोग बेटा क्यों मांगते हैं? हम आपसे, आपकी बेटी को छीनना नहीं चाहते। मगर, इतना हक अवश्य चाहेंगे कि नन्ही हमें भी मम्मी–पापा कहकर ही सम्बोधित करे। आपके इस उपकार से, हम दोनों के बुढ़ापे को जीने के मायने मिल जाएंगे और हमारे जीवन की सबसे बड़ी कमी दूर हो जाएगी।' सेठ जी की आवाज भर्रा गयी थी और सेठानी जी की आंखों से अश्रुधारा बह निकली। भावुकता के इन क्षणों में, सबकी आंखें नम थी और नन्ही, सेठ सेठानी जी को मम्मी–पापा कहकर उनसे लिपट गयी। शंकर, अन्दर ही अन्दर शर्मिन्दा हो रहा था कि वह इन दोनों बुजुर्गों की भावनाओं से व्यवसाय का अवसर पाने की ख्वाहिश पाले हुए यहां आया था जबकि, इन दोनों ने तो उससे कहीं अधिक उसकी बेटी के लिए उसकी झोली में डाल दिया था।

" मैं उन लोगों में से हूं, जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्र भाषा हो सकती है। " –बाल गंगाधर तिलक

दिल्ली बैंक नराकास की 59वीं छमाही समीक्षा बैठक के अवसर पर नराकास की छमाही पत्रिका 'बैंक भारती' का विमोचन करते हुए श्री राजेश श्रीवास्तव, उप निदेशक (नीति), श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन), गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति दिल्ली (बैंक), श्री समीर बाजपेयी, मुख्य महाप्रबंधक (दिल्ली–एन. सी. आर), सदस्य सचिव, श्रीमती मनीषा शर्मा, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) तथा श्री बलदेव मल्होत्रा मुख्य प्रबंधक – राजभाषा।

दिल्ली बैंक नराकास की 59वीं छमाही समीक्षा बैठक के अवसर पर पी.एन.बी. दिल्ली अंचल की छमाही पत्रिका 'दीपस्तम्भ' का विमोचन करते हुए श्री राजेश श्रीवास्तव, उप निदेशक (नीति), श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन), गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति दिल्ली (बैंक), श्री समीर बाजपेयी, मुख्य महाप्रबंधक (दिल्ली–एन. सी. आर), सदस्य सचिव, श्रीमती मनीषा शर्मा, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा), श्री बलदेव मल्होत्रा मुख्य प्रबंधक – राजभाषा तथा श्री अशीष शर्मा मुख्य प्रबंधक – राजभाषा (पी.एन.बी. दिल्ली अंचल)।

करते हैं तन-मन से वंदन
जन-गण-मन की अभिलाषा का
अभिनंदन अपनी संस्कृति का
आराधन अपनी भाषा का।